रूठी रानी

मनोहर सिंह राठौड़

राजस्थान साहित्य अकादमी के आर्थिक
सहयोग से प्रकाशित

प्रकाशक एवं मुद्रक :
मुखर्जी पब्लिशिंग एंड मार्केटिंग कम्पनी
नूतन मार्केट, गणेश कॉलोनी,
पिलानी-३३३०३१ राजस्थान
☎ २५९४ (०१५९५१ STD)

प्रथम संस्करण १९९३
मूल्य : पैतीस रुपये
आवरण : मातुराम वर्मा

लेज़रटाइपसेटिंग :
ऑफिस फोटोस्टैट प्रिंटर्स
नई दिल्ली-१
☎ ३३१ ३४७०

ROOTHI RANI By MANOHAR SINGH RATHORE

समर्पण—

कण-कण में
बिराजमान श्याम धणी
की असीम अनुकम्पा से
पल्लवित यह
पुष्प स्वरूप कृति
उन्हीं के श्री चरणों में
सादर समर्पित ...

—मनोहर सिंह राठौड़

क्रम

भूमिका

मध्यकाल का राजस्थान राजाओं-महाराजाओं, रियासतों-ठिकानों का रहा है । इस काल में जय-पराजय, शौक-मौज, नाच-रंग, नृत्य-संगीत-गीत, मल विद्या, नट विद्या और न जाने कितनी कलाओं का विकास हुआ, उनका आनंद लिया गया । यों तो इस काल को युद्धों के साथ-साथ आमोद-प्रमोद का काल कहा जा सकता है ।

प्रस्तुत कृति में इस युग के दो प्रसंगों के मार्मिक क्षणों को अत्यन्त सहजता से नाटकों के रूप में प्रस्तुत किया गया है । इसमें इतिहास के तन्तुओं को ज्यों का त्यों जीवित छोड़ कर कुछ काल्पनिक नामों व पात्रों के माध्यम से उन घटनाओं को उकेरने की चेष्टा की गयी है । इन में इतिहास पूरी तरह सांस लेता दृष्टिगोचर होगा ।

भारतीय संस्कृति व परम्पराओं के दर्शन राजस्थान के कण-कण में मिल जायेंगे । राजस्थान के इन ऐतिहासिक प्रसंगों के नाटकों में यहाँ राजस्थान की संस्कृति, परम्पराओं, रीति-रिवाजों का बड़े सहज रूप में अंकन हुआ है । इसमें दो एतिहासिक नाटक हैं; पहला – हत्यारा तालाव और दूसरा – रूठी रानी ।

हत्यारा तालाव की कथा इस प्रकार है – कोलराज नामक एक शासक था जो गौड़ राजपूत था । गौड़ावाटी क्षेत्र उसके अधिकार में था । वह राहभेदी व क्रूर था ही साथ में उसे अपनी ख्याति अमर रखने की सनक सवार हुई । वह जंगल में एक तालाव बनवाने लगा । तालाब को वह क्रूर शासक कम खर्च में बनवाना चाहता था । उसने एक नियम बनाया था कि जो भी इस रास्ते से निकले वह दो टोकरी मिट्टी खोद कर बाहर डाल दे । जहां तालाब बन रहा था उधर से एक महत्वपूर्ण रास्ता था इसलिये लोग आते-जाते रहते थे और तालाव गहरा व बड़ा बनता जा रहा था ।

एक दिन एक नवयुवक उस रास्ते से अपनी वधू को लिये गौना करके लौट रहा था । दुष्ट सिपाहियों का पहरा था । उन्होंने मिट्टी डालने को कहा । वह औरत स्वयं मिट्टी डालने डोली से नीचे नहीं उतरी । कहा सुनी हो गयी । नवयुवक वहां सिपाहियों के हाथों मारा गया । नववधू ने कहारों की मदद से पति का दाह संस्कार किया ।

वह अमरसर के प्रतापी राजा राव शेखा के दरवार में पहुंची । राव शेखा शरण में आये की मदद करते थे । नारी ने इस अपमान की आग में जलते हुये प्रण लिया था कि इस राज्य के क्रूर राजा को मार कर मेरा बदला मिलेगा तभी चैन लूंगी । राव शेखा ने उस विधवा बनी हुई नवविवाहिता को बेटी की तरह अपने रनिवास में रखा । अवसर आने पर बड़े कौशल से युद्ध करके कोलराज का वध किया । कोलराज का कटा सिर लाकर विधवा स्त्री को सौंप दिया और कहा कि – बेटी ! लो मैंने तुम्हारा प्रण पूरा कर दिया । वह प्रसन्न हो उठती है और नाटक समाप्त हो जाता है । यह नाटक समाप्त हो गया लेकिन इस दृश्य जगत के मंच पर नारी का शोषण, अपमान ज्यों का त्यों हो रहा है । हमें इसी शोषण को जड़ से उखाड़ फेंकना है । मूल रूप से इस कृति में युगों से मूक बनी, पुरुष को सम्बल देने वाली नारी के शोषण, बंधन की गाथाये है । प्रसाद ने ठीक कहा है –

"मुक्त करो नारी को मानव चिरबंदिनी नारी को;
युग-युग की बर्बर कारा से जननी सखी प्यारी को ।"

समय परिवर्तित हो गया, परिस्थितियाँ बदल गयीं लेकिन त्याग, ममता, सेवा की मूर्ति नारी की मजबूरियाँ, बंधन, सीमायें अब भी बनी हुई है । नारी की इस मूक पीड़ा को इस कृति मे उद्घाटित किया गया है ।

– मनोहर सिंह राठौड़

हत्यारा तालाब

हत्यारा तालाब

पात्र

कोलराज	– गोड़ावाटी का राजा
खड्ग सिंह	– कोतवाल
शेर सिंह	– सिपाही – कोलराज के यहां
होशियार सिंह	– सिपाही – कोलराज के यहां
रूपमती	– एक नव विवाहिता
जय सिंह	– रूपमती का पति
कहार (४)	– पालकी उठाने वाले
राव शेखा	– अमरसर का राजा
राव शेखा का कोतवाल	
राव शेखा का मंत्री	
राव शेखा का सामंत	
दासी	– राव शेखा के यहां
भूमिधर	– राव शेखा का सेवक

प्रथम अंक

पहला दृश्य

समय – दोपहर का। स्थान – कोलराज की राजधानी झूंथर गांव के पास। (*एक पालकी उठाये चार युवक चल रहे हैं। उनके आगे-आगे हाथ में तलवार लिये एक दूल्हा चल रहा है। वह गौना कर के लौट रहा है अपने घर को। वह रास्ते में मुड़-मुड़ कर कनखियों से अपनी पत्नी को देख लेता है – पर्दा उठता है।*)

जयसिंह – अब आगे झूंयर गांव आने वाला है । पानी पीना चाहो तो सभी पी लो । इस बहाने कुछ विश्राम हो जायेगा ।

कहार – हां कुंवर जी! ये कुंवरी साहिबा कहला रही हैं, जैसी आप हुजूर की मरजी । थोड़ा रुक कर विश्राम करना ठीक रहेगा ।

(पालकी रुकती है । सभी पानी पीते हैं । कहार एक ओर जाकर बैठ जाते हैं । जयसिह अब रूपमती के निकट आ बैठा है ।)

जयसिंह – पुरुष सदा से नारी का पुजारी रहा है ।

रूपमती – वह अपने स्वार्थ के कारण भले ही ध्यान दे । वैसे पुरुष ने युगों-युगो से नारी का शोषण किया है । वह बड़ा क्रूर है ।

जयसिंह – नहीं ! इन मार-काट अत्याचार के दिनो में भी दुश्मन के अलावा अपने देशवासी या सजातीय मिलने पर नारी का पूरा-पूरा आदर करते हैं ।

रूपमती – (व्यंग्य में) तभी मुझे पालकी में छुपा कर ले जा रहे हैं । क्यों, नारी खुले मे क्यों नहीं घूम सकती ? पुरुष जब चाहे उसे देवी और जब चाहे उसे द्रौपदी की तरह दांव पर लगा देता है । स्त्री पुरुष की तरह स्वतंत्र क्यों नहीं है ? बोलिये, अब चुप क्यों हो गये ?

जयसिंह – वह पुरुष की तरह स्वतंत्र है लेकिन वह मूल रूप से कोमल प्रकृति की होने के कारण डरती है ।

रुपमती – रहने दीजिये । नारी ने डरना पुरुष से ही सीखा है । बचपन से ही उसे छुपा-छुपा कर, लड़कों से कमजोर, कोमल, कायर बता-बता कर वैसी ही बना दिया जाता है ।

जयसिंह – तुम तो बड़ी तर्क संगत बातें करना जानती हो । तुम से कौन जीत

सकेगा ? मेरा मतलब था अपने सजातीय लोग नारी पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं कर सकते ।

रूपमती – रहने दीजिये । पुरुष की न कोई अलग जाति है न धर्म । उसकी एक ही जाति है, वह है पुरुष । इससे अलग कुछ नहीं । कुछ देव प्रकृति वालों को छोड़ कर सभी का यही हाल है कि कब बहक जायें, कोई कह नहीं सकता ?

जयसिंह – (बातों से आनंदित हो उठा) – चलो छोड़ो बहस को यदि दिन यहीं निकल गया तो रात कहीं जंगल में काटनी पड़ेगी । रात्रि में लूट-पाट का भय है । ठीक-ठाक से गांव में पहुंच कर आश्रय लेना उचित है ।

रूपमती – (अट्टहास कर उठी) – अभी आप पुरुष को देवतुल्य मान रहे थे । इतनी सी देर में मनुष्य आपको देवता से दानव नजर आने लग गया ?

(जय सिंह झेंप जाता है । कहारों को बुलाता है । यात्रा फिर से शुरु हो जाती है ।)

जय सिंह – जल्दी-जल्दी चलो भाई । यह धरती अत्याचारी राजा कोलराज की है । यहां से सुरक्षित निकल जाने के पश्चात कोई खतरा नहीं ।

कहार – खतरा काहे का सरकार । दिन रहते यह बियाबान पार कर लेंगे । आगे अच्छी बस्ती वाले गांव है ।

जय सिह – सब कुछ उस परम् पिता परमेश्वर के हाथ है । एक पैर रखते है, दूसरे का भरोसा नहीं ।

कहार – यह सही फरमाया । सरकार ! सुना है कोलराज तालाब बनवा रहा है, उधर से जो भी निकलता है उसे दो टोकरी मिट्टी खोद कर बाहर डालनी होती है ।

जय सिंह – यह धर्म का काम है । सभी को हाथ बंटाना चाहिये ।

कहार – यहां धर्म का कोई लेना-देना नहीं । सारा कार्य अधर्म से होता है । लोगों की बहू-बेटियाँ तक सुरक्षित नहीं हैं इनके राज में ।

जय सिह – इस कार्य में राजा सम्मिलित है क्या ?

कहार – भला राजा की इच्छा बिना नीचे के हाकिम हुक्काम कुछ गड़बड़ी थोड़े ही कर सकते है । वह राजा खुद ऐसे ही चरित्र का आदमी है ।

जय सिह – तुम तो बहुत बातें जानते हो (मन में खुश होता है ।

(पटाक्षेप ।)

दूसरा दृश्य

(एक तालाब खोदा जा रहा है । कुछ मजदूर काम कर रहे हैं । उनको पारिश्रमिक के रूप में कोड़े मिल रहे हैं । जो भी इस रास्ते होकर जाता है उसे दो टोकरी मिट्टी खोद कर बाहर लाकर डालनी होती है – यही राजा की आज्ञा है । सिपाही इस आज्ञा का पालन क्रूरता से करवा रहे हैं । मंच पर सिपाही सुस्ताते दिखायी देते हैं । तालाब पीछे को बन रहा है ।

दोपहर बाद का समय । पर्दा खुलता है । खड्ग सिह का प्रवेश । सिपाही हड़बड़ा जाते हैं ।)

सिपाही – (एक साथ) खम्मा !, सरकार, खम्मा !!

खड्ग सिंह – यह ठीक है । तुम लोग सो रहे थे । इस बीच इस रास्ते से कुछ राहगीर निकल जायें तो इतनी टोकरी मिट्टी बिना डले रह जायेगी । वो कौन डालेगा .... बताओ .... बताओ ?

शेर सिंह – नहीं सरकार नहीं । इस रास्ते हम से पूछे बिना पंछी भी पर नहीं मार सकता, आदमी की क्या बिसात ? हम सोने का बहाना कर के आने-जाने वालों की निगरानी करते हैं ।

खड्ग सिंह – शाबास ! यह अच्छा तरीका है । यह बताओ तालाब का काम कैसा चल रहा है ?

शेर सिंह – चलेगा सरकार, खूब अच्छा चलेगा । इस रास्ते से जाने वाले अपने आप तीन-तीन टोकरी मिट्टी डाल देते है । जो कोई आनाकानी करे, उसकी ऐंठ निकालने को उससे चार टोकरी डलवाते हैं ।

खड्ग सिंह – वाह मेरे जवानों वाह ! यह प्रजा होती ही पीसने के लिये । इसमें बड़ा मजा आता है । सीधे मुंह बात करने से ये सभी सिर पर चढ़ते है । इनको ठीक करने का एक ही तरीका है ।

होंशियार सिंह – वह क्या सरकार ?

खड्ग सिंह – जो तरीका तुम काम ले रहे हो । (हाथ का डण्डा घुमाता है । सभी हंसते हैं ।)

होशियार सिह – हम नां-नुकर करने वाले को घुड़क देते हैं । राज आज्ञा सुना देते हैं । वैसे लगता है यह एलान दूर-दूर तक पहुंच गया है । सभी को पहले से पता रहता है । जो आज्ञा मानने में हील-हुज्जत करे उसे सोटी से मना लेते हैं ।

खड्ग सिंह – (दारू में झूमते हुये) – भला यह बता सकते हो कि यह तालाब कब से खोदा जा रहा है ? हमने हमेशा खुदते हुये देखा है इसे । हमारी आने वाली पीढियां खुदवाती रहेंगी शायद ।

होंशियार सिह – माई बाप ! ठीक से याद करता हूं । (अंगुलियों पर गिनते हुये) चार बरस हो गये ।

खड्ग सिंह – कितना समय और लगेगा ?

शेर सिंह – राजा जी चाहे तो सारी 'उमर' खुदवा सकते हैं । वे अपनी मरजी के मालिक ठहरे । वैसे तीन-चार महीनों में ठीक-ठाक बन जायेगा । फिर वर्षा का आगमन होगा । यह तालाब पानी से लबालब भर जायेगा । उसके बाद राजा यहाँ आकर 'गोठ' (पिकनिक) करेंगे ।

होंशियार सिंह – फिर सरकार (होठों पर जीभ फिराते हुये) दारू और मांस के चटखारे लेंगे । आये दिन यहाँ मौज-मस्ती हुआ करेगी ।

खड्ग सिह – कुछ जल्दी खुदवाने का प्रयास करो वर्ना ......

होंशियार सिह – कितना जल्दी सरकार ?

खड्ग सिह – यही कोई ...... मेरा मतलब, मैं सोता हूँ । जब सो कर उठूं,

यह तैयार मिलना चाहिये ।

होशियार सिंह – (हंसता है) – ऐसा करने की कोशिश करके देखते हैं सरकार । आप निश्चिंत हो कर सो रहें । वैसे हमारी तरफ से जल्दी करने में कोई करार नहीं है । अब टोकरी हम ऊपर तक भरवाते हैं । ज्यादा जल्दी वाला राहगीर न हो उससे कई टोकरी बहका कर, डराकर डलवा लेते हैं । जो चीं-चपड़ करता है उसे महाराज के सामने प्रस्तुत कर मृत्यु दण्ड दिलवाने का भय दिखला कर मिट्टी डलवाये जाते हैं, डलवाये जाते हैं । जब तक वह पूरी तरह थक कर गिर न पड़े । (हंसने लगता है ।)

खड्ग सिंह – (कुटिल मुस्कान बिखेरता है) – तुम लोग जरूरत से ज्यादा चालाक हो गये हो । अच्छा यह बताओ यहॉ सुबह से शाम तक काम करने वाले मजदूर कितने होंगे ?

शेर सिंह – उनकी गिनती नहीं है । जितने राज्य के सजा पाये हुये लोग हैं, लगान न देने वाले हैं और इस रास्ते से जाते हुये अकड़ जाते हैं, हमने उन्हें यही काम सौंप रखा है कि – भैया खोदो मिट्टी...... और मजदूरी के नाम पर खाये जाओ कोड़े । (कोड़ा फटकारता है हवा मे) हां हम इन्हें भूखा नहीं मरने देते । थोड़ा-थोड़ा खाने को देते हैं जिससे वह अगले दिन भी काम दे सके ।

खड्ग सिंह – ये सारे मेरे वाले 'गुण' तुम लोगों मे आ गये । बहुत समझदार हो गये हो ।

शेर सिंह – हम समझदार क्यों न हों जब आप जैसे कोतवाल और महाराजाधिराज जैसे प्रतापी राजा इस धरती पर मौजूद हों । आप सरकार को जो खटक जाये उसकी आप गर्दन उड़ाये बिना नहीं मानते । ऐसे गुणों की खान, योग्य सरकार से हम भी कुछ सीखते रहते हैं ।

खड्ग सिंह – चुप रहो ! क्या मैं प्रत्येक ऐरे-गैरे को जान से मार देता हूँ ?

शेर सिंह – नहीं ! नहीं !! वीर शिरोमणि ! आप न्याय का पूरा-पूरा पक्ष लेते हैं । सभी को समान दृष्टि से देखते हैं । ईश्वर की तरह समदर्शी हैं । आप ईश्वर से दो हाथ आगे हैं । आप की दृष्टि में गुनाहगार और निर्दोष दोनों समान हैं ।

खड्ग सिंह – क्या ? क्या कहा ? *(आँखें खोलते हुये झुंझलाता है ।)*

शेर सिंह – मेरा मतलब आप चाहें तो प्राण दण्ड पाने वाले को खुला छोड़ सकते हैं जैसे अपने राज्य में कई अपराधी घूम रहे हैं और कई लोग जिन्होंने अपनी सुन्दर कन्याओं को ..... आप से व्याहने में आनाकानी की या आप से ऐंठ दिखायी, वे कभी के यमलोक पहुँचाये जा चुके हैं ।

होंशियार सिंह – हम सरकार की तारीफ ही कर रहे हैं ।

खड्ग सिंह – फिर ठीक है ।

शेर सिंह – हमें आप, महाराजा से ज्यादा शक्तिशाली लगते हैं । उनके दर्शन दूर से कभी-कभार होते हैं । आप आये दिन यहाँ पधार कर हम लोगों से ये ही सवाल रोज करते रहते हैं । आपका डर सदा सिर पर सवार है ।

खड्ग सिंह – (मुस्कराता, लड़खड़ाता एक ओर जाकर वैठ जाता है) – अच्छा अपना काम पूरी मुस्तैदी से करो ।

होंशियार सिंह – अच्छा सरकार ।

खड्ग सिंह – (अचकचाकर) – एक वात वताओ, मै कितने वर्षो का लगता हूँ ?

होंशियार सिंह – (उम्र का असली अंदाज लगा कर) – मेरे हिसाब से आप पैंतालीस वर्षो के जरूर होंगे । क्यो सरकार ठीक वताया न ?

खड्ग सिंह – क्या कहा ? मैं इतना बूढ़ा लगता हूँ क्या हरामजादे । तुझे ठीक से दिखता है क्या ? बड़ा आया सही उम्र आंकने वाला । अन्धे, गंवार, जाहिल कहीं के ।

शेर सिंह – सरकार आप व्यर्थ में नाराज क्यों हो रहे हैं ? इसे बात करने की बिल्कुल तमीज नहीं है । बड़े आदमी जितने के दिखते हैं उससे कम के बताने में सार है । यह, है उतनी की उतनी बता रहा है । बेवकूफ !

खड्ग सिंह – क्या बकते हो ?

शेर सिह – मेरा मतलब है, आप मुझे अभी नये दूल्हे जैसे सुन्दर लगते हैं । उम्र आपकी कितनी ही क्यों न हो, लगते आप तीस से नीचे के है । (खड्ग सिंह को खुश होता जान कर) – सरकार आदमी और घोड़े की उम्र का क्या बखान करना । जब तक वह दौड़ता रहे वह जवान है । सब ठीक है ।

खड्ग सिंह – अरे शेरू सुन ! मै कभी राजा बन जाऊं तो महाराजा के लिये आने वाले रिश्ते मेरे लिये आने लगेंगे क्या ?

शेर सिंह – हां सरकार ! आपकी तरफ तो दौड़े आयेंगे । आपका राजपाट करने का तरीका कुछ निराला होगा ।

खड्ग सिंह – निराला कैसे ?

शेर सिंह – आपके राज्य में न्याय के लिये उधार किसी की नहीं रहेगी । जो आयेगा उसे तुरन्त मिल जायेगा ।

खड्ग सिंह – यह ठीक है । मै चटपट न्याय करने में विश्वास रखता हूँ ।

शेर सिंह – जो न्याय लेने आयेंगे उनमें से एक का गला अवश्य कटेगा ।

खड्ग सिंह – क्यों ?

शेर सिंह – आप सही न्याय जो करेंगे ।

खड्ग सिंह – यह बात ठीक है । मैं न्यायप्रिय कोतवाल हूँ ।

शेर सिंह – राजा कहो राजा सरकार । बात आपके राजा होने के बाद की चल रही है । सो एक का गला कटने से लाभ यह होगा कि यदि दोषी व्यक्ति का गला कटेगा तो राज्य में एक दोषी कम हो जायेगा और निर्दोष के मारे जाने से भी काम ठीक होगा ।

खड्ग सिंह – वो कैसे ?

शेर सिंह – आपके नाम का भय और आतंक जनता में फैल जायेगा । फिर लोग अपराध करेंगे नहीं । यदि कोई भूला भटका कुछ गड़बड़ कर जायेगा तो सताये हुये लोग न्याय की भीख मांगने नहीं आयेंगे । आप आराम से चैन की वंशी बजाते हुये महलों मे विश्राम करते रहियेगा ।

खड्ग सिंह – तुम मेरे विश्राम का पूरा-पूरा ध्यान रखते हो शेर सिंह इसलिये बाद में मै राजा बना तो तुझे कोतवाल बना दूगा । अब मै चलता हूं । महाराज को यहां के कार्य की प्रगति का ब्यौरा देना है ।

होंशियार सिंह – (दूसरी ओर से दौड़ता हुआ आता है) – सरकार वो देखिये । थोड़ा रुकिये । एक पालकी चली आ रही है । साथ में २-४ लोग है । आपको हमारे काम करने का ढंग आज दिखला देते हैं ।

(खड्ग सिंह रहस्यमय मुस्कान के बाद रुक जाता है । डोली धीरे-धीरे निकट चली आ रही है । सिपाही सतर्क हो गये हैं । डोली पास पहुंचती है । कहार उसे कंधों पर टिका कर एक साथ बोलते हैं) – खम्मा हुजूर ।

शेर सिंह – ठीक है । (हाथ उठा कर प्रत्युत्तर दिया) । अब सभी दो-दो टोकरी

मिट्टी खोद कर यहाँ के नियम के अनुसार चट-पट डाल दो, वर्ना......

जय सिंह – वर्ना की बात बीच में आप क्योंकर ले आये । हम तो ऐसे धार्मिक कार्य में सहर्ष अपना हाथ बटाना चाहते हैं ।

होशियार सिंह – अच्छा अब देर न करो ।

(सभी वहाँ से दूसरी ओर मिट्टी डालने जाते हैं । जय सिंह अपनी व्याहता के पास डोली से सट कर खड़ा रह जाता है । खड्ग सिंह भूखी आँखों से ताकता हुआ मूछों पर ताव देता है ।)

कहार – लेओ हुजूर हम अपने हिस्से की और एक-एक टोकरी ज्यादा डाल चुके ।

(थोड़ी देर में जय सिंह अपने हिस्से की और दो टोकरी पत्नी के हिस्से की डालकर लौटा । सिपाहियो ने डोली की ओर इंगित किया) – इसे भी डालना होगा ।

कहार – हम रानी बिटिया की तरफ से डाल चुके सरकार । आप आज्ञा दें तो एक-एक टोकरी और ले आते हैं ।

सिपाही – (एक साथ) नहीं ऐसा कदापि न होगा ।

जय सिह – (मुस्कराता हुआ) – मै इनके हिस्से की और ले आता हूँ ।

शेर सिंह – रोटी अपने हिस्से की आदमी खुद खाता है उसे दूसरे को खिलाने से पेट नहीं भर सकता । इसे डोली से नीचे उतर कर स्वयं यहां मिट्टी डालनी होगी ।

जय सिंह – (असमंजस में पड़ गया) डोली में झांक कर कहने लगा – इन लोगों की बुरी नीयत लगती है । कहीं कोई अनहोनी घटना न हो जाये ?

रूपमती – (मुस्कराकर) – ये सजातीय पुरुष हैं । नारी के साथ आदर व सम्मानजनक व्यवहार करेंगे फिर आप क्यों घबरा रहे है ? यही आप जोर देकर कह रहे थे न ? कहाँ गया अब पुरुषों वाला विश्वास ?

जय सिंह – मजाक छोड़ो । इस समय हम संकट में हैं । कहो क्या करें ?

रूपमती – आपकी आज्ञा हो तो उतर पड़ूँ ? मैं इस बारे में ज्यादा क्या समझूँ । वैसे यह सरासर अन्याय है । ऐसी आज्ञा देने वाला राजा स्वयं एक नम्बर का लम्पट होगा ।

जय सिंह – (कठोर हो आया) – तुम मेरे साथ अग्नि के सामने सात फेरे लेकर आयी हो । यदि टोकरियाँ भर-भर के मिट्टी डलवानी होती तब तुम्हें इस डोली में लाने की क्या आवश्यकता थी ? पैदल ले आता ।

रूपमती – जैसी आपकी आज्ञा । नारी सदा से पुरुष के एक इशारे पर न्यौछावर होने को तत्पर रही है । आप का जैसा हुक्म होगा, वही कर लिया जायेगा ।

जय सिंह – (दृढ़ता से) – जब तक इस देह में जान है तब तक तुम से अनचाहा काम कोई नहीं करवा सकता । (वह सिपाहियों की ओर मुखातिब होकर बोला) – आप लोग व्यर्थ में बखेड़ा कर रहे है ।

शेर सिंह – यह हमारे नेक दिल, न्याय प्रिय राजा का हुक्म है ।

जय सिंह – भला यह कोई हुक्म हुआ । आपके राजा को मिट्टी खुदवा कर डलवाने से मतलब । वह हम लोग डाल चुके और भी डालने को तैयार हैं । ऐसा अन्याय हमनें कहीं नहीं देखा ।

होंशियार सिंह – खबरदार ! हमारे राजा और उनके हुक्म के बारे में कुछ भी कहने का अधिकार किसी को नहीं है । सीधे-सीधे इससे मिट्टी डलवाओ और अपना रास्ता नापो ।

जय सिंह – रास्ते-रास्ते हम लोग पहले से जा रहे थे । आपने राजा की आज्ञा का बहाना करके राहगीरों की बेइज्जती करना शुरू कर रखा है । आपके राज्य में से जा रहे हैं । कुछ मदद करने की अपेक्षा रास्ता रोक लिया ।

शेर सिंह – (हँसते हुये) – चुपचाप मिट्टी डलवादो । तुम्हारा रास्ता किसी ने नहीं रोक रखा है ।

जय सिंह – (समझाने की गरज से सिपाहियों को एक ओर ले जाता है) सुनो ! मैं अपना गौना कर के लौट रहा हूँ । अभी इनके हाथों की मेंहदी नहीं उतरी । घर पहुँची नहीं । रास्ते में ऐसा काम, मिट्टी खोदने का डोली से उतर कर कैसे कर सकती है ? यह सरासर गलत है । आप लोग औरत की इज्जत-बेइज्जत को अच्छी तरह समझते होंगे ?

होंशियार सिंह –हम गलत सही कुछ नहीं जानते ।

खड्ग सिंह – (डोली के पास आ जाता है । वह झूम रहा है) – उतरो नीचे ! डालो मिट्टी की टोकरी । (वह जोर से हंसता है) – गौना कर के लाया है । हम देखें तो सही कैसी सुन्दरी है ? उतरो नीचे । (वह पर्दा हटा देता है डोली से ।)

जय सिंह – (तलवार खेंच कर झपटता है लेकिन वार करने से पहले उस पर तीनों-चारों सिपाही एक साथ हमला करते हैं) – अरे दुष्टों अभी मजा चखाता हूँ ।

सिपाही – (चिल्लाते हैं) – मारो ! मारो-इसे !!

होंशियार सिंह – ले वेवकूफ ! इतनी देर से समझा रहे थे कि इससे मिट्टी डलवा दे । मिट्टी डलवादे । नहीं मानी हमारी बात । अब भुगत अपनी करनी का फल ।

(रूपमती पछाड़ खा गिरती है ।)

शेर सिंह – हमारे महाराजा और उनके हुक्म को गलत बताता है । अब ले तुझे हमने कर दिया सही । हम धर्म पर चलने वाले औरत पर हाथ नहीं उठाते वर्ना यह भी नहीं बच सकती थी ।

खड्ग सिंह – हम लोग ऐसी छिछली हरकतें नहीं करते ।

शेर सिंह – आजा, आजा होंशियार सिंह । इसे अपने किये का फल मिल गया ।

होंशियार सिंह – (कहारों से) – तुम लोग दो-दो टोकरी मिट्टी इस दुल्हन के बदले की डाल दो । हम इसे औरत समझ कर परेशान नहीं करना चाहते ।

कहार – (डरते-डरते) – ले ओ सरकार अभी डाल आते हैं ।

खड्ग सिंह – यह इसे यहाँ जलायेगी या साथ लेकर जायेगी ?

होंशियार सिह – अपने को इससे क्या मतलब ।

कहार – सरकार डाल दी, दो-दो टोकरी मिट्टी । अब जायें ? (कांपने लगते है)

खड्ग सिंह – हाँ जाओ । जा सकते हो । मैं भी चलूं । महाराज, अन्नदाता को आज की इस घटना की खबर देनी है । (वह चला जाता है । रूपमती व कहार पैदल चलते हैं व लाश डोली में)

रूपमती – हाय विधाता ! यह कैसा अन्याय किया ? मुझे क्षणों में अनाथ कर दिया । यह कहाँ का न्याय है ? जो सही राह चल रहे हैं, वे दुःखी रहें, घोर अपमान व पीड़ा का जीवन झेले और दुराचारी मूछों पर ताव देते घूमें ?

कहार – बिटिया रानी धीरज धरो ।

रूपमती – कैसे धीरज धरूं ? मेरी जीवन नैया का खेवन हार चला गया । अब मै किसके सहारे जीऊँगी ? मै अपने पूज्य पिता पर बोझ वन कर नहीं जीना चाहती । उन्होंने लाड-प्यार से पाल-पोस कर बड़ा किया । अव उनके पास क्या मुंह लेकर जाऊँ ?

कहार – अपने आपको संभालो । यों अधीर न बनो । सुनो तो .....

रूपमती — अव न सुनने को कुछ वचा है न कहने को । सब कुछ मटियामेट हो गया । ये दिशायें मुझे निगल क्यों नहीं लेतीं । सीता माता इस धरती में समा गयी थी वैसे ही माता मुझे भी थोड़ी सी ठौर देवो । मुझ अभागिन को कोई मेरे पति के पास पहुँचा दो हाय !

कहार – (सुबकते हुये) – रानी बिटिया अब हम से और नहीं देखा जाता । आप धर्य धारण करो । इस रोने-धोने से कुछ न होगा । द्रौपदी अपनी लाज बचाने भरी सभा में कितना चिल्लायी थी, कौरव माने क्या ? अव आपका कर्तव्य बढ़ गया है । पहले कुंवर जी का यह शरीर अग्नि देवता के भेंट चढ़ा कर आगे वढ़ें ।

रूपमती – नहीं ! नहीं !! ऐसा मत कहो । मै नहीं जलाने दूंगी । ऐसा मत करना ।

कहार – नहीं रानी बिटिया, आदमी को आखरी ठौर यह अग्नि ही देती है । अब कुंवर जी राजा देवलोक जा चुके । इस माटी की देह को माटी में मिलना है ।

रूपमती – (सुबकती है ।)

कहार – आगे चल कर कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी कर के हम चिता तैयार करते हैं। अग्नि से दाह संस्कार करके आगे आपकी आज्ञा हो वैसे कर लेंगे ।

रूपमती – मेरी क्या आज्ञा होगी ? मैं लौट कर पीहर जा नहीं सकती और आगे ससुराल किस मुंह से जाऊँ ?

कहार – ऐसा न कहें । आपको दोनों जगह वाले सहारा व मान देंगे । पहले ससुराल चलना चाहिये आपको ।

रूपमती – नहीं । ऐसा नहीं हो सकता ।

कहार – फिर क्या करें ? कुछ तय आपको करना पड़ेगा । सामने आयी विपत्ति के पहाड़ को आप ही तोड़ेंगी । हमें जो आज्ञा होगी, आपके साथ हैं ।

रूपमती – यहाँ से अमरसर कितना दूर है ?

कहार – कुछ हट कर रास्ता बदलना होगा । फिर चलने की आप चिन्ता न करें । अमरसर हम आपको पहुँचा देंगे । (कहार के मुख पर आशा के भाव तैरने लगे ।) वहां क्यों जाना है ?

रूपमती – वहाँ के राव शेखा शरणागत रक्षक हैं । वे हर दीन-दुःखी को सहारा देते हैं, पूरी-पूरी मदद करते है । मेरा अब कोई ठौर-ठिकाना नहीं बचा । वहीं चलना है ।

कहार – वहाँ जाने से क्या होगा ? वे आपके सगे-सम्बन्धी है क्या ?

रूपमती – वे सभी प्रजाजनों को अपना सगा-सम्बन्धी समझते हैं । उनसे प्रार्थना

करके इस दुष्ट कोतवाल, इन सिपाहियों व यहाँ के दुराचारी राजा को इनकी उदण्डता का बदला दिलवाना है । मेरे सामने इन दुष्टों की लाशों को चील-कौवे नोच-नोच कर खायें तब हृदय को शान्ति मिले ।

कहार – बिटिया कुंवरी आपकी आज्ञा होगी उसी के अनुसार चल देंगे । पहले कुंवरजी की मृत देह को ठिकाने लगा दें । आप यहाँ डोली के पास बैठी रहें । हम लकड़ियाँ इकट्ठी कर के लाते हैं ।

रूपमती – जाओ भाई । यह कार्य भी करना है । जब तक यह मृत देह मेरे सामने रहेगी एक बोझ मेरे हृदय पर रहेगा । अब मै तुरन्त बदला लिवाना चाहती हूँ ।

(कहार चिता बना कर लाश लेने जाते है । रूपमती बिलखती है ।)

रूपमती – हाय विधाता जिस डोली मे बैठ कर मैं आई थी वह मेरे पति को शव रूप में लिये चलने लगी । ऐसा क्रूर आघात मेरे ऊपर क्यों किया ..... हे परमेश्वर !

(पति का दाह संस्कार किया । चिता को प्रणाम कर प्रण किया ।)

रूपमती – हे पतिदेव ! मै आपकी सौगन्ध खा कर कहती हूँ कि इस अन्यायी राज्य के राजा का सिर जब तक पैरो से न कुचल दूंगी चैन से न बैठूंगी ।

(वह कहारों के साथ आगे बढ़ चली । हाथों की चूडियाँ, श्रृंगार वहीं चिता पर छोड़ कर उनके साथ चलने लगी ।)

रूपमती – अब मेरे लिये न ससुराल बची है न पीहर । मुझ विधवा के लिये यह संसार सूना हो चुका है । कल तक मुझे आदर, सम्मान देने वाले, मुझे लाड-दुलार करने वाले अब मेरी छाया से दूर भागेंगे ।

कहार – नहीं रानी बिटिया ! ऐसा न कहें । हम आपके नैहर के है । हम पर पूरा भरोसा रखो । लड़की अपनी ससुराल में वहू वन कर जाती है फिर उसकी अर्थी ही उस चौखट से उठती है ।

रूपमती – आज मेरे कारण मेरे पति को जान से हाथ धोना पड़ा । अब मेरे प्राण पखेरू पति के साथ गये समझो । मैं प्रतिशोध लेकर यह नश्वर देह त्याग दूंगी । तब तक यह निर्जीव देह लिये तिल-तिल मरती रहूँगी ।

कहार – अब रानी बिटिया इस मामले में हम क्या कर सकते थे । हम यदि अपनी जान देकर कुंवर जी को बचा सकते तो हमारा वड़ा भाग्य था । अब आपके पिता श्री को हम क्या मुंह ले जाकर दिखायेंगे कि दामाद और पुत्री को लेकर गये थे और कुंवर जी की भेंट चढ़ा आये ।

दूसरा कहार – इससे अच्छा होता हम मारे जाते वे वच जाते । -

रूपमती – तुम लोगों का क्या दोष ? तुम लोगों ने भरसक प्रयास किया था । बात ऐसी ही स्थिति में पहुँच गयी थी कि कोई कायर होता वह भी नहीं रुक सकता था तलवार निकाले बिना जिसमें कुंवर जी एक सम्मानित योद्धा थे ।

(रूपमती व कहार सुवकने लगते है । धीरे-धीरे पर्दा गिरता है ।)

द्वितीय अंक

पहला दृश्य

(अमरसर में राव शेखा का दरबार लगा है । ५-४ अमीर-उमराव पास बैठे हैं जाजम पर । कुछ बातें हो रही है । सुबह के बाद का समय ।)

राव शेखा – कहो कोतवाल जी अपने राज्य में कोई दु.खी तो नहीं ? किसी को बाहरी दुश्मन सता तो नहीं रहा ?

कोतवाल – (खड़े होकर) – महाराज की जय हो ! आपके राज्य की ओर आने का सोच कर ही अत्याचारियो का मन काप उठता है । पिछले दिनों जिन मुसाफिरों को लुटेरों ने लूट लिया था उनका पीछा अपने सिपाहियों ने किया । सामना होने पर वे लड़ने को तैयार हो गये ।

शेखा – फिर ?

कोतवाल – उन्हे आपके दरबार मे हाजिर होने को कहा गया था ।

शेखा – वे आये नहीं ।

कोतवाल – क्षमा करें महाराज ! उन्होंने आने से साफ मना कर दिया । शायद आप से भयभीत हो गये हों । उन्होने कहा कि ये मुसाफिर आपके राज्य के नहीं है ।

शेखा – फिर ?

कोतवाल – वे हमारे सिपाहियों को ललकारने लगे कि यह हमारी रोटी-रोजी

है। पेट के लिये सभी भागते हैं और हम भीख नहीं मांगते हैं, हिम्मत से काम लेते हैं।

शेखा – अच्छा, यह कहा।

कोतवाल – हमारे सिपाही कम होते हुये भी वीरता से लड़े और उन सभी दुष्टों को यमलोक पहुंचा दिया।

शेखा – चलो अच्छा किया। बेचारी भोली-भाली प्रजा की गाढ़े खून-पसीने की कमाई को लूटने व निर्दोष लोगों को नृशंसता से मारने वालों को बढ़िया सबक सिखा दिया। अब करो हिम्मत की कमाई।

(सभी हँसते हैं।)

एक सामंत – जमीन के लगान का एक मामला जरूर ध्यान में आया है।

शेखा – वह क्या है ?

सामंत – कुछ लोग अकाल का नाम लेकर लगान नहीं देना चाहते। उन्हें कुछ सख्ती से कहने के लिये आदमी भेजें या अभी रहने दें ?

शेखा – नहीं श्याम जी ऐसा न करें। हम किसी गरीब को सता कर राज्य के खजाने नहीं भरना चाहते। आये दिन अत्याचारियों से लड़ने में, राज्य बढ़ाने व देखभाल में पर्याप्त धन की आवश्यकता रहती है लेकिन हम किसी असहाय को पीड़ा पहुंचाकर, गरीबों का खून चूस कर समृद्ध होना नहीं चाहते। फिर गरीबों की कैसी मदद करेंगे ? उन लोगों का लगान माफ कर दें व अनाज की आवश्यकता हो तो वह भी भिजवा देवें।

सामंत – अच्छा महाराज जैसी आपकी आज्ञा हो।

शेखा – किसी नारी को अबला समझ कर कोई सताये जाने या नारी के साथ किसी प्रकार के अत्याचार का कोई मामला तो सुनने में नहीं आया न ? अपने सम्पूर्ण राज्य में नारी को आदर से देखा जाना चाहिये । हम नारी को देवी स्वरूपा, दिव्य शक्ति का स्रोत मानते आये हैं ।

सामंत – यह सारी प्रजा को मालुम है । प्रजा का आचरण आपके मनोभावानुकूल है । राजा के ह्दय की छाया ही प्रजा पर पड़ती है महाराज ।

शेखा – जिस राज्य में नारी को अवला और उपहास की वस्तु समझ लिया जाता है, इसे उपभोग का साधन मात्र मान लिया जाता है वह राज्य मिटते देर नहीं लगती । समस्त धरती की मानव जाति को जन्म देने वाली माता को अवला, निरीह, बेबस, बेसहारा क्यों मान लिया जाता है ? मनुष्य को जन्म से मृत्यु पर्यन्त सभालने, सहारा देने वाली नारी महान् है ।

सामंत – आपके राज्य मे यदि कहीं नारी की अवहेलना कर किसी ने अत्याचार किया हो, उसे तुरन्त उचित दण्ड मिला है । वह अत्याचारी पूरी तरह सुधर गया या राज्य छोड़ कर भाग गया है ।

शेखा – मै इस महान् नारी के वारे में सोच-सोच कर आश्चर्यचकित होता रहता हूँ । युगों-युगों से शोभित नारी को अपने बलिदान, त्याग, सेवा के बदले एक मात्र सम्मान चाहिये । इसके अलावा कुछ न चाहिये इस ममतामयी, महिमामयी नारी को ।

(एक दासी का प्रवेश)

देवा – महाराज की जय हो । गौना से लौटती एक नवविवाहिता के पति को मौत के घाट उतार दिया गया । वह आपके समक्ष उपस्थित होने की आज्ञा चाहती है ।

शेखा – हा आज्ञा है । बुलाओ उस अभागिनी देवी को । कौन है वह ?

(दासी जाकर लौट आती है । विधवा रूपमती का प्रवेश । सभी उस ओर आश्चर्य से देखते हैं । वह चुपचाप घूंघट निकाले एक ओर खड़ी हो जाती है । अपनी ओढ़नी के पल्लु की गांठ खोल कर कोलराज के तालाब की मिट्टी साथ लायी थी वह डाल देती है ।)

शेखा – यह क्या ? यह कैसा संकेत । कैसी अनहोनी घटना इस सुकुमारी के साथ घटित हो गयी ? यह कैसी मिट्टी ?

देवा – महाराज यह डोली में अपने पति के साथ लौट रही थी और ......

शेखा – (उदिग्न होकर) मुझे सारा वृत्तान्त जल्दी-जल्दी कह सुनाओ । अब देर न करो । मेरी भुजायें उस दुष्ट, दुराचारी के लिये फड़क रही हैं । कौन है वह । क्या किया उसने ?

देवा – रास्ते में कोलराज के सिपाहियो ने, बनाये जा रहे तालाव कोपोलाव से दो टोकरी मिट्टी डालने का कहा । इनके हिस्से की डाल चुके थे फिर .....

शेखा – फिर । फिर क्या हुआ ?

देवा – सिपाही बोले – मिट्टी स्वयं इस विवाहिता को डालनी होगी । बहुत अनुनय-विनय की गयी । इन लोगो की उन दुष्टो ने एक न मानी । जब इनके पति आखिरी बार मनाने का प्रयास कर रहे थे तब वहाँ के कोतवाल ने आगे बढ़ कर डोली का पर्दा हटाना चाहा । इनके पति तलवार लेकर झपट पड़े । वे चार-पांच थे । उन्होंने अकेले को बेरहमी से मार दिया ।

शेखा – ओफ् ! छी ! छी !! कैसे-कैसे अत्याचारी इस धरती पर घूम रहे हैं । ऐसे नीच कर्म करने वालो को जन्म लेते ही मौत क्यो न आ गयी । ये धरती का बोझ बने क्यों जी रहे है ? दुराचारी कहीं के ।

देवा – यह देवी रूपमती आपका नाम सुन कर आपकी शरण में आयी है । ये प्रण ले चुकी है कि जब तक पति का बदला उस दुष्ट राजा को मार

कर न लिया जायेगा ये चैन से नहीं बैठेंगी । अपने शरीर को किसी प्रकार जीवित रखेंगी । वहाँ उस पाप कर्म वाले स्थान की मिट्टी अपनी व्यथा कथा कहने के लिये ये आपके समक्ष उड़ेल चुकी हैं ।

शेखा – (आंखें अंगारे सी दहकने लगीं) – इस वीरांगना का प्रण अवश्य पूरा होगा । जाओ इसे रनिवास में ले जाओ । खाने और रहने का प्रवन्ध करो । (रूपमती की ओर मुखातिव होकर) – जाओ बेटी ! आज से तुम हमारी धर्म की बेटी हुई । जब तक तुम्हारा बदला न ले लेंगे हम चैन की सास नहीं लेंगे ।

(दासी आगे-आगे रवाना हो जाती है । रूपमती उसका अनुसरण करती है ।)

शेखा – सुना आप लोगों ने आज की इस अनहोनी के वारे में । कैसे-कैसे दुराचारी इस धरती पर है ? अभी आप लोग सर्वत्र शांति की बात कर रहे थे और यह दु:ख भरा वृतान्त आ पहुंचा । (सभी सामंतों की भृकुटियाँ तन गयीं ।)

मंत्री – आपने बदला दिलवाने के लिये इतनी वड़ी प्रतिज्ञा तुरन्त कर डाली । जिसमें कोलराज गौड़ आपका रिश्तेदार है ।

शेखा – इससे क्या फर्क पड़ता है । अन्यायी का साथ हम किसी भी हालत में नहीं दे सकते । इस प्रकार का कृतघ्न यदि मेरा सगा भाई होता, वह भी मेरे क्रोध से नहीं बच सकता था ।

एक सरदार – हम से उन लोगों का आज तक युद्ध नहीं हुआ है ।

शेखा – हां यह बात सही है ।

मंत्री – फिर महाराज ! हम बिना बात के ऐसे ही धावा बोल देंगे क्या ?

दूसरा सरदार – कोई युक्ति सोचनी चाहिये ।

शेखाजी – (गम्भीर होकर) अधर्मी राजा के दुराचारी सेवकों को दण्ड देने के लिये कैसी युक्ति और कैसी पशोपेश ? हमें युद्ध अवश्य करना है । अन्याय को मिटाना वीरों का काम है । वीर-पुरुष न्याय और सत्य के लिये जो मार्ग चुन लेता है उस पर टीका-टिप्पणी की परवाह किये बिना अडिग, अटल रहता है ।

पहला सरदार – फिर भी महाराज ! लोग क्या कहेंगे ?

शेखाजी – (हँस कर) लोग कहेगे कि एक दुष्ट को अपनी दुर्बुद्धि का प्रतिफल मिल गया । ऐसे युद्धों में वीरों के जीत कर लौटने पर सारा संसार मुक्त कंठ से सराहना करता है । जयगान, यशोगान करता है और युद्धभूमि में न्यौछावर होने पर अप्सरायें पुष्प मालायें लिये विजयोल्लास से पुष्प बिखेरती शंख ध्वनि करती हैं ।

सेवक – (प्रसन्नता से) महाराज की जय हो ।

(पटाक्षेप)

दूसरा दृश्य

(सांझ ढल गयी । रात्रि का आगमन । शेखाजी का दरबार । वे इधर-उधर टहल रहे हैं । मंत्री का प्रवेश पर्दा उठते ही होता है ।)

मंत्री – महाराज की जय हो ।

शेखाजी – आओ । मंत्री महोदय आओ ।

मंत्री – आज महाराज का चित्त कुछ खिन्न लग रहा है गाने-बजाने वालों को सेवा में प्रस्तुत करूं ?

शेखा – नहीं ! हमें गायन की आवश्यकता नहीं हैं । हमें अब विरुद गायन (योद्धाओं को उत्साहित करने वाला गायन), नगाड़ो, ढोल-दमामा, युद्ध के प्रिय सिंधु राग की आवश्यकता है । जब तक हम इस कोलराज गौड़ का वध नहीं कर देंगे हमें ये रातें यों ही जगाती रहेंगी । ये दिन यों ही बेचैन किये रहेंगे ।

मंत्री – पिछले युद्ध के बाद से आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है । आपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान देना छोड़ रखा है ।

शेखा – मनुष्य जीवित रहे तब स्वास्थ्य बनता-बिगड़ता रहता है । जब तक मानसिक क्लेश बना रहेगा शरीर स्वस्थ कैसे हो सकता है ?

मंत्री – ऐसी अवस्था में महाराज आप कोलराज पर आक्रमण तुरन्त करने का हुक्म दे ।

शेखा – ऐसा भूलकर भी नहीं करना है । इससे हमारा कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा ।

मंत्री – वह कैसे महाराज ?

शेखा – इस वार के युद्ध में मात्र विजय पताका फहराना हमारा उद्देश्य नहीं है । शत्रु हमारा लोहा मान जाय यह भी नहीं चाहते । इस बार के युद्ध में कोलराज का सिर लाकर उस विधवा क्षत्राणी को सौंपना है जिससे उसके कलेजे का लावा ठंडा हो सके ।

मंत्री – ऐसा करने के लिये अपने गुप्तचर को भेज कर समय-समय पर उस राज्य की सारी गतिविधियो की सम्पूर्ण जानकारी हमें लेनी होगी । पूर्ण जानकारी के पश्चात् धावा बोलना ठीक रहेगा । एक ही वार हो, वह खाली न जाय ।

शेखा – तुम्हारे जैसे चतुर मंत्रियों के रहते हमें जीतने से कौन रोक सकता है ? कल प्रातः विशेष दक्ष गुप्तचर को कोलराज की सीमा में प्रवेश कराने का प्रबन्ध कर दिया जाय ।

मंत्री – जो आज्ञा हो महाराज । अब आप विश्राम करें । दुष्ट का अंत समय आने पर अवश्य होगा । खम्मा अन्नदाता ! आपके विश्राम का समय हो गया । आप विश्राम करें ।

(पर्दा गिरता है)

तीसरा दृश्य

(एक माह बीत गया । वर्षा हो चुकी है । प्रातः का समय है । राव शेखा टहल रहे हैं । अमरसर में राव शेखा के दीवानखाने में मंत्री व सलाहकार पास में हैं । पर्दा खुलता है ।)

मंत्री – चारों ओर प्रकृति दूध से धुली चमचमाती दिखायी देने लगी है ।

शेखा – हर वस्तु, प्राणी, मौसम का अपना समय होता है । उसी में वह सब से सुन्दर दिखायी देता है । अवसर निकल जाने पर वही व्यर्थ हो जाता है ।

मंत्री – आपका स्वास्थ्य अब कैसा है ?

शेखा – आज मै अच्छा अनुभव कर रहा हूँ ।

(एक दूत का प्रवेश)

दूत – दुहाई महाराज की ! महाराज की जय हो ।

शेखा – आओ, आओ, भूमिधर । तुम्हारी प्रतीक्षा बहुत समय से कर रहा था । तुम जानते हो तुमसे जानकारी लेने को मै पल-पल कितना वैचेन रहा हूँ ।

भूमिधर – हां अन्नदाता ! प्रजा के दर्द को राजा और राजा के मर्म को सेवक न जानेगे तो यह सृष्टि सहज रूप से कैसे चलेगी ?

शेखा – बताओ क्या खबर लाये हो ? है कोई निकट भविष्य में दो-दो हाथ करने का अवसर ।

भूमिधर – अवश्य है महाराजाधिराज, अति निकट है । आज से ठीक सातवें

रोज कोलराज वंधुओं, कुटुम्बियों, अमीर-उमरावों के साथ उस हत्यारे तालाव के किनारे गोठ करेगा। दोपहर का खाना और राग-रंग होगा। शाम तक वहीं रहेंगे।

शेखा – वाह ! क्या ही शानदार खवर लाये हो ! यह सुनहरा अवसर है।

भूमिधर – यही अवसर उचित है। किला एकदम सूना रहेगा। आसानी से उस पर कब्जा किया जा सकता है।

शेखा – ठीक है। अब आगे की योजना बनाना मेरा काम है। तुम विश्राम करो। तुम्हारी कला की आवश्यकता कूंच करने से पूर्व हमें फिर रहेगी।

(भूमिधर का प्रस्थान)

मंत्री – अन्नदाता ! हमला कोलराज के झूंथर गांव के गढ़ पर पहले करना ठीक रहेगा। वहाँ अधिक योद्धा नहीं होंगे इसलिए आसानी से कब्जे में आ जायेगा। फिर कोलराज उस तालाव से वच कर कहाँ जायेगा।

शेखा – यदि ऐसा करने से कोलराज भाग गया तो ? हमे धन-दौलत, जमीन-जायदाद कुछ नहीं चाहिए। इस युद्ध में केवल कोलराज का सिर चाहिये। यदि जरा सी चूक हो गई और वह भाग कर अन्यत्र शरण ले लेगा तव हमारी सारी योजना धरी रह जायेगी।

सामंत – हमें सेना सीधे तालाव पर भेजनी चाहिए।

शेखा – वह यदि गोठ वाले स्थान से बच कर निकल भागे उस हालत में हम कहाँ तक पीछा करेगे और वह चूहे की तरह भाग कर अपने गढ़ में यदि घुस गया फिर सहज में वाहर नहीं आयेगा। हमे अपनी सेना दो हिस्सों में बांटनी होगी। एक दल तालाव पर वैठे मौज उड़ाते दुश्मनों पर हमला बोलेगा। वहाँ सेनापति और दो-चार मजबूत सेना नायकों के साथ सजीले जवान लड़ेंगे। दूसरी टुकड़ी ......

सामंत – आपके साथ मार्ग में डटी रहेगी ।

शेखा – ठीक कहा । तुमने मेरे मन की बात छीन ली । रास्ता रोके मैं बांके जवानों के साथ डटा रहूँगा । थक कर भागे दुश्मन की आरती उतारने को हम मिल जायेंगे । थका-हारा, डरा, भागा दुश्मन हमारे पास आकर पांव न जमा सकेगा । इस प्रकार हम लोग अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लेंगे ।

सामंत – वाह अन्नदाता ! क्या उचित योजना बनायी है । यह योजना निराली है ।

शेखा – एक-एक जवान से कह दो यह परीक्षा की घड़ी है । अपने तन-मन से युद्ध करना है । हथियारों को पूरी तैयारी के साथ ले चलो । दुश्मन को किसी हालत में कमजोर नहीं आंकना चाहिये । इस बार जीवन-मृत्यु का प्रश्न है ।

(धीरे-धीरे पर्दा गिरता है ।)

चौथा दृश्य

(सेना कूच करने से दो दिनों पूर्व शेखाजी का दरबार अमरसर में लगा है। प्रातः सूर्योदय के बाद का समय। शेखा जी के पास सामंत, सरदार, भूमिधर आदि बैठे हैं। पर्दा खुलता है।)

शेखा – जाओ भूमिधर तुम एक बार फिर टोह ले आओ। हम जब आयें, हमें रास्ते में मिल कर दुश्मन की गतिविधियों की ताजा महक देना। कोई नयी बात ध्यान आने पर हम उसके अनुसार योजना में परिवर्तन कर लेंगे।

सेनापति – अब कोई परिवर्तन की आवश्यकता न रहेगी। अत्याचारी का एक दिन अंत होता है। वह समय आ गया है। धर्म की विजय, अधर्म का नाश सदा से होता आया है।

शेखा – अन्याय करने वाला अपने आप को सर्व शक्तिमान समझ लेता है। उसे जरा सी न्यायसंगत बात कहने वाला घोर विरोधी लगता है। उस हृदयहीन प्राणी की बुद्धि पर पट्टी पड़ जाती है।

सामंत – फिर उसका साथ देने वाले अधिक क्यों होते हैं ?

शेखा – तन-मन से उसका साथ देने वाले अधिक नहीं होते। कुछ तो भयवश साथ होते है , कुछ अज्ञानवश। थोड़े से लोग हैं जिन्हें दुराचार मे आनंद आता है, वे सहर्ष साथ देते हैं। दुराचार के परिणाम सात्विक विचारधारा के विपरीत होते हैं। वे परिणाम घातक भी होते हैं इसलिये हर सामान्य व्यक्ति को खटकते हैं। यही कारण है कि पाप का फैलाव अधिक दृष्टिगोचर होता है।

(सैनिक का प्रवेश)

एक सैनिक – महाराज की जय हो ! पुरोहित ने आज रात्रि के पश्चात् सुर्योदय से पूर्व सेना के प्रस्थान का समय बताया है ।

शेखा – मंत्री जी ने फिर मुहुर्त निकलवा लिया ?

सैनिक – (डरते-डरते) क्षमा अन्नदाता ! हां उन्होंने भेजा था मुझे । वे बोले कि इतनी विशाल सेना का भाग्य दांव पर लगा है, ताकतवर व चालाक दुश्मन से सामना है इसलिये शुभ-मुहूर्त में रवाना होना ठीक रहेगा ।

सेनापति – हम लोगों ने ज्योतिष शास्त्र को मानने से कब इन्कार किया ? हम सदा से मानते आये है ।

शेखा – वीर का मस्तक कंधे पर नहीं हाथ में होता है, यह हमेशा याद रखो । जब वह अन्याय के प्रतिकार के लिये सत् मार्ग पर निकल पड़ात है वही उसका शुभ मुहूर्त होता है ।

सेनापति – महाराज ! यह सुना है कि जीत के लिये मुहुर्त शुभ देख कर निकलना उचित रहता है । उससे कम हानि होती है ।

शेखा – (हँस कर) – जब दो सेनाये लड़ने को चलती है तब वे दोनों शुभ मुहूर्त निकलवा कर चलती है लेकिन जीत एक की होगी । दूसरी बात एक सेना हमला बोल दे और दूसरी सेना शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा में घड़ी भर हथियार न उठावें तब जीत बिना मुहूर्त हमला बोल दिया उनकी होगी न ?

सेनापति – यह सही है । हम लोग पुरुषार्थ पर भरोसा रखते आये हैं ।

शेखा – पुरुषार्थ बड़ी चीज है । रणांगण में मस्तक भेंट चढ़ाने निकले उसके लिये दिन और रात का हर क्षण शुभ है, उचित है, अनुकूल है । अब सभी सैनिकों, सरदारों को सचेत कर दो कि कल तड़के यहाँ से युद्ध के लिये प्रयाण करना है ।

सैनापति – (सामंत से) सभी को यह भी बताना है कि अपने-अपने अश्व व हथियार आदि साज-सज्जा की पूरी-पूरी तैयार कर लें । अपने अन्य लोगों को भी सचेत कर दें कि वे भोजन, औषधि व हथियारों का जखीरा लेकर चलने को तैयार रहें ।

सामंत – वह सारी तैयारी हो चुकी । योद्धा लड़ने को उद्दत है । वे हर दिन चलने के आदेश की प्रतीक्षा मे रहते है ।

शेखा – क्यों न हों ? वे हमारे मन्तव्य को भलीभांति समझ कर उसे अपना कर्तव्य मानते आये हैं ।

सामंत – मैं उस कोतवाल को उसकी दुष्टता का बदला पहले देना चाहता हूँ । कोलराज की क्रूरता को पालन कराने मे दुष्टता, लम्पटता का परिचय इसने दिया है ।

शेखा – राजा की शह बिना कोतवाल क्या सिपाही तक बुरा आचरण नहीं कर सकता । यदि अपनी प्रजा या सेना के अपराधों को राजा क्षमा करता है इसका अर्थ उसे अपराध प्रिय हैं या दुष्टता उसके हृदय में निवास करती है ।

मंत्री – राजा व राजकाज के तरीके का प्रतिबिम्ब ही प्रजा पर पड़ता है । उसी के अनुकूल वे अपने आप को बना लेते है । जिस राज्य में चोर, लुटेरे, चाटुकार, दुराचारी अधिक हों, वहाँ के राजा को वे पसंद होते हें इसलिये पनपते हैं ।

(एक-एक कर सभी विदा लेकर चले जाते हैं । अकेले राव शेखा मंच पर रह जाते है । घूमते रहते हैं ।)

शेखा – (मन के भाव स्वगत कथन से प्रकट कर रहे है) – हे रणचण्डी आज तक जिस प्रकार तुमने मुझे विजय श्री दिलवायी उसी प्रकार मेरा साथ

देना । यदि इस युद्ध में मेरे प्राणों की भेंट चाहती हो, वह देने से नां नहीं करूंगा मगर पहले मेरा और उस क्षत्राणी का प्रण पूरा हो जाय ।

..... विधाता तुम कैसा क्रूरतम खेल खेलते रहते हो ? पता नहीं इससे तुम्हारा मनोरंजन होता होगा या नहीं लेकिन हम साधारण प्राणियों का जीवन संकट में अवश्य पड़ जाता है या समाप्त हो जाता है । मेरी आप से एक विनती है, मुझे सदा कर्तव्य मार्ग पर अडिग, अविचल रखना हे स्वामी ! दीन दुखियों की पुकार सुन कर मैं कभी बैठा न रहूँ यही वरदान चाहिए मुझे ।

..... अपने लिये कुछ नहीं चाहिये मुझे । राजा का जीवन प्रजा के निमित्त निर्मित होता है । हर पल को वह प्रजा के लिये जीता है । यही चाहिये मुझे....... यही चाहिये ।

(पटाक्षेप)

पांचवां दृश्य

(भोर का समय । शेखा का दरबार । नेपथ्य में कोलाहल -- तुरही, नगाड़े बजने लगते हैं । घोड़ों की हिनहिनाहट व टापें सुनायी देती हैं । अस्पष्ट से गान रमणियों के द्वारा गाये हुये सुनायी दे रहे हैं । सेनापति, मंत्री, राव शेखा सभी मंच पर हैं ।)

शेखा – सभी सिपाही, सरदार तैयार हैं क्या ?

सेनापति – हाँ अन्नदाता ! सभी आपकी प्रतीक्षा में हैं । आपके पधारते ही सेना रवाना हो जायेगी ।

शेखा – अब देर किस बात की ? एक बार उस विधवा क्षत्राणी को रनिवास में यह संदेश भिजवा दो कि बेटी आज हम तुम्हारे प्रण को पूरा करने के लिये प्रस्थान कर रहे हैं । सफल होकर अवश्य लौटेंगे । किसी प्रकार की किंचित मात्र चिंता न करना । मां दुर्गा सभी का कल्याण करेंगी ।

सेनापति – महाराज पधारिये ।

शेखा – आज हमारा मन कुछ विचलित सा क्यों हो रहा है ?

मंत्री – क्षमा करें अन्नदाता ! शायद मन के किसी कोने में कोलराज से रिश्तेदारी वाला भाव घुमड़ रहा हो, इससे मन कमजोर हो आया होगा ।

शेखा – नहीं ऐसा न कभी हुआ है, न होगा । हमारे परिवार के रिश्ते-नाते, सुख-दुःख बाद मे आते है । पहले प्रजा का ध्यान आता है । वह हमें प्राणों से प्रिय है ।

मंत्री – यही होता आया है आपके जीवन में । आपने कभी अपनी परवाह न की । सदा दूसरों के लिये लड़ते रहे है इससे आज आपकी कीर्ति पताका

सर्वत्र फैल चुकी है ।

शेखा – ये सारे युद्ध हमने अपनी कीर्ति पताका फहराने के लिये नहीं किये । हमने अपना कर्तव्य पूरा किया और कर्तव्य से गिरे हुये को जीने का अधिकार नहीं होता । आज की मनःस्थिति कुछ दूसरी ही है ।

सेनापति – कैसी महाराज ?

शेखा – हमे यह चिंता सताये जा रही है कि इस प्रकार हम समस्त धरणी को पाप मुक्त नहीं कर सकेंगे । कितनी ही वार इस धरती पर देवताओं ने अवतार लिये मगर इस धारित्री पर फिर पाप का बिरवा पनप जाता है । पापी सिर उठा लेते हैं । भगवान् राम ने राक्षसों के सिरमौर रावण सहित सभी दुष्टों का समूल नाश कर दिया था । फिर भी यहाँ विनाश लीला वैसी ही चली आ रही है ।

मंत्री – यह प्रकृति का नियम है कि दुष्ट और दयालु साथ-साथ पनपते है । दुष्ट का अंत बुरा है । वह कुत्ते या कीड़े की मौत मरता है ।

शेखा – हमारे हाथों एक कोलराज के मारे जाने से क्या होगा ? धरती पर न जाने कितने कोलराज अभी जन्म लेंगे और न जाने कितने अलग-अलग स्थानों पर आज भी जीवित रह कर पापाचार फैला रहे हैं ।

मंत्री – सभी का अंत एक दिन निश्चित है ।

शेखा – बिल्कुल ठीक । सज्जन की मृत्यु पर आंसू गिराने वाले व दुःखी होने वाले अधिक होंगे । दुष्ट की मौत का सुन कर लोग प्रसन्न होते है । राहत की सांस लेते है ।

मंत्री – (हँसकर) अब कोलराज को मारकर प्रजा को राहत पहुँचाये श्रीमान् ।

शेखा – अरे ! मैं कहाँ भावनाओं में भटक गया था । सामने आयी परिस्थिति से न जूझ कर भविष्य की चिन्ता करने लगा । कल किसने देखा है । कल की चिन्ता करके भयभीत होने वाले कायर होते है । वीर को आज इसी क्षण की चिन्ता है । आज उसके हाथ में होता है । आज की पृष्ठभूमि पर कल अपने आप निर्मित हो जायेगा । चलो चलें ।

(सभी प्रस्थान करते हैं । राव शेखा व एक सेवक रह जाते हैं । चारों ओर से भाग-दौड़, घोड़ों की टाप सुनायी देती है । नेपथ्य से आवाज आती है – "यह कैसा अंधकार छा रहा है ?" सभी सुनते हैं, शेखा भी ।)

शेखा – यह कैसा शोर है ?

सेवक – घोड़ों को इधर से उधर दौड़ाने का आज कुछ उत्साह ही दूसरा है । आपकी प्रतीक्षा में सेना खड़ी न रह कर घोड़े दौड़ा रही है । यह खेह उसी के कारण उड़ कर आकाश में छा गयी ।

(महाराज जाने के लिये मुड़ते है कि नेपथ्य से एक नारी कंठ उभरता है । सुन कर राव शेखा रुक जाते हैं । सुनने लगते हैं ।)

हम धरती की बेटियाँ, मंगल गीत सुनाती हैं,
धर्म, संस्कृति के रक्षक की विजय पताका फहरेगी ।
नारी के अपमान का बदला, धरती स्वयं ही ले डालेगी,
हम धरती की बेटियाँ, मंगल गीत सुनाती हैं ।।

शेखा – ये कौन गीत गा रही हैं ?

सेवक – नगर की स्त्रियाँ हाथों में थालियाँ लिये सैनिकों की आरती उतार रही है और मंगल गीत गा रही है ।

शेखा – धन्य हैं ये नारियाँ जो युद्ध कभी नहीं चाहती और आवश्यकता पड़ने

पर अपने पति, पुत्रों, भाइयों व पिता को हँसते-हँसते युद्ध भूमि में भेजती हैं। इनका साहस व धैर्य अवर्णनीय है।

सेवक – इस बार के युद्ध में ये स्वयं जाना चाहती थीं कि एक नारी के अपमान का बदला नहीं समस्त नारी जाति के अपमान का बदला लिया जा रहा है।

शेखा – स्त्रियों को युद्ध में जाने की जरूरत हमारे रहते न पड़ी है और न पड़ेगी। (वे जाने लगते हैं।)

(पटाक्षेप)

(धीरे-धीरे शांति छा जाती है शोर दूर होते होते एक दम शांति होती है। दासी और रूपवती बैठी हैं। शेखा के दरबार का एक कक्ष। सेना युद्ध को जा चुकी है और स्त्रियाँ, कुछ सेवक या लाचार लोग पीछे रह गये है। (पर्दा खुलता है।)

रूपवती – आह ! मै कैसी अभागिन हूँ जिसने जन्म लेते ही अपने पिता को परेशानी में डाल दिया। विवाह के बाद गौना कर लौटी तब पति को मेरे कारण परलोक जाना पड़ा।

दासी – यह सब भाग्य का खेल है। आप व्यर्थ में अपने ऊपर कुपित हो रही है।

रूपवती – भाग्य को मनुष्य स्वयं बनाता है। मै उस दिन डोली से उतर पड़ती और दो टोकरी मिट्टी डाल देती, उससे मेरा क्या घट जाता ? मेरे प्राण-प्रिय पति की जीवन लीला यो सामप्त न होती और मुझे यह वैधव्य भोगना न पड़ता। मै उस दिन भाग्य बदल सकती थी।

दासी – यह सब विधि का खेल है। उसकी आज्ञा के विना पत्ता तक हिल-

डुल नहीं सकता । हम सब कारण निमित्त बनते हैं । डोर किसी और के हाथ होती है । हमने महापुरूषों से ऐसा यहाँ इसी दरबार में बोलते हुये झरोखे में बैठे-बैठे सुना है ।

रूपमती – मैं यही सोच रही थी कि तुम बड़ी ज्ञान की बातें कर रही हो ।

दासी – हम चाकरों के पास ज्ञान कैसा ? आप लोगों से सुन लिया, जो कानों में पड़ गया वही ज्ञान । आप यों ही कुंवरानी जी व्यर्थ की चिंता कर रही हैं अपने किये न किये पर । यदि यह घटना न होती तो कोलराज का शायद अंत न होता ।

रूपमती – मुझे कहते बड़ा संकोच हो रहा है यदि .... यदि इस युद्ध में मेरे पिता तुल्य पूज्य महाराज शेखा यदि कहीं.... नहीं ! ..... नहीं यह नहीं हो सकता । हे भगवान् उनकी रक्षा करना । उनका बाल भी बांका न होने पाये ।

दासी – आप ये क्या ऊल-जलूल सोच बैठी । हमारे महाराज न जाने कितने युद्ध लड़ चुके है । वे सदा सत्य का पक्ष लेते हैं । उनकी कभी हार नहीं हुयी ।

रूपमती – मनुष्य को सदा हार के लिये तैयार रहना चाहिए तभी जीत होती है । केवल जीत के गुणगान करने से जीत नहीं मिलती ।

दासी – देवी ! कैसी हार और कैसी जीत ? महाराजाधिराज सदा अन्याय के प्रतिकार को तत्पर रहते हैं । इस पुनीत कार्य को यज्ञ सा अनुष्ठान समझते हैं । पूज्य महाराज सभी को यही सिखाते हैं कि इस प्रकार के धर्म युद्ध में मरना जिसमें अत्याचारी का नाश हो, यज्ञ की आहुति देने के बराबर है ।

रूपमती – असली धर्म, मानव धर्म है । इसकी रक्षा करना पहला कर्तव्य है ।

(पटाक्षेप)

तृतीय अंक

पहला दृश्य

कोपोलाव तालाब से कुछ दूरी का जंगल क्षेत्र, जहाँ शेखा टहल रहे हैं। हाथों में हथियार हैं। ऐसे लगता है जैसे उन्हें पल-पल भारी लग रहा हो। दोपहर बाद का समय।

(पर्दा खुलता है।)

शेखा – अपनी दूसरी टुकड़ी अब तक तालाब पर पहुँच चुकी होगी। हालांकि हम लोग यह रास्ता रोकने उनसे पहले चल पड़े थे। हमारे योद्धा खेत रहें या हताहत हो जांय फिर हमें उनकी सहायता के लिये जाना होगा। ऐसी नौबत आयेगी नहीं।

सामंत – हमारे सैनिक उस दुष्ट को मार गिरायेंगे ऐसा मुझे लगता है। उसे मजा चखाने का अवसर हमारे हाथ न आ सकेगा।

शेखा – वास्तव में उस नर पिशाच को मारना अपना उद्देश्य है। उसे पहले समझा चुके हैं, वह बिल्कुल नहीं माना। अपनी राक्षसी आदतों से बाज नहीं आया। अब उसका अंत आ पहुँचा। यह पक्की बात है न, कि किले में जाने का दूसरा कोई मार्ग नहीं है ?

सैनिक – हां अन्नदाता ! हमने चारों ओर घूम फिर कर देख लिया है। किले में जाने का अन्य मार्ग नहीं है। एकमात्र यही है, जिसे रोके हम लोग खड़े हैं।

शेखा – हमें पूरी तरह चौकन्ना रहना है। किसी क्षण वह दुष्ट अपना मुंह छिपाये शरण लेने किले में इधर से भागा आ सकता है।

सैनिक – हमारी आँखें इसी राह पर लगी हैं । ये लपलपाती तलवारें लहू से प्यास बुझाने को तड़प रही हैं ।

सामंत – वह नराधम कोतवाल आज नजर आ जाय, पहले उसी के टुकड़े उड़ाऊंगा । उसने ही उस देवी को बेपर्दा करने की कोशिश की थी ।

शेखा – उसके उन हाथों को काट कर चीलों, गिद्धों के भेंट चढ़ाना है । (इतने में दो घुड़सवार भागते हुये आये ।)

आगन्तुक – महाराज की जय हो । दुष्ट कोलराज मांस-मदिरा की गोठ में बैठा था कि अपनी सेना ने चारों ओर से घेर लिया । घमासान युद्ध हो रहा है ।

शेखा – अपने सैनिक अधिक संख्या में हताहत तो नहीं हुये न ?

आगन्तुक – नहीं अन्नदाता ! अपने-अपने घावों की परवाह किये बिना दुगुने जोश से लड़ रहे हैं । उस कोतवाल और कोलराज दुष्ट पर सैनिक बब्बर शेर की तरह झपट रहे हैं । दुश्मन के पांव उखड़ने वाले हैं, लगता है कुछ समय में वह भाग कर किले की ओर आयेगा ।

शेखा – सभी रणबांकुरों सतर्क हो जाओ । अब वह समय अति निकट आ गया है जब अपनी प्रतिज्ञा पूरी होगी । जाओ कुछ लोग मार्ग में आगे बढ़ कर निगरानी रखो कि वह कब आता है ?

(कुछ समय बाद कोलाहल बढ़ता है । आगे-आगे कोलराज व उसके साथी भागे चले आ रहे हैं । सिपाही दौड़ कर राव शेखा के पास आते हैं ।)

सिपाही – आ गया महाराज ! वह इसी मौत की राह बढ़ा आ रहा है ।

शेखा – (कोलराज को देखकर) अरे दुष्ट, कायर भाग कर अब कहाँ जा रहा है ?

कोलराज – राव शेखा तुम्हारे से हमारी कोई शत्रुता न थी फिर यह छल रच कर क्यों आये हो ?

शेखा – (हँस कर) तुम्हें छल, कपट की परिभाषायें ज्ञात हैं क्या ?

कोलराज – मैंने आज तक तुम्हारे राज्य में दखल नहीं दी। आपस में हम लोग रिश्तेदार हैं फिर कौन सा वैर लेने आये हो ?

शेखा – अरे राहभेदी तुम सदा से दुराचारी रहे हो। जिसमें इस तालाब को खुदवाने में तुमने आतंक, भय, दुष्टता इत्यादि सभी का सहारा लिया है। याद करो कुछ समय पूर्व गौना कर के लौटते एक क्षत्रिय नवयुवक के साथ तुम्हारे दुष्ट कर्मचारियों ने कैसा व्यवहार किया था ?

कोलराज – उसने मेरे राज्य के नियमों का पालन करने से साफ मना कर दिया था। आज्ञा उल्लंघन करने वालों को कोलराज व उसके वीर सिपाही नहीं बख्शते।

शेखा – वह अपनी वधू के बदले की मिट्टी डलवा चुका था। दुबारा स्वयं डालने को तैयार था। तुम्हारे मदान्ध अधिकारी, सिपाही कहाँ मानने वाले थे – यथा राजा, तथा प्रजा। वे तुझ से दो हाथ आगे हैं, अपनी उदण्डता में। वे लोग उस अभागिन को बेपर्दा करने आगे बढ़े। प्रतिरोध करने पर उस युवक को मौत के घाट उतार दिया। यही तुम्हारा नियम है और यही तुम्हारा न्याय ? यह एक राजा का आचरण है ? धिक्कार है तुम्हें।

कोलराज – मैंने तो नहीं मारा उस युवक को, न मैंने स्त्रियों को बेपर्दा करने का हुक्म दे रखा है।

शेखा – कर्मचारी तुम्हारे हैं। तुमने उनके दुष्टता, नीचतापूर्ण कृत्यों के लिये क्या सजा दी ?

खड्ग सिंह – राव शेखा तुम्हें सजा देने खड्ग सिंह खुद आ गया है । मुझे तो ऐसे कार्यो के लिये सम्मान मिला है और मिलता रहेगा ।

सामंत – चुप रहो ! खड्ग सिंह । इस सारे झगड़े की जड़ तुम हो । तुम सम्मान की बात सही समय पर कह चुके हो । तुम्हें ही कोलराज से पहले सम्मान मिलेगा ।

शेखा – अरे दुष्ट ! तू अभी मुझ से बात करने के लिये इस धरती पर जीवित है । इस धरती ने फट कर तुझे निगल क्यों नहीं लिया ?

कोलराज – शेखा ! अब तक तुम्हारे युद्ध कमजोर राजाओं से हुये । इसलिये बड़े घमंड से आये हो । आज तुम्हें पता चलेगा कि शक्तिशाली से टक्कर लेने पर क्या परिणाम होता है ?

शेखा – मेरे साथ धर्म, न्याय, सत्य है और तुम्हारे साथ जितने अमानवीय कृत्य हैं वे सब जुड़े हैं ।

कोलराज – यह धर्म ग्रंथों का ज्ञान अपने पास रखो । तलवार का ज्ञान हो तो आओ । ज्यादा अपनी शक्ति पर घमंड हो तो एक बार मुझे मेरे दुर्ग में जाने दो फिर तुम्हारी क्या औकात ? साक्षात् भगवान् लड़ने को चले आयें उन्हें भी मुंह की खानी पड़ेगी ।

शेखा – विनाश के कारण तुम्हारी बुद्धि रावण की तरह विपरीत हो गयी है । तुझ जैसे पापी के लिये भगवान् को क्यों कष्ट दिया जाय, मैं पर्याप्त हूँ । वह विधवा बाला, प्रतिशोध की ज्वाला में धधक रही है । अब देर करना उचित नहीं । आओ युद्ध में तुम्हारा पराक्रम देख लूँ । अब किले में तुम नहीं कोई दूसरा ही जायेगा ।

कोलराज – राव शेखा तुम ऐसी कितनी विधवाओं को अपने पराक्रम का भुलावा देकर अपने रनिवास में रख चुके हो ।

शेखा – अरे नीच ! तू अपनी पापी आँखों से सभी नारियों को एक ही रूप में देखता है । तेरी आँखें क्यों न फूट गयी । वह मेरी धर्म की बेटी के समान है । उसके लिये तूने ऐसा सोच लिया तेरी जीभ को लकवा क्यों न मार गया । तुम्हारे जैसे दैत्य के साथ बात करना अपनी हेठी करवाना है । हो जाओ तैयार ।

कोलराज – कोतवाल खड्ग सिंह दिखाओ अपने हाथ ।

शेखा – यही है वह खड्ग सिंह दुष्ट जिसने वह पाप कर्म करना चाहा था । इसको बर्छियों, तलवारों से बोटी-बोटी काट डालो ।

(कोतवाल खड्ग सिंह धराशायी हो जाता है ।) दोनों ओर से खटाखट् तलवारें खटकने लगती हैं । कुछ देर के घमासान युद्ध के पश्चात् एक भीषण चीख के साथ कोलराज मारा जाता है । शेखा उसका मस्तक काट कर अपने साथ ले लेता है । साथ के नगाड़े वाले ने दोहा बोला –

घर जातां धरम पलटतां, त्रिया पड़ंतां ताव ।
औ तीनूं दिन मरण रा, कहां रंक कहां राव ।।

– महाराज ! धरती जा रही हो, धर्म परिवर्तित हो रहा हो और स्त्री की इज्जत जा रही हो तो ये तीनों दिन पुरुष के लिये मर मिटने के होते हैं । आपने नारी जाति के अपमान का बदला लेकर एक उदाहरण प्रस्तुत कर दिया है जो युगों-युगों तक याद किया जायेगा । आपने जान की बाजी लगा दी थी ।

शेखा – दुष्टों का अंत बुरा होता है । लोग इनके नाम को सुनकर गालियाँ देंगे व देश की रक्षा व समाज कंटकों का सफाया करने वाले वीरों की प्रशंसा की जायेगी । हमेशा से वीरों का गुणगान होता आया है । इसके लिये हम में से कितने ही रणबांकुरों को रणचंडी की भेंट चढ़ना पड़ा

सिपाही – कोलराज के सिर को अपने किले के मुख्य द्वार पर लगा देना

शेखा -- चलो अब जीत की खुशी मनायें । (सभी चलते हैं । शेखा उस दुष्ट कोलराज का मस्तक काट कर साथ ले चलता है ।)

(पटाक्षेप)

चाहिये । महाराज ! इससे जो घिनौने कार्य करने वाले शुत्र दल के योद्धा हैं उन्हें नसीहत मिले और डर समाया रहे ।

सामंत – फिर भी महाराज यह कार्य इतना सरल न था । कोलरान ने अपने रिश्तेदारों तक को इस युद्ध के लिये आमंत्रित कर रखा था । वे योद्धा भी इसके साथ मारे गये ।

शेखा – दुष्ट का साथ देना भी घातक होता है ।

सामंत – अब आपकी क्या आज्ञा है ?

शेखा – मेरी आज्ञा नीति के अनुकूल होगी ।

सामंत – यह एक दुराचारी शत्रु था, यह सोचने की वात है ।

शेखा – शुत्र हुआ तो क्या हुआ, था तो एक योद्धा । वह घिनौने कार्य करता था, दुष्टों को शरण देता था लेकिन हमें अपनी मर्यादा नहीं छोड़नी चाहिये । यही मानव का धर्म है ।

सामंत – वह राहभेदी, दुष्ट, दुराचारी था और इस प्रकार के आचरण वाले इसके कर्मचारी व सहयोगी थे । इसके साथ कैसी मानवता ।

शेखा – हमें हमेशा यह ध्यान रखना चाहिये कि दुष्ट प्रवृति का हुआ तो क्या हुआ अब शव हो चुका है । शव का अपमान नहीं करना चाहिये । शव होने के बाद मिट्टी है व मिट्टी में मिल जायेगा । हमें माटी का अपमान कभी नहीं करना चाहिये ।

सामंत – आप अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उसका कटा सिर साथ ले चलें । यह उस देवी को सौंप देगे । यहीं हमारा उद्देश्य था इस युद्ध का ।

(नेपथ्य से तुरही, नगाड़े, ढोल व जय नाद सुनाई देते है ।)

शेखा – चलो अब जीत की खुशी मनायें । (सभी चलते हैं । शेखा उस दुष्ट कोलराज का मस्तक काट कर साथ ले चलता है ।)

(पटाक्षेप)

दूसरा दृश्य

(राव शेखा ने अपनी सेना के साथ युद्ध से अपनी राजधानी अमरसर में प्रवेश किया। किले के निकट पहुँचने पर गान सुनायी देता है। पर्दा खुलता है। राव शेखा अपने दरबार में हैं। नेपथ्य से विजय गान सुनायी दे रहा है।)

तुम वीर प्रसविनी वसुन्धरा के,
बांके लाल निराले हो।
तुम जगमग चमको इस जग में,
आसमान पर छा जाओ।
दुश्मन की छाती पर चढ़ कर,
भीषण पहाड़ से अड़ जाओ।
तुम हो धरती की आशायें,
बाधाओं से रुक न जाओ ;
आगे बढ़ते जाओ, आगे बढ़ते जाओ।

शेखा – (प्रसन्न होकर) इन स्त्रियों के विजय गान ने थकावट दूर कर दी। ये नारियाँ ही पुरुष में शक्ति का संचार करती हैं। इनके बिना मानव निर्जीव है, एक लोथ है। इनसे प्रेरणा पाकर या इनके लिये ही सारे क्रिया कलाप होते हैं। सृष्टि चलती है। नारी तू धन्य है !

(रूपमती लोक लाज के सारे बंधन तोड़ कर बिलखती आकर राव शेखा के पैरों में गिर पड़ती है।)

रूपमती – हाय पिता श्री आप धन्य हैं जो एक नारी की करूण पुकार सुन कर इतने द्रवित हो गए। मुझ को मेरा बदला मिल गया। आज मेरी ससुराल व पीहर पक्ष के सारे परिजन मिल कर यह कार्य न कर पाते। उनके वश की बात न थी इतने शक्तिशाली दुष्ट राजा व उसके कर्मचारियों से निपटना।

शेखा – (उसे उठाते हुये) – बेटी यह मेरा सौभाग्य है कि मैं कुछ काम आ सका । मैं तेरा पति तुझे नहीं लौटा सकता केवल बदला दिलवा सकता था । अपराधी को मिटा कर हमेशा के लिये वह मार्ग निष्कंटक कर दिया है । इससे आगे कुछ करने की मेरी सामर्थ्य नहीं थी ।

रूपमती – आपने मुझ अभागिन तुच्छ नारी की पुकार को इतना महत्व देकर अपने प्राण संकट में डाल दिये । यह मेरे लिये सबसे बड़ी बात है ।

शेखा – यह नश्वर शरीर एक दिन समाप्त होना है, हो जायेगा । इससे कुछ सत्कर्म किये जा सकें, वे हमेशा याद रहेंगे । उससे हमारी भावी पीढ़ी सुधरेगी । हमारा देश सुधरेगा । कई दिनों से इस दुष्ट नराधम को मजा चखाने की बात मेरे मन मे थी । कोई प्रत्यक्ष कारण न मिलने से मैं मौन था । आज तुम्हारी प्रतिशोध की ज्वाला और मेरी क्रोधाग्नि शान्त हुयी ।

रूपमती – अपनी प्रजा का, शरणागत का संतान से बढ़कर ध्यान रखने वाले तेजस्वी राजा आप दीर्घायु हों । आपका यश सदा, सर्वदा के लिये अमर हो जायेगा ।

शेखा – बेटी यह एक राजा का कर्तव्य था कि दुःखी की पुकार सुनकर द्रवित होना और अत्याचारी को उचित दण्ड देना । धन्य है तुम जैसी वीरांगना को जन्म देने वाली माता, जो तुमने बिना डर, भय के उस तालाब की मिट्टी लाकर भरे दरबार में डाली और मेरी आंखे खोल दीं । मुझे तलवार उठाने को विवश कर दिया ।

रूपमती – अधिक प्रसन्नता इस बात की है महाराज कि अब उस राह जाने वाली स्त्रियों पर मुझ जैसा अत्याचार न होगा । ऐसा आघात उन दुष्टो के द्वारा किसी सुकुमारी को सहन न करना पड़ेगा । वह मार्ग सहज हो गया । किसी का अपमान न होगा ।

सेनापति – देवी तुम्हारे पति के हत्यारे कोतवाल का भी वध किया जा चुका है । कोलराज व उसके दुष्ट सिपाही भी मारे जा चुके है ।

(अचानक वह विधवा रूपमती अट्टहास कर उठती है । सभी चौंक जाते हैं । वह आवेग से उठ कर राव शेखा से कोलराज का मस्तक छीन लेती है । उस मस्तक को बालों से पकड़ कर हवा में उठा कर जोर-जोर से बोलती है । आकाश की ओर देखती है ।)

रूपमती – प्राणनाथ कहाँ हो ? देखो ! देखो !! हत्यारा मारा गया । वे सिपाही, वह नीच कोतवाल सभी मारे गये । आप अपने हाथ से नहीं मार सके । कोई बात नहीं । (आकाश की ओर देख कर) – आप देख रहे हैं न, देखिये । अब उस मार्ग जाने वाली कोई स्त्री..... विधवा न होगी । वह तालाब हत्यारा कहलायेगा । उसका पानी कोई नहीं पीयेगा । वहाँ भीषण रक्तपात हुआ है । पापियों का रक्त उस जगह बहा है । उन सभी को अपने किये का फल मिल गया है ।

(झुक कर राव शेखा के पैर पकड़ती है) – मेरे पिता ने यह बदला लिया है । सुना है सत्य का साथ देने वाले योद्धाओं पर अप्सरायें पुष्प वर्षा करती हैं । आप स्वर्ग में हैं । करवाइये पुष्प वर्षा । जिससे यह समस्त धरती फूलों से ढक जाए । सौरभ से महक जाय । यहाँ फिर पाप न रहे, विनाश न रहे । (आवाजा धीमी पड़ती जाती है ।) दुष्ट न रहें । वीरों की सदा विजय हो । देश में शांति का साम्राज्य हो, सद्भाव हो । (पुष्प वर्षा होती है ।)

(पर्दा गिरता है)

रूठी रानी

(अचानक वह विधवा रूपमती अट्टहास कर उठती है । सभी चौंक जाते हैं । वह आवेग से उठ कर राव शेखा से कोलराज का मस्तक छीन लेती है । उस मस्तक को बालों से पकड़ कर हवा में उठा कर जोर-जोर से बोलती है । आकाश की ओर देखती है ।)

रूपमती – प्राणनाथ कहाँ हो ? देखो ! देखो !! हत्यारा मारा गया । वे सिपाही, वह नीच कोतवाल सभी मारे गये । आप अपने हाथ से नहीं मार सके । कोई बात नहीं । (आकाश की ओर देख कर) – आप देख रहे हैं न, देखिये । अब उस मार्ग जाने वाली कोई स्त्री..... विधवा न होगी । वह तालाब हत्यारा कहलायेगा । उसका पानी कोई नहीं पीयेगा । वहाँ भीषण रक्तपात हुआ है । पापियों का रक्त उस जगह बहा है । उन सभी को अपने किये का फल मिल गया है ।

(झुक कर राव शेखा के पैर पकड़ती है) – मेरे पिता ने यह बदला लिया है । सुना है सत्य का साथ देने वाले योद्धाओं पर अप्सरायें पुष्प वर्षा करती हैं । आप स्वर्ग में हैं । करवाइये पुष्प वर्षा । जिससे यह समस्त धरती फूलों से ढक जाए । सौरभ से महक जाय । यहाँ फिर पाप न रहे, विनाश न रहे । (आवाज़ा धीमी पड़ती जाती है ।) दुष्ट न रहें । वीरों की सदा विजय हो । देश में शांति का साम्राज्य हो, सद्भाव हो । (पुष्प वर्षा होती है ।)

(पर्दा गिरता है)

रूठी रानी

रूठी रानी की संक्षिप्त कथा

इस ऐतिहासिक नाटक का कथानक काफी मार्मिक है । अपनी आन-बान-शान के लिये एक परम सुन्दरी रानी ने अपना समस्त जीवन क्रूर नियति की भेंट चढ़ा दिया । इतिहास में उस रानी का मान या रूठना जगत प्रसिद्ध है ।

सन् १५३६ ई. में जोधपुर के राव मालदेव एक विशाल बारात हाथी, घोड़ों के साथ जैसलमेर के रावल लूणकरण की अनन्य सुन्दरी कन्या उमादे से ब्याह रचाने ले गये । ब्याह हो गया । सुहाग रात उस समय की प्रथा के अनुसार विवाह के बाद नैहर में होती थी । रानी उमादे श्रृंगार मे व्यस्त थी । दासी भारमली उनकी खास सखी और बेहद सुन्दरी थी । उसे राव मालदेव के मन बहलाव के लिये भेज दिया गया ।

थोड़ी देर में श्रृंगार के पश्चात् जब रानी ने कक्ष में पदार्पण किया तब दासी भारमली को राजा के आलिंगन में देख लिया । जाते-जाते प्रण कर गयी कि मैं जोधपुर नहीं जाऊँगी । मालदेव जी ने व जैसलमेर वालों ने खूब अनुनय, विनय की । रानी टस-से-मस न हुई ।

ईसर दास जी के मनाने पर अजमेर (जो कि उस समय मालदेव जी के आधीन था) जाने को तैयार हो गयी । कुछ समय बाद शत्रु के आक्रमण के बहाने से मालदेव ने उसे जोधपुर आने के लिये राजी करवा लिया लेकिन विधाता का लेख कुछ और ही था ।

जोधपुर की रानियों ने सौतिया डाह से चारण आशानंद को मार्ग में ही रानी से भेंट करने को भेजा । आशानंद ने ईसरदास जी के इधर-उधर होने का मौका देख कर चुभती बात कह सुनायी । प्रण की याद दिलायी । रानी ने फिर से अपना हठ पकड़ लिया और मार्ग मे रुक गयी । फिर वह जीवन पर्यन्त वहीं रही । रानी की व्यथा कथा पढ़ कर आँखे नम हो जाती है । इतिहास के वे पन्ने आज भी गीले हैं । सुबक रहे है । विवाहित होकर भी राजा-रानी मिल कर साथ न रह सके ।

रूठी रानी

पात्र

राव मालदेव – जोधपुर का शासक
ईसरदास – जोधपुर का चारण
कन्हैया – मालदेव का खास सेवक
रावल लूणकरण– जैसलमेर का शासक
उमादे – लूणकरण की पुत्री
और मालदेव की ब्याहता
भारमली – उमादे की दासी
गोपाल सिंह – उमादे का भाई
आशानंद – जोधपुर का चारण
चम्पा – जोधपुर की दासी

प्रथम अंक

पहला दृश्य

(राव मालदेव बड़ी बारात के साथ जोधपुर से जैसलमेर आये हुए हैं। उमादे से विवाह हो चुका है। सन् १५३६ ई. की बात। सांझ का समय। विवाह के बाद सुहाग रात की तैयारी। उमादे श्रृंगार कर रही है तब तक अपनी अंतरंग दासी भारमली को राजा के मनबहलाव के लिये भेजती है। महल का एक कमरा है। इस कमरे का दरवाजा व आगे का दरवाजा दिखायी देता है। मालदेव बैठे हैं। कन्हैया उनके पैर दबा रहा है।) पर्दा खुलता है।

कन्हैया – सरकार जैसलमेर की धरती बड़ी लुभावनी है। भूरी-भूरी रेत के टीबों

भारमली – (हँसते हुये) मेरा नाम भारमली है । और आपका ?

कन्हैया – मुझे कन्हैया कहते हैं, तुम कान्हा कहोगी वही चलेगा । यह बताओ कि रानीजी कब तक पधारेंगी ?

भारमली – मैं रानी साहिबा का संदेश लेकर आयी हूँ । वे कुछ देर में पधारेंगी तब तक मैं महाराज का मन-बहलाव कर सकती हूँ क्या ? जरा महाराज से पूछ कर बताइये ।

कन्हैया – अभी आज्ञा लेकर आया ।

भारमली – यों चटपट आज्ञा मिल जायेगी क्या ?

कन्हैया – तुम जैसी सुन्दरियों को पास आने की आज्ञा यदि यहाँ ईन्दर भगवान् हों, वे तुरन्त दे डालें । जिस मे हमारे महाराज आखिर मानव देहधारी हैं ।

(कन्हैया महाराज के पास जाता है ।)

कन्हैया – महाराज ! .... रानी साहिबा का संदेश (बाहर की ओर घूम कर) आयी है । मेरा मतलब आया है संदेश ।

मालदेव – क्या ? क्या वे आज नहीं आयेंगी ?

कन्हैया – नहीं दयानिधे ! रानी साहिबा अभी, ... अभी कुछ देर में पधारेगी ।

मालदेव – अच्छा ! अच्छा !! फिर ठीक है । देरी की कोई बात नहीं ।

कन्हैया – रानी साहिबा बड़ी व्यवहार कुशल और कोमल हृदयवाली है । उन्होने आपके मन बहलाव के लिये एक अप्सरा सी सुन्दर दासी को भेजा है । वह द्वार पर खड़ी है । यदि सरकार की आज्ञा हो तो उसे सेवा में प्रस्तुत करूं ।

का समन्दर लहरा रहा है ।

मालदेव – (मुस्कराते हुये) – यहाँ की धरती कान्हा कितनी निर्मल और सोने जैसी पीली-पीली चमकती है । यहाँ का पत्थर भी पीत रंग में रंगा स्वर्णिम आभा देता है ।

कन्हैया – यहाँ की एक वस्तु सुन्दर हो तो कहें भी, मुझे यहाँ हर वस्तु में सुन्दरता की छवि दिखायी देती है । यहाँ के ऊंटों की कतारें जब इन टीबों में पैर धंसाती आगे बढ़ती हैं तब देखने वाले का मन मयूर नाच उठता है ।

मालदेव – कहाँ तू जानवरों की बातें ले बैठा । यहाँ की रमणियाँ सदा से प्रसिद्ध रही है । उनके रूप, लावण्य की चर्चा कथाओं में चलती है ।

कन्हैया – हां अन्नदाता बिल्कुल सही है । तभी कहा गया है –

'मारवाड़ नर नीपजै, नारी जैसलमेर ।'

जैसलमेर की रूपवती रमणियों की गाथा इतिहास के पन्नों को सौन्दर्य प्रदान करती रहेगीं ।

मालदेव – (आनंदित होते हुये) – इसलिये तो बड़ी इच्छा के बाद यह विवाह हमने अन्य रानियों के होते हुये किया । कान्हा ! तू बड़ा मजेदार आदमी है । मौके की बात कहने में तेरी कोई बराबरी नहीं । यह पता लगा कर आ कि रानी उमादे कब पधारेंगी ।

(सेवक द्वार तक जाता है । वहाँ रूप से परिपूर्ण एक दासी दूसरे दरवाजे से प्रवेश करती दिखायी दे जाती है ।)

भारमली – मेरा अभिवादन स्वीकार करें ।

कन्हैया – तुम्हारा नाम ?

भारमली – (हँसते हुये) मेरा नाम भारमली है । और आपका ?

कन्हैया – मुझे कन्हैया कहते हैं, तुम कान्हा कहोगी वही चलेगा । यह बताओ कि रानीजी कब तक पधारेंगी ?

भारमली – मैं रानी साहिबा का संदेश लेकर आयी हूँ । वे कुछ देर में पधारेंगी तब तक मैं महाराज का मन-बहलाव कर सकती हूँ क्या ? जरा महाराज से पूछ कर बताइये ।

कन्हैया – अभी आज्ञा लेकर आया ।

भारमली – यों चटपट आज्ञा मिल जायेगी क्या ?

कन्हैया – तुम जैसी सुन्दरियों को पास आने की आज्ञा यदि यहाँ ईन्दर भगवान् हों, वे तुरन्त दे डालें । जिस में हमारे महाराज आखिर मानव देहधारी हैं ।

(कन्हैया महाराज के पास जाता है ।)

कन्हैया – महाराज ! .... रानी साहिबा का संदेश (बाहर की ओर घूम कर) आयी है । मेरा मतलब आया है संदेश ।

मालदेव – क्या ? क्या वे आज नहीं आयेंगी ?

कन्हैया – नहीं दयानिधे ! रानी साहिबा अभी, ... अभी कुछ देर मे पधारेंगी ।

मालदेव – अच्छा ! अच्छा !! फिर ठीक है । देरी की कोई बात नहीं ।

कन्हैया – रानी साहिबा बड़ी व्यवहार कुशल और कोमल ह्रदयवाली हैं । उन्होंने आपके मन बहलाव के लिये एक अप्सरा सी सुन्दर दासी को भेजा है । वह द्वार पर खड़ी है । यदि सरकार की आज्ञा हो तो उसे सेवा में प्रस्तुत करूं ।

मालदेव – हां ! हां क्यों नहीं । हमें इस विवाह के बाद जैसलमेर की हर वस्तु पहले से अधिक सुन्दर लगने लगी है । जिसमें हमारे सामने कोमलांगी नारी आ रही है । बुलाओ उसे जिससे समय ठीक से कट जायेगा । (कन्हैया दौड़ा हुआ जाकर सम्मान सहित बुला लाया । भारमली के हाथ में एक थाल, जिसमें सुराही-प्याले रखे हैं । वह ठुमक-ठुमक कर आ रही है । मालदेव उसके नख-शिख को आश्चर्यचकित हो कर देख रहे हैं । वह एक ओर आकर खडी हो जाती है । महाराज को एक टक निहार रही है ।)

भारमली – (झुक कर अभिवादन करती है) खम्मा अन्नदाता ! घणी खम्मा अन्नदाता !

मालदेव – (हंसकर हाथ से अभिवादन का उत्तर देते हैं) – सुनो! तुम यह सब हाथ में लिये क्यों खड़ी हो ?

भारमली – (चौंक कर) हॉ महाराज ! कुंवर जी सरकार ! मैं इन्हें एक ओर रख देती हूँ । नहीं–नहीं ! आपको प्रस्तुत करने आपकी सेवा में उपस्थित हुयी हूँ । हां आपको अभी प्रस्तुत करती हूँ । (अचकचा जाती है ।)

मालदेव –. हां ! हां !! देवी, जैसी तुम्हारी इच्छा हो ।

भारमली – (लजा जाती है) प्याला वना कर लाती है । लीजिये सरकार यह पहला प्याला जैसलमेर की सम्पूर्ण सुन्दरता की तरफ से आपको प्रस्तुत कर रही हूँ ।

मालदेव – हां लाओ । तुम्हारे हाथ से मदिरा क्या यदि हलाहल जहर पीना पड़े उसे भी लोग हँसते-हँसते पी जायेंगे ।

(मालदेव ने गट्-गट् करके प्याला होठों से लगाकर एक बार में समाप्त कर दिया । प्याला दासी को थमाते समय उनका हाथ उससे छू जाता है ।)

मालदेव – तुम्हारा नाम क्या है सुन्दरी ?

भारमली – अन्नदाता ! पृथ्वीनाथ ! नाम आप लोगों के हुआ करते हैं । दासी को भारमली पुकारा जाता है ।

मालदेव – बहुत सुन्दर नाम । यह रूप छिटकाता यौवन और इस यौवन के भार को सहेज कर उठाये घूमती है भारमली । वाह क्या बात है ।

भारमली – (तब तक दूसरा प्याला बना लाती है) – प्याला प्रस्तुत है सरकार ! यह प्याला जैसलमेर की मान-मर्यादा के नाम लीजिये । (महाराज प्याला पकड़ते हुये कुछ देर हाथ छुवाया हुआ रखते है ! भारमली परे हट जाती है ।)

मालदेव – यहाँ की सभी नारियाँ अत्यन्त रूपवती हैं क्या ? तुम जैसी यहाँ कितनी दासियाँ और हैं ?

भारमली – अन्नदाता ! मुझ गंवार तुच्छ दासी में है ही क्या ? रत्नजड़ित सुन्दरता वाली इस नगरी में रूप राशि के वैभव से आच्छादित न जाने कितनी सुकुमारियाँ होंगी ? अनगिनत ।

मालदेव –हूँ ! (थोड़ा-थोड़ा कर के प्याला खत्म करते हुये) – तुम्हारे हाथ से मदिरा पीने का मजा ही कुछ और है । देवता जिसे सोमरस कह कर पीते हुये आनंदित होते हैं, वह साधारण मदिरा ही है लेकिन अप्सराओं के साथ बैठ कर उनके हाथ से पीने पर परम् सुख की वस्तु बन जाती होगी ।

भारमली – (प्याला लिये हुये) – लीजिये सरकार ।

मालदेव – क्या आज एक के बाद एक, इसी प्रकार प्याले मुझे पिलाती रहोगी ? मैं बेहोश न हो जाऊं ? एक बार देख आओ कि रानीजी कितनी देर में पधारेंगी ।

(भारमली प्याला रख कर जाने को मुड़ती है ।)

मालदेव – सुनो ! यह प्याला देती जाओ । रानीजी को जल्दी आने का कह

देना और बाहर से कान्हा को भेज दो ।

(भारमली चली जाती है । कन्हैया का प्रवेश)

कन्हैया – हां सरकार ! क्या हुक्म है सेवक के लिये ?

मालदेव – हुक्म तेरा सिर । मन बेचैन था इसलिये बुला लिया ।

कन्हैया – आपके सिर की मालिश कर दूँ अन्नदाता ?

मालदेव – अभी तक सिर ठीक-ठाक है । मन ही विचलित हुआ है । एक बात कहूँ – यह दासी भारमली तुम्हें कैसी लगती है ?

कन्हैया – मुझे सरकार ?

मालदेव – हां, तुझे ।

कन्हैया – (झेंपते हुये) – सुन्दर है सरकार । काफी सुन्दर है ।

मालदेव – तेरा इससे विवाह करवा कर जोधपुर साथ ले चलें ? हमें मदिरा इसके हाथ से पीने को मिल जायेगी जिससे और भी जायकेदार लगेगी वह मदिरा ।

कन्हैया – जैसी आप सरकार की मर्जी हो । हम सेवकों का क्या ? जब हुक्म देंगे, सेहरा बांध लेंगे । रहना आपकी चाकरी में ही है । जैसा आपका हुक्म हो हम वैसा करने को तत्पर रहते है ।

(भारमली का प्रवेश । इस बार वह कुछ खुली-खुली स्वच्छन्दता पूर्वक आती है । कन्हैया बाहर चला जाता है ।)

भारमली – अन्नदाता । राजकुमारी उमादे का थोड़ा श्रृंगार बाकी रहा है । वे

पूर्ण सुसज्जित होने के पश्चात् आपके सम्मुख पधारने वाली है । तब तक के लिये मुझे फिर से आज्ञा दी है कि आपके चित्त को जरा भी खिन्न न होने दूँ ।

मालदेव – तुम रहोगी यहाँ तब तक चित्त प्रसन्न रहेगा, लेकिन वे ऐसा क्या श्रृंगार कर रही हैं ?

भारमली – मुझे वे अपनी सहेली के समान मानती हैं । यह उनका बड़प्पन है । मैं उनकी सारी अंतरंग बातें भलीभांति जानती हूँ । वे जब पूर्ण श्रृंगार के पश्चात् यहाँ कक्ष में पधारेंगी तब ऐसा लगेगा जैसे समस्त ग्रहों के साथ सूरज-चांद धरती पर उतर आये हों । आप देखते रह जायेंगे सरकार उनके रूप माधुर्य को । उनकी हिरणी सी आँखें जब चकौर सा मन लिये आपको निहारेंगी तब समस्त धरती का सुख आपके आसपास दृष्टिगोचर होगा । उस समय आप वास्तव में हमारी जैसलमेर की धरती के लिये वाह, वाह कर उठेंगे ।

मालदेव – अच्छा लाओ इस रूप माधुर्य के नाम पर एक प्याला तुरन्त बना लाओ ।

भारमली – (प्याला बना कर) – लीजिये अन्नदाता ।

मालदेव – (प्याला लेते हुये फिर थोड़ी देर हाथ थाम लेते हैं ।) – तुम कितनी सुन्दर हो और साथ-साथ गुणवती भी ।

भारमली – हम चाकरों का क्या सुन्दर और क्या असुन्दर । हम वनफूल से पलते रहते हैं । हमारी क्या औकात और कैसी सुन्दरता । जब तक आपकी निगाह सीधी रहे, तब तक सुन्दर और जिस दिन निगाह बदल जाय उसी दिन बदसूरत ।

मालदेव – ऐसी बात नहीं है भारमली । सौंदर्य को निहार कर सराहना व सहेज

कर रखना अपने आस-पास हर कोई चाहता है । कितनों के हिस्से में सुन्दरता आती है, यह अलग बात है । अच्छा यह बताओ कि रानीजी क्या-क्या पसंद करती है ? उनके मन के भावों का कुछ अता-पता तो चले ।

भारमली -- हमारी उमादे राजकुंवरी के बारे में आप इतने उतावले व चिंतित क्यों हैं ? उन्हें साज-सज्जा का बेहद शौक है । हर वस्तु को वे एक खास अंदाज से रखती है । उनकी हर बात में उच्चकोटि की कला के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं ।

(मालदेव पर मदिरा का असर हो जाता है ।)

मालदेव – भारमली अब रानी उमादे कितनी देर और लगायेंगी ?

भारमली – शायद श्रृंगार हो गया होगा । आरती का थाल और पुष्प मालायें सजा रही होंगी । मै एक बार फिर देख कर आऊं अन्नदाता ?

मालदेव – नहीं ! नहीं ! अब तुम मत जाओ रानी भारमली ।

भारमली – (जीभ निकाल कर मुंह के साथ लगाती है) – मैं एक तुच्छ दासी हूँ अन्नदाता । राजकुमारी जी के साथ दी जाने वाली एक तुच्छ बांदी । मुझे रानी न कहे । कहीं उमादे ने सुन लिया तो मेरी खाल खेंच लेगी । आपका कुछ न बिगड़ेगा ।

मालदेव – (झूमते हुये) अच्छा-अच्छा तुम्हें रानी नहीं कहेंगे । क्यों डर रही हो ? भारमली ! जिसे ईश्वर ने अपार रूप दिया हो उसे अधिक श्रृंगार की क्या आवश्यकता ? यह रात, भीनी-भीनी चांदनी लिये छिटका हुआ यह चांद, यह हवा, मदिरा की मस्ती, ऊपर से तुम्हारा साथ अब उमादे को अधिक देर नहीं करनी चाहिए ।

(मालदेव झूम कर भारमली को पास बुलाते हैं । वह घबरा जाती है ।)

भारमली – मैं चलूं सरकार । रानी उमादे को भेजती हूँ ।

मालदेव – वे अपने आप आ जायेंगी । तुम यों छोड़ कर मुझे न जाओ । लाओ एक प्याला और ......

भारमली – (प्याला प्रस्तुत करती है) – आपको मदिरा की मात्रा अधिक न हो जाय ? उमादे मुझे डांटेंगी, कि बातों के बहाव के साथ मदिरा अधिक क्यों पिलादी ?

मालदेव – वे डाँटेंगी तब देखी जायेगी । तुम्हारे हाथों से सारी रात पीता रहूँ, ऐसा मेरा मन कर रहा है । (वे प्याला पकड़ने के साथ-साथ भारमली का हाथ पकड़ लेते हैं । भारमली सकपका जाती है ।)

भारमली – यह क्या कर रहे है सरकार ? मुझे छोड़ दीजिये । मुझे जाने दीजिये । आज आपकी सुहागरात है ।

मालदेव – तो मैं क्या करूं ?

भारमली – उमादे आती होंगी । वे बहुत क्रोधवाली हैं । मेरी खैर नहीं है ।

मालदेव – तब देखा जायेगा । वे नाराज होंगी तब तुम्हें जोधपुर साथ न ले जायेंगी । तुम चिन्ता न करो हम तुम्हें साथ ले जायेंगे ।

भारमली – (छुड़ाने का आखिरी प्रयत्न करती हुयी) – मैं.... मै एक दासी और आप..... आप राजा । यह क्या अत्याचार कर रहे हैं ? हम आपके सेवक हैं । सरकार सेवा में मौन खड़े रहने वाली हाड़-मांस की पुतलियाँ हैं । मूक बने रहने वाले, वर्षो से मौन साधे.... हर परिस्थिति को झेलते रहने वाले सेवक, हर हाल में खुश रहने वाले, भीतर ही भीतर रोते रह कर भी बाहर से हँसने वाले सेवक है ।

मालदेव – वाह भारमली क्या बुद्धि पायी है । सोने में सुगंध वाली बात तेरे

भीतर है ।

भारमली – हमारी बुद्धि किस काम की सिवा आपको खुश रखने के, हमें इसे और कहाँ उपयोग में लेना है ? आज आपकी सुहागरात है । यह रात......

मालदेव – क्या उमादे को यह सब नहीं मालूम । वह जानबूझ कर देर क्यों लगा रही हैं ?

भारमली – सरकार ! यह रात प्रत्येक नारी के जीवन में एक बार रजनीगंधा सी महक लेकर खिलती है । अपने देश की नारी के लिये यह अवसर महान्तम माना जाता है । इस रात्रि में वे क्षण आते हैं जब वह भाग्यवती स्त्री अपने जीवन का सर्वस्व, तन, मन सहित अपने पति को सौंपती है फिर इसे जीवन पर्यन्त याद रखती है । इस रात्रि में किसी दूसरे का हस्तक्षेप करना हमारी संस्कृति के विपरीत है । घोर पाप है । उमादे पर ऐसा अन्याय न करें । इस पाप की सहभागिनी मुझे न बनायें ।

मालदेव – (आँखें घूम रही हैं) – पाप-पुण्य किसने देखा है ? जो सही अवसर पर मौजूद हो वही श्रेष्ठ है । अभी तुम मेरे लिये कितना त्याग करके मन बहलाव करने आयी हो । एक नारी होकर दूसरी के लिये कितने उच्च विचार रखती हो । धन्य हो तुम और तुम्हारा त्याग ।

(मालदेव भारमली को दोनों हाथों से पकड़े हुये हैं । वह छुड़ाने की चेष्टा में है । मालदेव आलिंगन में ले लेते हैं । इसी समय उधर के दरवाजे से उमादे का प्रवेश । नख से शिख तक सजीधजी । गजरे, फूलमालायें पहने हुये । हाथों में आरती का थाल है । पति को दासी के साथ आलिंगन में देखने से पूर्व मुस्कराहट थी वह बाद में गायब हो जाती है । त्यौरियाँ चढ़ जाती हैं । साधारण अभिवादन तक करना भूल कर आग बबूला हो जाती है ।)

उमादे – वाह जोधपुर नरेश ! वाह ! क्या कहने आपके ।

(भयभीत भारमली झटकने का प्रयास करके राजा के हाथों से छुड़ा कर एक ओर कांपती हुई खड़ी हो जाती है। मालदेव उसे छोड़ कर किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं।)

मालदेव – खम्मा घणी !

उमादे – इस अभिवादन की अब क्या आवश्यकता ? आप जितना गिर सकते हैं उससे ज्यादा गंदगी में गिर चुके हैं। (मालदेव भारमली की ओर कातर दृष्टि से देखते हैं।)

मालदेव – इस बेचारी पर क्यों कुपित होकर उल्टे-सीधे प्रहार करती हो। इसका क्या दोष है ?

उमादे – दोष मेरा है जो इसे आपके मन बहलाव को भेज दिया। यदि इस दो कौड़ी की दासी की आवश्यकता थी तब इतनी दूर जोधपुर से यह विशाल हाथी-घोड़ों वाली बारात लाने की क्या आवश्यकता थी। आपके वहीं भिजवा देते इसे।

मालदेव – आप व्यर्थ में आग बबूला होकर राई का पहाड़ और तिल का ताड़ बना रही हैं। कैसा सुहाना मौसम, कैसी यह चांदनी से नहायी रात चारों ओर फैली है। कोई अच्छी सी बात कीजिये।

उमादे – रहने दीजिये अब ये बनावटी बातें। हमारे शास्त्रों में पति को परमेश्वर कहा गया है। ऐसे ही आचरण वाले पति कभी परमेश्वर हुआ करते हैं क्या ? युगों-युगों से चली आ रही नारी की इस अवसर के लिये पवित्र भावना और आज की रात के पवित्र समर्पण को आपने ठुकरा दिया। एक नारी के कोमलतम भावनाओ के तंतुओं को आपने छिन्न-भिन्न कर दिया। ऐसे कामान्ध को मुझ जैसी मर्यादित नारी से विवाह की क्या आवश्यकता थी ?

मालदेव – अरे ! आप गलत समझ रही हैं रानी जी। आप वास्तव में मेरे

हृदय की रानी हैं । मैं ऐसे चरित्र वाला व्यक्ति नहीं हूँ जैसा आप समझ रही हैं । कुछ-कुछ मदिरा का असर समझो, कुछ इस सुहाने मौसम और परिस्थिति का.... और सबसे बड़ी बात इस..... इस भारमली की सुन्दरता ही मन मोहने वाली है ।

उमादे – (भारमली की ओर मुखातिब होकर) – तुम्हें सबसे विश्वासपात्र और अंतरंग समझ कर भेजा था, इनके मन-बहलाव के लिये जिससे राजा साहब को देरी न खले । तुमने यह क्या स्वांग रचाया निर्लज्ज ? आग लगे ऐसी सुन्दरता जो घर उजाड़ने के काम आती हो ।

भारमली – (हाथ जोड़कर) देवी उमादे जी ! यह बात नहीं है, मैंने खूब मना किया था लेकिन....

उमादे – लेकिन, इन्होंने तुम्हें जाने नहीं दिया । बलपूर्वक रोक लिया । चुप रह विश्वासघातिनी । तू भाग कर अंदर आ सकती थी ? बोल.... बोल इसका क्या जवाब है तुम्हारे पास ।

भारमली – मैंने सोचा.... रानी साहिबा मैंने सोचा... कि

उमादे – क्या सोचा तुमने ? बोलती क्यों नहीं ।

भारमली – मैंने सोचा कुंवर जी राजा, कही नाराज न हो जायें । इनके मनबहलाव के लिये मुझे आपने भेजा था.. उल्टा नाराज होकर.... मन उदास कर लेते । यों परिस्थिति का ख्याल कर मै न आ सकी ।

उमादे – तुमने राजा जी के तेवर का इतना ध्यान रखा मगर स्त्री होकर एक नारी की सारी संचित भावनाओं, उमंगों का गला घोट दिया । धिक्कार है तुझे और तुझे जन्म देने वाली कोख को । हमारे देश की परम्परायें, संस्कृ ति (छोटे-छोटे देश थे) कितनी ऊंची हैं । ऋषियो, मुनियो की बनायी हुई सारी मर्यादाओं का स्रोत यहां सतत् बहता रहता है । उसी पवित्र प्रवाह में तुमने कीचड़ मिला दिया । युगों-युगों से छली जा रही नारी को

तुमने स्त्री होकर छलने में सहयोग दिया ।

(भारमली सुबकने लगती है ।)

मालदेव – इस पर क्रोध न करो । अब क्रोध को कुछ शान्त करो । हम विनती करते हैं कि कुछ समय के अनुकूल बातें की जायें । आज अपनी सुहाग रात है । हाथों में जो आरती की थाली का भार लिये हो इससे आरती कर के रख दो । कुछ मीठी-मीठी बातें शुरू करो ।

(भारमली जाने को मुड़ती है ।)

उमादे – (इतनी देर से आवेश के कारण थाली की बात भूली हुयी थी, अब याद आ गयी) – अब आरती और चाहिये आपको इस करतब के बाद....

(थाली को धड़ाम् से धरती पर गिरा देती है । भारमली चौंक कर पीछे मुड़ती है । घबरायी हुई थाली की ओर दौड़ती है ।)

उमादे – खबरदार ! जो थाली को हाथ लगाया । तुम यहाँ से जाओ । निकल जाओ इस कमरे से । अब कैसी आरती और कैसी पुष्पमाला से स्वागत ?

(भारमली का प्रस्थान)

मालदेव – रानी क्यों आवेश में सब कुछ ठुकराये जा रही हो ? इतना क्रोध यों व्यर्थ का ठीक नहीं ।

उमादे – आपके लिये यह क्रोध व्यर्थ का होगा । क्योंकि मैंने आपके आमोद-प्रमोद में बाधा डाली है । मुझे थोड़ा रुक कर आना चाहिये था । धिक्कार है आपको जो एक रानी और दासी में भेद न जाना । दोनों को समानता दे दी । आपके लिये दोनों में से जो पहले पहुँची उसे अपना लिया । छीः-छीः यह आपकी भावनाओं का रूप है ? *(गले की व जूड़े की पुष्प मालायें तोड़-तोड़कर इधर-उधर बिखरा दी । मालदेव देखते रह गये ।)*

मालदेव – अरे रे यह आप क्या कर रही हैं ?

उमादे – वही कर रही हूँ जो मुझे करना चाहिए । आपसे बात भी नहीं करनी चाहिए थी लेकिन उससे यह सारा बोझ मेरे सीने पर पड़ा रहता और आपको व इस दासी को क्या पता चलता कि भावनाओं को ठुकराने का परिणाम क्या होता है ?

मेरे यहाँ सैंकड़ों दासियाँ हैं । भिजवा देती हूँ सभी को । उनमें से छांट लीजिये और ले जाइये अपने साथ । मेरा स्थान दासी को दे चुके अब मेरी क्या आवश्यकता है ।

(वह पलट कर द्वार की ओर जाने लगती है । मालदेव लड़खड़ाते हुये उठ कर पीछे दौड़ते है ।)

मालदेव – सुनो ! सुनो ! रानी ऐसा अनर्थ न करो । लोग क्या कहेगे, यहाँ जैसलमेर की स्त्रियाँ क्या कहेंगी ? कुछ आगा-पीछा सोचो । यों निर्णय मत लो ।

उमादे – (व्यंग्य में) – यह बात आपको दासी से आलिंगन करने से पूर्व सोचनी थी । अब कुछ नहीं हो सकता । यह धरती फट जाय तो मैं इसमें समा जाना चाहती हूँ । लोगों के, सखियों के ताने मुझे नहीं सुनने पड़ेंगे क्या ? आप जैसे पति के द्वारा प्रथम रात को ऐसा व्यवहार मुझ से पूर्व शायद ही किसी नारी के साथ हुआ हो ?

मालदेव – नहीं – नहीं ऐसा गजब न करो । मेरी इज्जत व अपने खानदान की मर्यादा का कुछ लिहाज करो ।

(रोकने को आगे बढ़ते है ।)

उमादे – खबरदार ! जो मुझे हाथ लगाया । आपने एक तुच्छ दासी को रानी के समान समझ लिया । मैं पूरी तरह आलिंगन करने का यह भेद जानती

हूँ । अब आप मेरे योग्य नहीं रहे । विवाह केवल सात फेरों का बंधन मात्र नहीं होता है । हमारे देश व समाज में यह दो शरीर एक प्राण करने वाल पवित्र बंधन है, जो सारी भावनाओं को आपस में दूध मिश्री की तरह मिला कर मिठास उत्पन्न करता है ।

मालदेव – अब क्षमा कर दो रानी । मुझ से भूल हुयी ।

उमादे – यह क्षम्य अपराध नहीं है कि बच्चे ने मिट्टी खायी और डॉटने पर उसने हाथ झटक कर कान पकड़ लिये । आपने मेरे हृदय रूपी दर्पण में दरार डाल दी । यह अब जुड़ न सकेगी । आपने घोर अनर्थ कर डाला । मै आपके साथ नहीं जाऊंगी ।

(उमादे का आवेश में प्रस्थान । कन्हैया तुरन्त अंदर आता है ।)

कन्हैया – क्या हुआ अन्नदाता ? रानी साहिबा बहुत आवेश में क्यों कर निकल पड़ी ? इससे पूर्व भारमली सुबकती हुई गयी थी ।

मालदेव – मत पूछ कान्हा, मत पूछ । भारमली प्याला दे रही थी, मैं पी रहा था । नशे मे मेरे हाथ उसके शरीर पर लग गये । ऐसे में उमादे ने आकर देख लिया । बस इतनी सी बात थी जिस पर बेचारी भारमली को गंदगी तक कह डाला । खुद यहाँ बुरा भला कह कर तुनक कर चली गयी ।

कन्हैया – अनर्थ हो गया सरकार । मैंने सुना है रानी जी बहुत गुमानवाली नारी हैं । मान, मर्यादा का पूरा-पूरा ख्याल रखने वाली । वैसे शील-संकोच, मान-मर्यादा ये ही तो नारी के असली आभूषण हैं ।

मालदेव – मेरा हृदय विंध गया है । उपदेश देने की कोशिश मत कर । कन्हैया मुझे अभी सान्त्वना देने की आवश्यकता है । किसी तरह, किसी दासी के द्वारा रानी उमादे को वापिस बुला ला । एक बार बुला दो ।

कन्हैया – भारमली पर ये विजली सी कड़क रही होंगी । दूसरी किसी दासी को

मैं जानता नहीं । अब कुछ नहीं हो सकता । सुबह नये सिरे से बात शुरू करेंगे ।

मालदेव – न चाहते हुये मुझ से यह कैसी अनहोनी भूल हो गयी । समस्त राज्य में टीका टिप्पणी होगी, बदनामी होगी और रानी रूठी वह अलग । तू एक बार जाकर कुछ प्रयत्न कर ।

(कन्हैया गया । मालदेव उदास, घोर निराशा में टहलने लगे । कुछ देर में कन्हैया मुंह लटकाये लौट आया ।)

कन्हैया – सरकार !

मालदेव – क्या हुआ । तेरा मुंह इतना लटका हुआ क्यों है ? कुछ और अनर्थ तो नहीं हो गया । न जाने कैसी घड़ी मे जोधपुर से चले थे सो यह अनर्थ हुआ ।

कन्हैया – गढ़ के राज परिवार की स्त्रियां, दासियां मना-मना कर हार गयीं । वे किसी से कुछ न बोलती हैं । अपना कमरा भीतर से बंद कर रखा है । कहती हैं मुझे सोने दो । कोई मेरे आराम में दखल न देवे । सुबह उठकर बात करूंगी । सभी चिंतित है उनके लिये ।

मालदेव – अरे वे क्रोध में कहीं ऐसी-वैसी बात न कर बैठें । मेरे मुख को कालिख पुत जायेगी यदि ..... यदि कुछ खा-पी कर सो गयी तो । हाय विधाता और क्या-क्या होगा ?

कन्हैया – कुछ न होगा अब । आप चिन्ता न करें । अब सुबह बात करेंगे सरकार । आप सोने की चेष्टा करें, मैं सिर दबा देता हूँ या एक प्याला मदिरा का और प्रस्तुत करूं ?

मालदेव – परे हटा इन सुराही प्यालों को । इस शराब के कारण यह सारा बखेड़ा हुआ ।

(स्वयं हाथ से एक प्याले को परे फेंक देते हैं ।)

कन्हैया – आप क्रोध न करें । मैं शराब व प्याले सब हटा देता हूँ ।

मालदेव – तू जाकर सो रह । अब न सिर दबवाने की जरूरत है न तेरे को मेरे पास रहने की । मुझे अकेला छोड़ दे । भूल मुझ से हुयी है । भुगतना मुझे ही होगा ।

(कन्हैया उदास होकर जाने लगता है ।)

कन्हैया – अच्छा सरकार जैसी आपकी मर्जी । मै चलता हूँ । (राव मालदेव अकेले घूमते रह जाते हैं । गहरे सोच में डूबे हुये बड़बड़ाते हैं ।)

मालदेव – सुबह दास-दासियों से रनिवास का सारा हाल पूछूंगा । सुबह तक वे कुछ कर न बैठें ? नहीं ऐसा नहीं हो सकता । रातभर मे उनका क्रोध शान्त हो जायेगा । सुबह चित्त प्रसन्न रहेगा तब कुछ अवश्य सोचेंगी । इतना क्रोध थोड़े ही रहेगा ।

हम पुरुष है.... और मैं राजा हूँ । हम दस-दस रानियॉ रखते हैं, कई जोधपुर में हैं । सभी राजा लोग रखते आये हैं । सुन्दर-सुन्दर स्त्रियां हमारे रनिवास की शोभा हुआ करती हैं । दास-दासियॉ हमारे मन बहलाव के लिये है । इसमें ऐसी ठेस लगने वाली क्या बात हो गयी ? रानी यदि मुझे आलिंगन में न देखती तब सब कुछ ठीक था ... . देख लिया तो मर्यादा, संस्कृति सब चकनाचूर । वाह रे मानव मन ! सब ऑखों के देखने भर की बात है । पर्दे की ओट सब चलता है । कल वे जरूर मान जायेंगी । नहीं तो मै किसी प्रकार मना लूंगा ।

(कुर्सी पर बैठ कर आँखें मूद लेते है ।) – अब मुझे सोना चाहिये । नींद आये या न आये... किसी तरह यह रात काटनी है ।

एक बार तीर तरकश से निकलने के पश्चात् शिकारी के वश की बात

नहीं रहती कि उस तीर को वापिस मोड़ ले। नदियों के बहाव नहीं रुकते, हवा को विपरीत दिशा में कौन मोड़ पाया है ? वैसे ही इस मानव की भावनाओं को कौन रोक सकता है ?

(धीरे-धीरे पर्दा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

(प्रातः का समय । मालदेव अलसाये, अनमने से बैठे हैं । कन्हैया नाश्ता लाया है ।)

मालदेव – भीतर रनिवास में पता लगाओ क्या मामला है ? सब ठीक-ठाक है न ? जलपान एक ओर रख दो ।

कन्हैया – अन्नदाता ! इस बात की चिन्ता मुझे आप से अधिक बनी हुई है । मैंने नाश्ता लाने वाली दासी से पूछा था ।

मालदेव – क्या कहा उसने ? उमादे कैसी हैं ?

कन्हैया – वे नित्यकर्म से निवृत्त होकर अपने कमरे में जा बैठी हैं । अन्यमनस्क हुई वे कुछ खाने का नाम नहीं लेती ।

(मालदेव बोलने को होते हैं कि गोपाल सिंह का प्रवेश ।)

गोपाल सिंह – खम्मा घणी बहनोई सा ।

मालदेव – (उठकर) खम्मा घणी । पधारिये, पधारिये । कहिये क्या हाल है ?

गोपाल सिंह – सब ठीक है । आपकी व परमपिता की कृपा से सब ठीक है । बहिन उमादे ..... के व्यवहार के लिये मैं आप से क्षमा चाहता हूँ । मैंने सारी घटना सुनी । मुझे बहुत दुःख हुआ ।

मालदेव – क्षमा मुझे आप लोगों से मांगनी चाहिये कि शराब के कारण यह घटना घट गयी । सभी को मेरे कारण नीचा देखना पड़ा ।

गोपाल सिंह – वह दासी है ही सुन्दर और चुलबुली । उमादे की खास मनचाही दासी है । उमादे के मन का लिहाज कर के मौन हूँ वर्ना उस दासी की

खाल खिंचवा देता अब तक ।

मालदेव – ऐसा अनर्थ न करें । उस गरीब का क्या दोष । दोष मेरा है । उसका दोष इतना ही है कि वह... वह बहुत सुन्दर है ।

गोपाल सिंह – हमारी उमादे शुरू से ही बहुत भावुक रही हैं । हमारे राज परिवार में उसका व्यवहार सब से अलग है । वह सभी को पूरा सम्मान देने वाली आदर्श नारी है। इसके कारण उसके कोमल मन को ठेस लगी है ।

मालदेव – मैं सारी बातें समझ गया हूँ । मैं क्षमा भी माँग चुका हूँ । यह कैसी जिद हुई । आपके सामने एक बार फिर माफी मांग लूं । आप मुझ से एक बार उन्हें मिलवाने की व्यवस्था करें । मैं बात करके मनाने की चेष्टा करूंगा ।

गोपाल सिंह – मैं बहिन से बात करके आप तक लाने को राजी करता हूँ । वैसे यह भेंट होगी रात्रि में, ऐसा हमारे यहाँ का रीति-रिवाज है ।

मालदेव – कोई बात नहीं । मै रीति-रिवाज के विरुद्ध जाना नहीं चाहता । रात्रि में भेंट करवा दें । बहला कर, समझा कर, तरकीब से काम लें । किसी भी प्रकार आप भेंट करवा दें ।

गोपाल सिंह – जरुर-जरुर मैं अपनी ओर से भरसक प्रयत्न करूंगा लेकिन स्त्रियों को भगवान् ने दूसरी माटी से बनाया है । वे जो करने की ठान लेती हैं उसे करके ही मानती हैं । उनके हठ करने के बाद भगवान् भी नहीं मना सकता ।

मालदेव – आपके कहने से वे अवश्य मान जायेंगी ऐसा मेरा विश्वास है । बहिन-भाई का रिश्ता ही कुछ अधिक मधुरता लिये होता है । इसकी पवित्रता और आदर अलग होता है ।

गोपाल सिंह – आपने मुझे यह भार सौंपा है, मैं यथा संभव परिवार की शांति व बहिन के भावी जीवन के लिये कुछ अवश्य करूंगा । अच्छा अभी आज्ञा हो ।

(गोपाल सिंह का प्रस्थान । मालदेव देखते रहते हैं, सोचते रहते हैं । कन्हैया कुछ देर में बाहर से भागता हुआ प्रवेश करता है ।)

कन्हैया – अन्नदाता ! गजब हो गया । गजब हो गया ।

मालदेव – (उसकी ओर मुड़कर) अरे क्या गजव हो गया ? कुछ कहो तो सही । मुझे कल रात्रि से लग रहा था कि कुछ होकर रहेगा ।

कन्हैया – यों नहीं सरकार ! रानी उमादे ने सभी के मनाने के वावजूद यह साफ कह दिया है कि मैं जोधपुर नहीं जाऊंगी ।

मालदेव – हा, ऐसा कहा है ? बहुत बुरा हुआ ! मैंने काफी समय पहले से उमादे से विवाह कर जोधपुर के रनिवास की शोभा बढ़ाने का सपना पाल रखा था । आज वह घड़ी आयी तो इस रूप में ।

कन्हैया – उनके माता-पिता तक समझा चुके वे नहीं पिघली ।

मालदेव – क्या हमें खाली हाथ लौटना होगा । जोधपुर की सीमा में क्या मुंह लेकर प्रवेश करेंगे ?

कन्हैया – आप एक बार और मनावें, शायद बात बन जाये किसी तरह । सरकार आप कुछ करें ।

मालदेव – हमारे बराबर के राजाओं को व्यंग्य बाण छोड़ने का अवसर मिल जायेगा । कोई राजा या अमीर-उमराव दूसरे की मांग तक को तलवार के बल पर जीत कर ले जाते हैं । एक हम हैं कि अपनी ब्याहता को विवाह के तुरन्त बाद उसकी जिद के कारण न ले जा सकेंगे । हमारे रनिवास की

दूसरी रानियाँ मन-ही-मन खुश होंगी । ऊपर से चुटकी लेने को मीठी-मीठी बातें करेंगी ।

(द्वार पर आहट हुयी । कन्हैया द्वार तक जाकर वापिस आया ।)

मालदेव – कौन आया है कन्हैया ?

कन्हैया – भोजन के लिये एक सेवक आपकी आज्ञा लेने आया है । आपकी आज्ञा हो तो अभी मंगवा लें अन्यथा बाद में ?

मालदेव – नहीं आज हमें भूख नहीं है ।

कन्हैया – सुबह आपने नाश्ता ठीक से नहीं किया था । अब जितनी रूचि हो भोजन कर लेते सरकार ।

मालदेव – नहीं, नहीं हमें बिल्कुल भूख नहीं है । जब तक उमादे से बातचीत नहीं हो जाती हमारा मन कहीं नहीं लगेगा ।

कन्हैया – (मंच के एक ओर जाकर – स्वगत् कथन) – महाराज के कारण आज हमें भी भूख निकालनी पड़ेगी । देखा जायेगा मौका लगने पर पेट भराई का कोई जुगाड़ करना होगा । रावजी का जीव रानी सहिबा में अटका है । अपना चाकरों का जीव दो रोटी की आस में होता है ।

(पटाक्षेप)

(सांझ घिर आयी है । कन्हैया दीपक जलाता है । रावजी को उदास देखता है तो खुश करने के लिये बात शुरू करता है । कमरा वही है । पर्दा खुलता है ।)

कन्हैया – हम लोग जोधपुर से कैसे आनंद उत्साह में चल कर आये थे और रानी साहिबा के कारण इस खुशी के अवसर पर उदासी का माहौल बन गया । सारा मजा किरकिरा हो गया । रागरंग के स्थान पर क्रोध, मनाना,

समझाना शुरू हो गया ।

मालदेव – अरे किरकिरा क्या यह पूर्व जन्म का कोई ऐसा ही संस्कार था । जाओ तुम भीतर जाओ । किसी दासी के द्वारा हमारा संदेश रानी उमादे तक भिजवाओ कि एक बार रावजी मिल कर हृदय की बात कहना चाहते हैं ।

(कन्हैया जाता है ।)

कन्हैया – (जाते-जाते कहता है) सरकार कहीं रानी जी हम से नाराज न हो जाए ? छोटी सी बात में भारमली की जान आफत में आ अटकी वैसे ही कल को रानी जी के कहने से आप हमें निकाल बाहर कर देंगे तो ?

मालदेव – जा तू जल्दी जा ।

(कन्हैया चला जाता है । राव जी टहल रहे हैं ।)

मालदेव – (स्वगत् कथन) – क्या सच मे उमादे मेरे साथ नहीं चलेगी ? ..... मैं कैसा अभागा हूँ । जिस हीरे को पाने के लिये वर्षो की साध थी उसे पाने के क्षणों में मन पर काबू न पा सका ।

वह भारमली क्रूर नियति का खेल बन कर क्यों मेरे जीवन के इन क्षणों में आयी ? उसने यह सारा खेल बिगाड़ा है दुष्टा ने । अरे उस सुन्दरी के.... बारे में मैं क्या सोच बैठा ? ..... उसे दोष देना व्यर्थ है । .... उसने कहा भी था, हम सेवकों का क्या जब तक आपकी दृष्टि सीधी रहे तब तक सुन्दर हैं और दृष्टि बदली कि असुन्दर हुये । उसके कथन में कितना सत्य था । आज वह उमादे को कितनी कुरूप लग रही होगी और मुझे भी कुछ क्षणों के लिये अभी सुन्दर कहाँ लगी थी । उमादे अपने रूप के कारण इतना गुमान करती है या नारी का अपना अधिकार ही उसे यह सब करने को बाध्य कर रहा है, कौन जाने ?

(गोपाल सिंह का प्रवेश)

स्वयं उमादे कौन सी प्रसन्न रह सकेंगी । विधाता कभी-कभी कैसा क्रूर मजाक कर बैठता है ?

(कुछ देर में एक दासी का प्रवेश । द्वार तक आकर रुक जाती हैं । कन्हैया उसके निकट जाता है ।)

कन्हैया – कहो क्या संदेश लायी हो ?

दासी – रानी उमादे कक्ष में पधारने वाली हैं ।

(दासी लौट जाती हैं । कान्हा मालदेव के पास आता है ।)

कन्हैया – (प्रसन्न होकर) – अन्नदाता रानी साहिबा पधार रही हैं । मैं बाहर जाता हूँ ।

मालदेव – (खालीपन में फीकी हंसी हँसकर) – जाओ कन्हैया । उन्हें आने दो । देखते है कि ऊँट किस करवट बैठता है ?

(कन्हैया चला जाता है । थोड़ी देर में उमादे दासी के साथ प्रवेश करती है । मालदेव खड़े हो जाते हैं ।)

दासी – (झुक कर) खम्मा अन्नदाता, खम्मा । रानी साहिबा पधारी हैं ।

मालदेव – (दासी को हाथ से अभिवादन कर उमादे की ओर मुड़े) – खम्मा रानी जी ।

उमादे – खम्मा घणी । (वह नजर धरती पर गड़ाये रखती हैं ।)

मालदेव – मैं आप से कुछ अरज करना चाहता था इसलिये आपको यहाँ बुला कर तकलीफ दी ।

उमादे – कहिये, अब क्या बाकी रह गया ?

गोपाल सिंह – रावजी मैंने वहिन को मना लिया है ।

मालदेव – सच । वे मान गयी । अब क्रोध का असर नहीं है क्या ? वे साथ चलने को तैयार हैं क्या ।

गोपाल सिंह – मैंने आप से बात करने को राजी किया है । वे पहले साफ मना करती रही । फिर बड़ी कठिनाई से मैंने उन्हें मनाया । अब आप बात करके चलने को मना लेंगें या न मना सकें यह आप के ऊपर है ।

मालदेव – मैं अपनी ओर से पूरा प्रयत्न करके देख लेता हूँ ।

गोपाल सिंह – मैं चलता हूं । वे अभी कुछ देर में आने का कह चुकी हैं ।

मालदेव – जैसे आपकी इच्छा ।

(गोपाल सिंह का प्रस्थान । मालदेव मन ही मन प्रसन्न होते हैं ।)

मालदेव – एक अवसर आया है । इसे व्यर्थ नहीं गंवाना है । मैं पूरी कोशिश करूंगा ।

(स्वगत कथन मालदेव का । कन्हैया का प्रवेश)

कन्हैया – अभी कुछ देर मे उमादे पधारेंगी । आप नम्र बने रहियेगा ।

मालदेव – अच्छा।

(कन्हैया कक्ष की साज सज्जा ठीक करता है । कक्ष के दूसरे कोने पर पहुंच कर उसका स्वगत् कथन)

कन्हैया – देखा जाय जैसलमेर की जन्मी यह रानी साहिबा जोधपुर पधारती हैं या यहीं रहती हैं ? महाराज इस आघात से मानसिक रूप से टूट जायेंगे ।

स्वयं उमादे कौन सी प्रसन्न रह सकेंगी । विधाता कभी-कभी कैसा क्रूर मजाक कर बैठता है ?

(कुछ देर में एक दासी का प्रवेश । द्वार तक आकर रुक जाती है । कन्हैया उसके निकट जाता है ।)

कन्हैया – कहो क्या संदेश लायी हो ?

दासी – रानी उमादे कक्ष में पधारने वाली हैं ।

(दासी लौट जाती हैं । कान्हा मालदेव के पास आता है ।)

कन्हैया – (प्रसन्न होकर) – अन्नदाता रानी साहिबा पधार रही है । मै बाहर जाता हूँ ।

मालदेव – (खालीपन में फीकी हंसी हँसकर) – जाओ कन्हैया । उन्हें आने दो । देखते हैं कि ऊँट किस करवट बैठता है ?

(कन्हैया चला जाता है । थोड़ी देर में उमादे दासी के साथ प्रवेश करती हैं । मालदेव खड़े हो जाते हैं ।)

दासी – (झुक कर) खम्मा अन्नदाता, खम्मा । रानी साहिबा पधारी हैं ।

मालदेव – (दासी को हाथ से अभिवादन कर उमादे की ओर मुड़े) – खम्मा रानी जी ।

उमादे – खम्मा घणी । (वह नजर धरती पर गड़ाये रखती हैं ।)

मालदेव – मैं आप से कुछ अरज करना चाहता था इसलिये आपको यहाँ बुला कर तकलीफ दी ।

उमादे – कहिये, अब क्या बाकी रह गया ?

मालदेव – आप क्रोध शान्त कीजिये और जोधपुर पधारने की तैयारी कीजिये ।

उमादे – मैंने अपना फैसला कल ही सुना दिया था कि मैं आपके साथ जोधपुर नहीं चल सकती, यह मेरी प्रतिज्ञा है ।

मालदेव – कल आप आवेश में थीं इसलिये शान्त चित्त से सोच कर निर्णय आज लें ।

उमादे – कल आवेश में जितना कह चुकी वह पर्याप्त है । शान्त चित्त से कल रात के बाद सोचती हूँ उतनी मन को ठेस अधिक लगती है । आपने मेरे साथ हिंदू रीति से फेरे अवश्य लिये हैं लेकिन अब आपका मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है । आपने रानी की गरिमा को पहचाने बिना दासी के समान ही उसको आंक लिया अब रखिये आप दासियां ।

मालदेव – सुनिये ऐसा जुल्म न करें । मनुष्य से अपराध हो जाता है । जो अपराध स्वीकार कर ले उसे क्षमा कर देना चाहिये ।

उमादे – आपने मेरी वर्षों की साध को एक क्षण में आग में झोंक दिया । यह मेरा अंतिम फैसला है कि मैं आपके साथ नहीं चलूंगी । अब आप से क्या जोधपुर के किसी व्यक्ति से बात नहीं करूंगी यह मेरा पक्का प्रण है ।

मालदेव – सुनिये ऐसा न करें । इससे दोनों ओर के राजघरानों की इज्जत मिट्टी में मिल जायेगी ।

उमादे – ..... (चुप रहती है ।)

मालदेव – आप मुझ से संबंध न रखें चाहे, लेकिन जोधपुर पधार जावे ।

उमादे – ...... (चुप रह कर गर्दन हिलाती है ।)

मालदेव – मैं आपका पति हूँ । एक राजा हूँ । मेरी बात तक नहीं मानती ?

उमादे – .... (चुप रह कर तिरछी नजर से देखती है ।)

मालदेव – कुछ कहिये न । चलिये मेरे साथ ।

उमादे – .... (चुपचाप वहाँ से उठ कर रवाना हो जाती हैं ।)

मालदेव – रुकिये.... मेरी सुनिये..... अरे रुकिये...... कोई इन्हे रोक लो ।

(मालदेव देखता रह जाता है । उमादे धीरे-धीरे रवाना हो जाती हैं । दासी पीछे-पीछे चल देती हैं । पर्दा गिरता है । इस प्रकार एक रानी ने राजा से मुख मोड़ लिया ।)

(पर्दा गिरता है)

द्वितीय अंक

(नेपथ्य से)

मालदेव अपनी लम्बी-चौड़ी, हाथी-घोड़ों की बारात लिये जोधपुर खाली हाथ लौट आये। उमादे तिल भर न हिली। तीन बरस का समय क्षण-क्षण करके बीत गया। मालदेव अनन्य सुन्दरी उमादे को याद कर घुलते रहे। कई प्रकार के विचार मन में आये, योजनायें बनी। रह-रह कर एक विचार आता कि उस दिन भारमली के साथ वह अभद्र व्यवहार न करते तो यह दिन न देखना पड़ता। अब क्या किया जाय ? यह सवाल बार-बार सामने आता। आखिर अपने मित्र व दरबारी बारहठ ईसरदास को रानी के पास, उसे मनाने भेजा

पहला दृश्य

(मालदेव का जोधपुर में दरबार लगा है। एक ओर सेवक व ईसर दास बैठे हैं। पर्दा खुलता है। प्रातः का समय।)

ईसर दास – अन्न दाता ! आपने मुझे याद किया।

मालदेव – हां ईसर दास जी, आपको कष्ट देकर बुलाया है। एक विशेष काम आ पड़ा है।

ईसर दास – आपके हुक्म पर हम असम्भव कार्य का बीड़ा उठाने सहर्ष तैयार रहते आये हैं। आज्ञा दीजिये।

मालदेव – जैसा आपको विदित ही है कि मै रानी उमादे के लिये बहुत बेचैन हूँ। वे आन पर अड़ी हैं कि जोधपर में कदम न रखेंगी। वे मुझ से संबंध न रखें लेकिन एक बार जोधपुर चली आयें इससे मेरा सम्मान बना रहेगा।

ईसर दास – मैं आपके हृदय की व्यथा को भली भांति समझता हूँ। इस सारे

घटना क्रम पर कई बार विचार कर चुका हूँ। काफी गम्भीरता से सोचने के पश्चात् भी कोई हल न निकाल पाया। आखिर रानी साहिबा को मनाना अति आवश्यक है।

मालदेव – आपने ठीक फरमाया। यही वह पीड़ा है जिसके लिये मैंने आपको कष्ट दिया है। आप एक बार जैसलमेर की यात्रा कर आवें।

ईसर दास – मैं सौ बार जा सकता हूँ यदि आपका कार्य होता हो तो। आपने समय-समप पर संदेश भेजे उनका कोई परिणाम नहीं निकला। जैसलमेर के राजा स्वयं इस व्यथा से व्यथित होंगे। आप से यह ऐसी भूल हुयी है जिसका आसानी से निराकरण करना असम्भव लगता है।

मालदेव – आप कोई उपाय करिये। मैं इस बारे में सोच-सोच कर थक गया हूँ। पूरी तरह राज काज में मन नहीं लगता। हर क्षण यही चिन्ता सताये जा रही है कि लोग मेरे बारे में क्यो सोचते होंगे कि ऐसे प्रतापी राजा की रानी जोधपुर में नहीं आ रही ? यह कैसा राजा है जिसका वश पत्नी पर नहीं चलता।

ईसरदास – आपका सोचना उचित है। इस मुसीबत से छुटकारा पाने का प्रयास करना होगा।

मालदेव – आप एक बार राजा व उनकी पुत्री उमादे से भेंट कर के प्रयास कीजिये।

ईसरदास – मुझे लगता नहीं कि वे आसानी से मान जायेंगी। फिर भी मैं जाऊँगा।

मालदेव – (प्रसन्न होकर) बात बन जायेगी ऐसा मेरा विश्वास है। आपके पहुँचने से असंभव कार्य संभव हो जाते है।

कन्हैया – महाराज की जय हो! देखिये महाराज अब ईसर दास जी मान गये

हैं अब कार्य होने में कोई विलम्ब न होगा ।

मालदेव – अच्छा !

कन्हैया – मैंने आपको दो-तीन बार पहले भी अरज की थी कि हुजूर ईसरदास जी को वहाँ भेजें । आपने हमेशा मेरी बात को महत्व न देकर टालते रहे । अब आपके अपने विचारों में यह बात अपने आप आई है ।

मालदेव – मैं संकोचवश इन्हें तकलीफ न देना चाहता था । अब इनकी जैसलमेर यात्रा का प्रवंध अतिशीघ्र किया जाय ।

कन्हैया – जो आज्ञा हो महाराज ।

(कहकर चला जाता है ।)

मालदेव – आप वहाँ अधिक समय न रुक जायें कहीं । वहाँ राजा साहब खूब आवभगत करते हैं । जाने वालों को हफ्तों क्या महिनों तक नहीं हिलने देते ।

ईसर दास – मैं वहाँ घर नहीं बसाऊंगा और मेहमान को एक दिन हिलना होता है ।

मालदेव – अब आगे की बात आप जानें ।

(पटाक्षेप)

दूसरा दृश्य

(जैसलमेर में ईसरदास पहुँच चुके हैं । जैसलमेर के रावल लूण करण का दरवार । रावल लूण करण अपनी पुत्री उमादे के प्रण के कारण स्वयं खूब दुखी है । प्रातः का समय । पर्दा खुलता है ।

अकेले रावल लूण करण घूम रहे हैं । एक सेवक आकर खबर देता है कि जोधपर से एक मेहमान पधारे हैं ।)

सेवक – पृथ्वीनाथ ! जोधपुर से एक मेहमान पधारे हैं । आप के दर्शन करना चाहते हैं ।

रावल – उन्हें ससम्मान ले आओ ।

(सेवक वहाँ से चला जाता है ।)

रावल – (स्वगत् कथन) – अब तक जोधपुर से ऊंट सवार के द्वारा संदेश आया करते थे । इस वार कोई मेहमान पधारे है । उनका क्या दोष, जब बेटी उमादे मानने को तैयार नहीं । मालदेव जी ने अपनी ओर से अनुनय-विनय करने में कोई कसर न रखी । आखिर यह मानती ही नहीं ।

(सेवक का प्रवेश । ईसर दास जी पीछे-पीछे आते हैं ।)

ईसर दास – अन्नदाना, पृथ्वीनाथ घणी खम्मा ! मालदेव जी ने खम्मा घणी अरज करवायी है । मैं वारहठ ईसर दास हूँ ।

रावल – खम्मा वारहठ जी खम्मा । आज आप भले पधारे । आज का सूरज भला उदय हुआ जो आपके दर्शन हुये हैं ।

ईसरदास – पृथ्वीनाथ दर्शन आपके हुये हैं । सेवक को आप जब याद करेंगे

सेवा में हाजिर मिलेगा । यह पत्र आपको राव मालदेव जी ने भिजवाया है ।

(ईसरदास उन्हें पत्र सौंपते हैं । रावल लूणकरण पत्र पढ़कर आश्चर्य चकित होते हैं ।)

रावल – ओ हो ! तो आप भक्त ईसर दास जी हैं । वाह बारहठ जी महाराज आज खूब कृपा की जो इस भूमि को पवित्र कर दिया । जोधपुर के कैसे हाल हैं ? राव मालदेव जी का राजकाज अच्छा चल रहा होगा ?

ईसरदास – पृथ्वीनाथ ! आपकी कृपा से जोधपुर की प्रजा प्रसन्न है और आपकी दया से राज्य का सारा कार्य पूर्णरूप से व्यवस्थित व सुन्दर ढंग से चल रहा है । किसी प्रकार का कोई व्यवधान नहीं है केवल एक मात्र । ......

रावल – एक मात्र क्या ?

ईसर दास – एक मात्र चिन्ता मालदेव जी को रानी उमादे के बारे में रहती है । इससे उनके सारे कार्य में शिथिलता आती जा रही है । इसका कुछ उपाय करिये महाराजाधिराज !

रावल – (रूआंसा होकर) मैं क्या करूं ? मेरे हाथ में पुत्री का अच्छे वंश व बड़े राज्य के राजा के साथ विवाह करना था सो मैने कर दिया । अब यह छोटी सी बात को पकड़े बैठी है । होने को वह बहुत बड़ी बात है लेकिन नारी को अपने भाग्य को पुरुष के साथ जोड़ कर परिस्थिति को आंकना चाहिये ।

ईसरदास – आप जैसे प्रतापी व विद्वान राजा की पुत्री क़ो अब उस छोटी भूल को क्षमा कर देना चाहिये ।

रावल – मैं सभी प्रकार से समझा कर हार गया लेकिन मेरी राजकुमारी का दिल नहीं पसीजा । वह अपनी आन पर ज्यों की त्यों अड़ी है । किसी से न ज्यादा बोलती है न पहले सी प्रसन्न दिखायी देती है । एक संन्यासिनी क्या यों कहिये एक बंधक का सा जीवन व्यतीत कर रही है ।

ईसरदास – मैं एक बार मना कर देखता हूँ ।

रावल – अवश्य । शायद आप की बात हृदय में प्रवेश कर जाय ।

ईसरदास – मानव के हाथ में प्रयत्न करना होता है । मैं प्रयत्न कर के देख लूं आखिर इतनी लम्बी यात्रा करने के बाद आप तक आया हूँ ।

रावल – आप दूर से पधारे हैं इसलिये एक निवेदन और करना चाहता हूँ । आप से यदि उमादे बात तक न करे, बिल्कुल मौन साधे रहे तब आप छोटी बालक जान कर क्षमा कर देवें । बिल्कुल बुरा न माने । उसकी तरफ से मैं पहले से क्षमा मांग लेता हूँ ।

ईसर दास – आप किंचित् मात्र यह अपराधबोध वाला भाव न लावें । मैं अवश्य बात करने के लिये मनवा लूंगा । आखिर मैं इतना बुजुर्ग हूँ उसका लिहाज तो वे करेंगी ही । मैंने किसी प्रकार उनका दिल नहीं दुखाया है ।

रावल – पहले आप जलपान कर लें फिर कुछ विश्राम कर लें । सायं यहां के एक-दो दर्शनीय स्थानों को देख आवें । फिर उमादे को आपके सामने प्रस्तुत कर दूंगा । आगे आप जानें । कैसे क्या होगा ?

ईसरदास – आपकी कृपा से सब ठीक हो जायेगा । आप निश्चिन्त रहें ।

(रावल का प्रस्थान । एक सेवक का जलपान लेकर प्रवेश ।)

सेवक – लीजिये महाराज जलपान कर लें ।

ईसरदास – इसे रख कर पहले हाथ धुलाओ (हाथ-पैर धोकर) अब जलपान कर लेते हैं । तुम्हारा नाम क्या है ?

सेवक – राम सुख है ।

ईसर दास – अच्छा नाम है । कुछ ईश्वर का भजन करते हो क्या ?

सेवक – नहीं महाराज ! वैसे ही थोड़ी आस्था जरूर है ।

ईसरदास – समय मिले तब ईश्वर का स्मरण जरूर करते रहा करो । नाम स्मरण की बड़ी महिमा है । एक बात बताओ, तुम हमें नगर घुमा दोगे ?

सेवक – क्यों नहीं महाराज । यह मेरा सौभाग्य है । आप हमारे मेहम्मन हैं । मेहमान भगवान् होता है । आप जब तक चाहें नगर घुमाता रहूँगा ।

(ईसरदास जी जलपान करते हैं । सेवक हाथ धुलाता है । बर्तन रखने जाता है फिर लौट कर आता है ।)

सेवक – महाराज पधारिये । मैंने बड़े सरकार से पूछ लिया है ।

(दोनो रवाना हो जाते हैं । पटाक्षेप)

तीसरा दृश्य

(शाम का समय । उमादे मुख फेर कर बैठी है । दासी पास खड़ी है । पर्दा खुलता है । पुनः ईसरदास का प्रवेश ।)

ईसरदास – खम्मा राजकुंवरी जी ।

उमादे – ...... (चुप रहती है ।)

दासी – (ईसरदास के चरण स्पर्श करती है) – राजकुंवरी जी की ओर से अभिवादन स्वीकार करें महाराज !

उमादे – ...... (चुप)

ईसरदास – आप जोधपुर क्यों नहीं पधारी ?

उमादे – ...... (चुप)

ईसरदास – अब तक आप राव मालदेव जी पर क्रोधित हैं ?

उमादे – .... (चुप)

ईसरदास – आप जीवन पर्यन्त यहीं रहेंगी क्या ? पिता के घर पुत्री का जीवन भर रहना शोभा नहीं देता ।

उमादे – .... (चुप)

ईसरदास – पति चाहे गरीब हो अमीर हो, उसी का घर स्त्री के लिए असली ठौर-ठिकाना है । आपने समय विशेष में आन-बान के कारण प्रण कर लिया होगा , अब हठ न कीजिये । पधारिये, मैं लिवाने आया हूँ । रावजी स्वयं आपको लेने यहां आते मगर आपके प्रण के कारण उन्हें थोड़ा संकोच रहा । अब आप चलेंगी न ?

उमादे – ...... (मौन रहती है)

दासी – (उमादे से) ये पिता तुल्य हैं। ईश्वर भक्त व पूज्य हैं । इनके लिये हम सभी समान हैं । मालदेव जी ने एक समय विशेष में दुर्व्यवहार किया और आपने पूरी मारवाड़ के लोगों से न बोलने का प्रण कर लिया । ऐसा वर्ताव उचित नहीं । अब आपके मन में क्या विचार हैं वे बताइये । कुछ पता तो चले ।

उमादे – .... (मौन)

ईसरदास – इसका मतलब आप मुझ वृद्ध से नहीं बोलेंगी । मैं इतनी दूरी से एक आश लेकर आया था कि आपको मना कर ले जाऊंगा मगर आप अटल रहेंगी । इतना हठ भगवान् स्वयं नहीं करते । चाहे आप मेरे साथ न चलें केवल अपने हृदय के भाव प्रकट कर दें जिससे मुझे संतोष हो जायेगा ।

उमादे – .... (वही मौन)

ईसरदास – (धर्यवान होते हुये झुंझला उठे । ललाट पर हाथ रखा) । मेरी आखिरी बात है जिसे आप ध्यान से सुन लीजिये । अब मैं भी एक क्षण यहां नहीं रूकना चाहता ।

दासी – आप क्रोधित न हों । आप जैसे तपस्वी बुजुर्ग की अनुकम्पा बनी रहनी आवश्यक है । आप हुक्म करें ।

ईसरदास – मुझे रानी से अब आखिरी बात कह लेने दो । हे रानी उमादे मुझे आश्चर्य इस बात पर हो रहा है कि यह वही जैसलमेर की धरती है जहाँ आपके पूर्वज रावल दुर्जन साल जी का कटा सिर बारहठ हूंपाजी द्वारा जोश दिलाने पर भरी सभा में बोल उठा था और उनकी बात सब के सामने बनी रह गयी । एक आप है जो सौ टका जीवित होने पर भी मेरे द्वारा इतना गला फाड़ने पर नहीं बोल रही । क्या जैसलमेर की धरती को,

सांप सूंघ गया है जो एक वृद्ध द्वारा इतनी मिन्नतें करने पर एक राजकुंवरी मौन साधे बैठी हैं ? जीवित भी लोथ क्यों बनी बैठी हैं ? मुंह के ताले क्यों पड़े हैं ? क्या प्राण नहीं रहे ?

उमादे – नहीं यह बात नहीं है कि मैं बोल नहीं सकती ? मैं खूब बोलना जानती हूँ ? आये हुये मेहमानों का आदर करना जानती हूँ । वास्तव में मुझे जोधपुर के नाम से नफरत हो गयी । आपने मेरा प्रण तुड़वा ही दिया ।

ईसरदास – आप बोल उठी यह क्या कम बात है । मुझ वृद्ध की इज्जत रह गयी । देखिये समय सदा एक जैसा नहीं रहता राजकुंवरी जी ? समय एक आती-जाती छाया है । आज कुछ और कल कुछ ?

उमादे – मैं जानती हूँ । (दासी से) बारहठ जी महाराज को जलपान लाकर प्रस्तुत करो ।

ईसरदास – आपके पिता श्री खूब आवभगत करने वाले है । जलपान आदि से अच्छी खातिर हो चुकी है ।

(दासी उठती है लेकिन बारहठ ईसरदास पूरी तरह मना कर देते है)

उमादे- – (कुछ आश्वस्त होकर) आप मेरा दोष बताइये ?

ईसर- – इसमें दोष किसी का नहीं है राजकुंवरी ? यह समय का फेर है । विधाता के लेख ही उल्टे है । वह हवा ही ऐसी थी कि उसमें यह गड़बड़ी हो गयी । होनी को कौन टाल सकता है । मालदेव जी कौन से खुश हैं ? वे इन तीन वर्षो में एक पश्चाताप का जीवन जी रहे हैं । एक-२ क्षण को शापित मनुष्य की तरह जिया है ।

उमादे – वे रानी के आगमन के क्षणों में एक दासी को स्वीकार कर चुके ऐसे राजा हैं ?

ईसरदास – ऐसा नहीं है । जब विपरीत समय आता है मन के भाव अपने आप बदल जाते हैं । मन के भावों के अनुसार मनुष्य सारा कार्य करता है । इसलिये उस बदले हुये समय में वह अच्छा करना चाहे फिर भी कर नहीं सकता । अब आप क्रोध त्याग ही चुकी हैं । अपनी ससुराल पधारें ।

उमादे – मैं आपके सद्व्यवहार, न्यायोचित बात कहने के ढंग व दैदिप्यमान मुख मण्डल से झरते तप के आगे नत मस्तक हूँ । इसीलिये मैं भीतर से अपने आपको आपके सम्मुख बहुत छोटा पाकर व आपके द्वारा चुभती बात कहने पर प्रण भूल कर बोलने लगी ।

ईसरदास – मैं मालदेव जी महाराज का एक सेवक मात्र हूँ । उनकी आज्ञा से यहाँ आया हूँ । मैं यह भली भाँति जानता हूँ कि महाराज आपको दिल से बहुत चाहते हैं । वे आपको महारानी बनाना चाहते हैं । वर्षों से आपके साथ विवाह करने का सोचते-२ यह अवसर आया था और काल के क्रूर थपेड़ों ने उन सुखद क्षणों को बर्बरता से डस लिया ।

उमादे – (निःश्वास छोड़ती है) लेकिन महाराज मैंने उनके व्यवहार के कारण प्रण कर लिया है कि जोधपुर में पैर न रखूंगी । वर्षों से नारी को यों ही ठुकराया जाता रहा है । मैं उन्हें सबक सिखाने के लिए ऐसा कर बैठी । आखिर नारी को एक भोग की वस्तु मात्र ही क्यों मान लिया जाता है । क्या इससे अधिक वह कुछ नहीं है ।

ईसरदास – वह बहुत कुछ है । नारी को महान् माना गया है । आप व्यर्थ में सारी बातें उल्टे सिरे से सोचने लगी हैं । भला यह सोचिये कि एक ब्याहता *को उसका पति न ले जावे तब समाज में उसकी कितनी टीका टिप्पणी* होती है । वह नारी संकोच के कारण समाज में फिर स्वच्छंदता से घूम फिर नहीं सकती । आपने स्वयं रावजी व उनके राज्य को त्यागा है ऐसे में उनकी कितनी बड़ी बेइज्जती हुई है, साथ ही आपकी भी ।

उमादे – अब जो कुछ होना था वह हो चुका । वे क्षण याद आते हैं तब देह

में अंगारे उठने लगते हैं ।

ईसरदास – एक देवता भी अपनी पुत्री को अपने यहां नहीं रख सकता । स्वयंवर की रस्म करके उसे योग्य वर के साथ कर दिया जाता रहा है । एक समर्थ पिता के घर पुत्री का जीवन-यापन करना पुत्री के साथ-२ पिता के लिए भी कलंक का विषय होता है । समाज में टीका टिप्पणी होती है । लोग बिना जाने व सोचे समझे, चरित्र तक पर अंगुली उठाते हैं । आप यह कैसे चाहेंगी कि आपके देवतुल्य पिताश्री को इस घटना के कारण दुःखी रहना पड़े, उनके सम्मान को ठेस लगे ।

उमादे – मेरे पिताश्री मुझे कह कर, समझा कर हार गये । जो होना था सो हो गया । अब मैं यहीं रहूँगी या अपनी देह त्याग दूँगी । वहाँ नही जाऊंगी ।

ईसरदास – राजकुंवरी जी आत्मघात से बड़ा पाप दूसरा नहीं होता । वह कार्य आप भूल कर न करना । इससे इस लोक के साथ-२ परलोक भी बिगड़ जाता है । आत्मघाती को नर्क में भी ठौर नहीं मिलती । आपने उच्च घराने में ऊंचे कुल में जन्म लिया । आपके पिताश्री के पास वैभव, राज-पाट, किसी वस्तु की कमी नहीं और इसके अनुकूल आपको ससुराल मिल गया । अब इस दोनों ओर के सेतु को मिलाने वाला नारी का जो पुनीत कार्य है वह करिये ।

उमादे – मैं उनके पास हर्गिज नहीं जाऊंगी ।

ईसरदास – विवाह के पश्चात् कन्या का घर पति के यहाँ होता है । उसका कर्त्तव्य व दायित्त्व बढ़ जाता है । पिता के घर की चिन्ता के साथ-२ उसे अपने घर की सारी व्यवस्था संभालनी होती है । जिसमें आपकी तरह राजा की रानी बनने वाली राजकुंवरी का कार्य क्षेत्र बहुत बढ़ जाता है । उसे अपने भले-बुरे के साथ-२ प्रजा की भलाई की बात पहले सोचनी पड़ती है । आपके आगमन के साथ-२ आपके रूप-गुणों का सुनकर वहाँ की प्रजा आनंदित हो रही थी । आप उन सभी की कोमल भावनाओं को ठुकरा

देंगी । आपकी भावना को ठेस लगने से आप कितनी व्यथित हैं ? अब आप हजारों नर-नारियों की भावनाओं को ठुकरा देंगी क्या ? आप अपनी सूझ-बूझ से शासन के संचालन में सहयोग दें । यही उचित है ।

उमादे – नहीं, नहीं मैं अपना प्रण पूरा करूंगी । ये सारी बातें क्या रावजी को नहीं सोचनी चाहिए थी ?

ईसरदास – जब राजा अपने कर्त्तव्य पथ से विचलित होता है तब प्रजा उसे संकेत देती हैं लेकिन रानी उसे पग-२ पर राजकाज में पूरा-२ सहयोग देती है जितना कोई भी मंत्री शायद न दे सके ।

उमादे – (झुंझला कर) मैं जोधपुर किसी भी हालत में नहीं चल सकती । आप मुझे व्यर्थ में तंग न करें ।

ईसरदास – आपको जोधपुर चलने का कौन कह रहा है ?मैं स्वयं आपकी मान-मर्यादा को भली-भांति जानता हूँ । आप मालदेव जी के राज्य के एक दूसरे अच्छे नगर अजमेर के किले में निवास करें । वहाँ की सारी व्यवस्था संभालें । अपने कुशल नेतृत्व से समाज का भला करें । प्रजा भी संतुष्ट रहेगी और आपकी प्रतिज्ञा भंग नहीं होगी ।

उमादे – नहीं, इससे जीवन भर मुझे रावजी के आगे नत मस्तक रहना होगा । वे कहेंगे कि मेरे साथ विवाह मे आयी नहीं बाद में प्रण तोड़ कर अपने आप आ गयी । मुझे मेरा प्रण अपने प्राणों से प्रिय है ।

ईसरदास – मैं जानता हूँ अब आपको प्रतिज्ञा भंग होने का डर कचोट रहा है । रावजी की ओर से निश्चिन्त रहे । उन्हें आपको वहाँ देख कर हार्दिक प्रसन्नता होगी । उनके मन की साध पूरी हो जायेगी और आपका प्रण बना रहेगा और प्रजाजनों को कुछ कहने का अवसर न मिलेगा ।

उमादे – (रूंआसी हो आयी) मैं आवेश में क्या-२ कर बैठी । पति को ठुकराया

अपने माता-पिता व अन्य स्वजनों की बातों की अवहेलना की । हाय ! मुझे जन्म लेते समय मौत ने शरण क्यों न दी ?

ईसरदास – आप अपनी हेठी होने का भाव तनिक भी चित्त में न लावें । अपने शास्त्रों में उल्लेख है कि यदि मुसीबत के समय स्त्री अपनी सारी भावनाओं को तिलांजली देकर पति को सहयोग व सहारा देती है यह उसके लिये सब से बड़ा धर्म है । आप यहां से अकेली नहीं जा रही हैं । मै मालदेव जी के द्वारा भेजा हुआ सेवक लिवाने आया हूँ । वे स्वयं संकोचवश नहीं आये । अब जोधपुर संदेश भेजकर रथ-पालकी व सरदारों को बुला लेते हैं । अपने यहां से चलेंगे व जब जोधपुर राज्य की सीमा आयेगी वहाँ कई लोग अपनी अगुवानी कर के ससम्मान आपको ले जायेंगे । आप अब मना न करें ।

उमादे – मान न रहने पर मनुष्य का जीना व्यर्थ है । इसलिये मैं नहीं चल सकती । महाराज मालदेव से क्षमा मांग लीजिये ।

ईसरदास – रानी साहिबा जरा विचार करें जो मनुष्य स्वयं के लिये जीता रहे, यह उसका जीना व्यर्थ है । दूसरी बात जब कोई मांगने आये व उसे ठुकरा दिया जाये यह भी मनुष्य मात्र के लिए मरने की बात है । बोली आप ऐसा जीवन चाहती हैं क्या जो मृत्यु के समान हो बल्कि आप उन महापुरूषों की संतान हैं जो मर कर भी अमर हैं । बोलिये अब कब चलना है ?आपको चलना पड़ेगा । आपके गये बिना मैं भी यहां से नहीं जाऊंगा ।

उमादे – (निरूत्तर हो गयी) मैं क्या करूँ ?

ईसरदास – आप अब पधारने की तैयारी करें ।

उमादे – (खड़ी हो गयी) अच्छा जैसी आपकी, मालदेव जी की व प्रजा की इच्छा । मैं चलती हूँ मगर रावजी से कहिये कि मुझ से मिलने की चेष्टा अजमेर आकर नहीं करेंगे ।

ईसरदास – ऐसा ही होगा ।

(पटापेक्ष)

तीसरा अंक

(रानी उमादे अजमेर सकुशल पहुँच गयी है । वहाँ किले में सुखपूर्वक निवास करने लगी है । कभी-२ वहाँ राव माल्देव का संदेश आ जाया करता है । रानी ने कभी जोधपुर जाने की बात नहीं सोची और न कभी गयी । काफी समय बीत गया ।)

पहला दृश्य

(उमादे अजमेर के दरबार कक्ष में घूम रही है । दासी चम्पा साथ में है । प्रातः का समय । युद्ध के बारे में बातचीत हो रही है । पर्दा खुलता है ।)

उमादे – सुना है शेरशाह का आक्रमण अपनी रियासत से कुछ दूरी पर होने लगा है । इस खतरे के समय पूरी तरह सतर्क रहना होगा।

चम्पा – हां रानी साहिबा ! लेकिन आप बड़ी व्यवहार कुशल हैं । किले की सारी व्यवस्था सुचारू रूप से संभाल रखी है । कहीं कोई गड़बड़ी होने की संभावना नहीं है ।

उमादे – मुसीबत पहाड़ बन कर टूट पड़ती है । जब वह आती है पता नहीं चलता कि कब किधर से आ जाए और अपना चौड़ा-जबड़ा फैला दे । हमें सुरक्षा व सावधानी का हर संभव प्रयास सतत् करते रहना चाहिए । अपनी रियासत के गांवों में कल ही यह कहलवा भेजो कि सतर्क रहें । दुश्मन आसपास मंडरा रहा है । किसी भी समय हमला हो सकता है ।

चम्पा – सुना है रानी साहिबा, कि शेरशाह बहुत दल बल के साथ आया है । जिधर से निकलता है मार्ग में आये गांवों, रियासतों पर कब्जा कर लेता है । जिन पर कब्जा करता है वह सेना उसे और मिल जाती है इस प्रकार उसकी ताकत दिन दूनी-रात चौगुनी बाढ़ के पानी सी बढ़ रही है ।

उमादे – किले के आसपास के पहरेदारों को विशेष रूप से सचेत रहने को कहना है । कहीं शत्रु पक्ष का कोई भेदिया टोह लेने को घूम रहा हो, इस बात का पूरा-२ ध्यान रखना होगा । हर नवागन्तुक से पूरी छानबीन किये बिना उसे स्वतंत्र नहीं घूमने देना है । गुप्तचर दल को आसपास की सीमा पर रहना है ।

(नेपथ्य से आवाज आती है कि जोधपुर से विशेष दूत संदेश लेकर आया है)

उमादे – यहां मेरे पास भिजवा दो ।

(दूत का प्रवेश)

दूत – खम्भा घणी रानी साहिबा ।

उमादे – (हाथ से अभिवादन, अभय देने जैसा) जोधपुर में सब ठीक है न ?

दूत – राव मालदेव जी ने अपनी कुशलता के समाचार भेजे हैं और आपकी कुशलक्षेम पूछी है ।

उमादे- यहां की कुशलता के समाचार रावजी से अरज कर देना । उन्हें यह भी कह देना कि अजमेर की व्यर्थ में चिन्ता न करें । शेरशाह की जोधपुर पर आंख है । वहां के लिए विशेष सतर्क रहें ।

दूत – रानी साहिबा ! रावजी ने अरज करवायी है कि इस अवसर पर आप जोधपुर पधारें । यहां अजमेर पर कभी भी हमला हो सकता है । ऐसी विकट परिस्थिति में आपको संकट से घिरे नहीं रहने देना चाहते ।

उमादे – यह कैसे सम्भव है कि मुझे खतरों से दूर कर के राव जी स्वयं खतरों से घिर जायें ।

दूत – उनकी आप ज्यादा परवाह न करे । उनके पास शूरवीरों की कमी नहीं

है और रावजी स्वयं कुशल योद्धा हैं । आप व्यर्थ में अपने प्राण संकट में न डालें । हर क्षण उन्हें आपकी चिन्ता लगी रहती है ।

उमादे – उन्हें संकट के समय प्रजा की चिन्ता रखनी चाहिए । संकट के समय साधारण जनता व रानी में कैसा भेद ?

दूत – भेद कैसे न हो ? आपने पूरे किले की बागडोर संभाल रखी है । यह कार्य साधारण नागरिक नहीं कर सकता ।

उमादे – अवसर आदमी को बहुत कुछ सिखा देता है ।

दूत – मुझे क्या आज्ञा है ? मैं अभी वापिस लौटना चाहता हूँ । आपका मन्तव्य जान कर यथा शीघ्र मुझे लौटने की आज्ञा जोधपुर से मिली है । मैं वहाँ जाकर क्या अरज करूँ ।

उमादे – मैं यहीं ठीक हूँ । युद्ध के समय अब किला छोड़ने पर लोग क्या कहेंगे कि रानी ने डर के मारे जोधपुर जाकर शरण ले ली । यह मेरी परीक्षा की घड़ी है । मैं यहीं रहकर इस धरती माता की सेवा करना चाहती हूँ । जब सहायता की आवश्यकता होगी संदेश भिजवा दूँगी ।

दूत – ऐसा जाकर उन्हें अरज कर दूँ ?

उमादे – अवश्य । और यह भी कि रावजी अपनी पूरी हिफाजत रखें । रावजी सुरक्षित रहेंगे तब हम जैसे सेवक, सैनिक फिर जुट जायेंगे । हमेशा हमारा झंडा ऊंचा रहेगा । राजा के पीछे प्रजा होती है ।

दूत – जैसी आपकी आज्ञा । मैं अब विदा चाहता हूँ ।

उमादे – (दासी से) इसे साथ के लिए भोजन आदि की व्यवस्था व भेंट देकर भिजवा दो ।

(दूत व दासी का प्रस्थान)

उमादे – (स्वगत् कथन) - चारों ओर युद्ध का वातावरण, अब मेरी परीक्षा की घड़ी आ चुकी है। बचपन से मैं हर वस्तु को व्यवस्थित रखती व देखती आयी हूँ। अब देखना है कि मेरी व्यवस्था कैसी रहती है ? मुझे निरंतर कार्य में जुटे रहना होगा।

(धीरे-धीरे पटापेक्ष होता है)

दूसरा दृश्य

(जोधपुर में राव मालदेव का दरबार । पर्दा खुलता है । रावजी टहल रहे हैं । एक सेवक पास में है)

मालदेव – चारों ओर दुश्मन के हमलों के समाचार मिल रहे हैं । यह कैसा अशान्त समय आ गया है ? पहले रानी उमादे विवाह के पश्चात जैसलमेर ही रही । अब इधर आयी है तब से अशान्ति और युद्धों के बादल मंडरा रहे हैं । सामान्य जनजीवन डावां-डोल हो गया है शांति छिन गयी है ।

सेवक – आप हर क्षण प्रजा के बारे में चिंतित रहते हैं । इससे आपके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है ।

मालदेव – चिंता न करूँ तो क्या करूँ ? अपने राज्य की सीमा क्षेत्र पर दुश्मन आ लगा है । पुराने पड़ोसी दुश्मनों ने बाहर से आये दुश्मन का साथ देना शुरू कर रखा है । रियासत में एक-दो जगह उपद्रव के मामले सामने आये हैं ।

(द्वार पर एक सेवक आकर बोलता है जो नेपथ्य से सुनायी देता है) - खम्मा घणी अन्नदाता ! ईसरदास जी पधारे हैं ।

मालदेव – उन्हें ससम्मान यहां ले आओ ।

(सेवक बाहर की ओर जाता है । ईसरदास जी का प्रवेश)

ईसरदास – खम्माघणी, सरकार, महाराजाधिराज !

मालदेव – (हाथ से अभिवादन) - ओ हो पधारिये ईसरदास जी, आप सही वक्त पर आये हैं ।

ईसरदास – संसार का हर प्राणी सही वक्त पर आता है । जो हमारे अनुकूल न हो, उसे गलत समय पर मान लेते हैं ।

मालदेव – मैं वर्तमान परिस्थितियों की भंवर में उलझा अपने आप को अकेला समझ रहा था । चिंता प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि का हरण पहले कर लेती है बाकी नुकसान बाद में अपने आप हो जाता है ।

ईसरदास – आप जैसे योग्य शासक इस प्रकार चिंतातुर रहेंगे फिर अन्य सामन्तों की क्या गति होगी ?

मालदेव – मैं स्वयं को काफी निर्भय व शान्त रखने की चेष्टा करता हूँ लेकिन जगह-२ उठ खड़े हुये विवादों, बाहरी शत्रु की गति विधियों से उलझा हूँ, साथ ही रानी उमादे की चिन्ता बराबर बनी है ।

ईसरदास – आपको ऐसा सोचना उचित है लेकिन रानी उमादे अजमेर में पूर्ण सुरक्षित है वहां की कैसी चिन्ता ?

मालदेव – चिन्ता कैसे नहीं हो महाराज ? उमादे अजमेर में अकेली है । वे जोधपुर आने के लिए तैयार नहीं होती ? मैं उन्हें लिवाने स्वयं किस मुंह से जाऊं ? आचरण में एक बार लगी लपट ने भावी जीवन के दाम्पत्य सम्बन्धों की लहलहाती खेती को खाक में बदल दिया है । इस अपराध बोध से लगता है मैं इस जीवन में नहीं उबर सकूंगा ।

ईसरदास – आप बड़े भावुक है महाराज ! उमादे अब अजमेर आकर सुखपूर्वक रहने लगी हैं । मुझे लगता है कि सब कुछ सामान्य हो गया है । वे राजकाज कुशलता से देखती है । आपके लिए पवित्रता की धारा उनके हृदय में फिर से बहने लगी है । आप राजा हैं, राजकाज की ओर अधिक ध्यान दें ।

मालदेव – राजकाज की चिन्ता ही इन दिनों अधिक है लेकिन महाराज मानव हृदय में एक बार संशय का सांप पनप जायें वह सहज ही [illegible] ।

खैर ! रानी प्रण को थोड़ा तोड़ कर यहां आ गयी । मैंने सेवक को रानी उमादे का मन्तव्य जानने को भेजा है । वहां से सेवक के लौटने पर चाहे जो स्थिति हो आपको एक बार अजमेर जाना होगा । उमादे के यहां आने से किले की व्यवस्था के बारे में मैं निर्भय हो जाऊंगा । मुझे लगता है आपके अजमेर गये बिना वे जोधपुर के किले में कदम न रखेंगी ।

ईसरदास – मैं सदा शांति और मेल कराने के किसी भी काम में वृद्ध होते हुये भी रात-दिन भाग-दौड़ करने के लिए प्रस्तुत हूँ । दुनिया में प्यासे को पानी और भूखे को रोटी देने वाला काम सब से अच्छा माना जाता है लेकिन मैं दो हृदयों के मिलाप को प्रमुखता देता हूँ । ऐसा यदि सभी सोचें तब संसार के आधे से अधिक झगड़े तुरन्त शान्त हो जायें ।

मालदेव – आप ठीक कह रहे हैं बारहठ जी महाराज ।

(सेवक का प्रवेश)

सेवक – खम्माघणी अन्नदाता ! राज राजेश्वर, महाराजाधिराज पृथ्वीनाथ !

मालदेव – आओ (हाथ से अभिवादन) अजमेर की ओर क्या हाल है ?

सेवक – सब कुशल है । रानी साहिबा ने आपको खम्माघणी अरज करवायी है और वे रात-दिन आपकी चिन्ता में घुलती रहती हैं ।

मालदेव – अच्छा, लेकिन आने के बारे में क्या कहलवाया है ?

सेवक – उन्होंने नम्रतापूर्वक अरज की है कि संकट के समय उनका किला छोड़ना चर्चा का विषय हो जायेगा ।

मालदेव – कैसे ? कैसी चर्चा ?

सेवक – प्रजाजनों में यह चर्चा फैल जायेगी कि रानी डर के मारे किला छोड़ कर भाग गयी । दूसरी बात, यह अफवाह फैल जायेगी कि दुश्मन धावा

बोलने वाला है और राजा भयभीत हो चुके हैं ।

मालदेव – *(थोड़ा हँसे)* बात उचित लगती है । बारहठ जी महाराज इस आशंका मात्र से कि प्रजाजन ऐसा कहेंगे, हम रानी को खतरों से घिरे कैसे रहने दे सकते हैं ?

(सेवक को जाने का संकेत दिया । उसके जाने के पश्चात) - आप मेरे दिल की बात जानते हैं । मैं एक बार रानी उमादे को जोधपुर के किले में लाना चाहता हूँ । उस सुन्दरी की महक से इन महलों का होना सार्थक होगा । अभी युद्ध का खतरा व बहाना दोनों हैं । आप उन्हें लेने पधारें । अभी लाने का अच्छा अवसर है ।

ईसरदास – मैं आपके लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर हूँ । स्वामी ! आपकी आज्ञा और भाग्य साथ होने पर रानी जी अवश्य जोधपुर के किले में पधारेंगी ।

मालदेव – (खिल उठते हैं) - मुझ से क्या, मेरे राज्य के समस्त लोगों से न बोलने का प्रण करने वाली मानिनी रानी को आपने बुद्धि कौशल से बोलने को मजबूर कर दिया । उसके बाद राज्य की सीमा में ले आये । यह मेरे लिए क्या समस्त राज्य व जैसलमेर के गौरव को बढ़ाने वाली बात है । आपकी जिव्हा पर सरस्वती का निवास है, आपकी बात खाली नहीं जायेगी ।

ईसरदास – सारे कार्य भगवान् के आधीन है । मै पूर्ण आस्थावाला व्यक्ति हूँ । अब मैं आपके आग्रह व आज्ञा को कैसे टाल सकता हूँ । मै आज ही रवाना हो जाऊँगा, अब विलम्ब कैसा ।

मालदेव – मेरे ऊपर आपकी सदा से पूर्ण अनुकम्पा रही है । आप जैसे ज्ञानी-ध्यानी, भक्त कवि को बार-२ कष्ट न देना चाहते हुये भी मुझे ऐसा करना पड़ता है । आदमी मजबूरियों का दास है । पल-पल न चाहते हुये उसी कार्य को करना-पड़ता है जिसकी उसे कल्पना मात्र न हो ।

ईसरदास – मनुष्य तो विधाता के हाथ की कठपुतली मात्र है । धागे विधाता

के हाथ में है। वे संचालित करके अपने हिसाव से कार्य करवाते रहते हैं। मनुष्य स्वयं अभिमान कर लेता है कि मैं इतना काम कर चुका अव यह करूंगा।

मालदेव – मन ऐसा क्षण-२ में दौड़ने वाला दे दिया जो वेकावू है। इसे वांधना आसान नहीं। इसके कारण यह सारा खेल खेला जाता है। मन के घोड़े पर आदमी वैठा ही रहता है।

ईसरदास – अच्छा स्वामी अव आज्ञा हो। मैं प्रस्थान की तैयारी करूं। साथ जाने वाले सेवकों, सरदारों व घोड़ों को तैयार करने की व्यवस्था करूं।

मालदेव – आप राह की आवश्यकता व रानी के सम्मान के हिसाव से जिन-२ को ले जाना चाहते हैं उनके वारे में इसे वतला दें। यह मेरा विश्वसापात्र सेवक है। यह सारा प्रवन्ध कर देगा। आप तड़के यहाँ से रवाना हो जावें। आज पधारें हैं इसलिये कुछ विश्राम कर लें।

ईसरदास – अव विश्राम राजन् दुवारा जोधपुर लौट कर होगा। (ईसरदास यात्रा की तैयारी के लिए वहाँ से प्रस्थान करते हैं।)

मालदेव – (स्वगत् कथन) - इस तेजस्वी पुरूष का साथ यदि न मिलता तो वह मानिनी रानी जैसलमेर से विल्कुल नहीं हिलती। कुछ लोग ईसरदास जी को भगवान् समझते हैं। वास्तव में भगवान् और क्या होता है ? जो असम्भव को सम्भव कर दे वही भगवान्। इनकी वाणी में माधुर्य व ओज दोनों हैं। इस दिव्य पुरूष का साथ वना रहेगा तव तक विघ्न वाधाएं स्वतः दूर होती रहेंगी।

रानी उमादे ने सेवक के साथ—— मेरी कुशलता की चिन्ता प्रकट की है। —— अव वे पुरानी सारी वातें भूल चुकी होंगी। किले की व्यवस्था को ——— संभालने में कितनी दक्ष है। आने पर सहायता हो जायेगी तथा मेरे सिर लगा एक धब्बा मिट जायेगा——— क्या वे वास्तव में आ जायेंगी ? मुझे——— कुछ-२ आशंका क्यों है ? लेकिन किस वात की ? ईसरदास जी लाने जो गये हैं। अव देखते हैं——— क्या होता है।

(पटाक्षेप)

तीसरा दृश्य

(अजमेर के दरबार में रानी उमादे घूम रही है । दासी चम्पा साथ है । कुछ विचारों में उलझी है । सांझ का समय । पर्दा उठता है ।)

उमादे – चम्पा ! ओ चम्पा ! सुन । मैं तिलभर विचलित न होती यदि कुटुम्ब की प्रतिष्ठा का प्रश्न न होता । कुछ उन भक्तराज की वाणी का आकर्षण ऐसा था कि उनके वशीभूत होना पड़ा ।

चम्पा – हां देवी जी ! वे बड़े ओजस्वी पुरूष थे । उनका एक-२ शब्द नपा-तुला व सत्य की कसौटी पर कसा हुआ था । धन्य है ऐसे राजा जिनके पास ऐसे महान् व्यक्ति मित्र रूप में सेवा को तत्पर है ।

उमादे – पिता तुल्य उनका स्वभाव निश्छल था । उनकी कही बातो को अब सत्य होता देख कर मैं उनके आगे नत मस्तक हूँ ।

चम्पा – रानी साहिबा ! युद्ध के कहीं से समाचार मिले क्या ? मुझे बड़ा भय लग रहा है ।

उमादे – हां देर रात्रि को एक गुप्तचर के द्वारा संदेश आया था कि शत्रु सेनाएं चारों ओर से बढ़ी हुई आ रही हैं । किसी भी समय रक्तपात का रूप प्रकट हो सकता है ।

चम्पा – आप पिछले दो दिनों से सुरक्षा प्रवन्धों में इतनी व्यस्त रही कि स्वयं के खाने-सोने का ध्यान जरा भी न रखा । आपका पल-२ व्यवस्था या विचारों में बीत रहा है । आप थोड़ा विश्राम कर लें । मैं सिर दवा देती हूँ ।

उमादे – प्रजा की सुरक्षा का भार राजा के कंधों पर होता है । [illegible] होकर कैसे सो सकता है ? सिर दबाने की आवश्यकता नहीं [illegible]

देर यही रहना । मैं कुछ पल आराम कर लेती हूँ । यह ध्यान रखना कि कोई मेरे विश्राम में खलल न डाले ।

(उमादे आँख बंद कर के लेट जाती है । चम्पा घूमती-२ एक कोने की ओर पहुँचती है)

चम्पा – (स्वगत् कथन) - रानी जी कितनी सुकुमारी हैं । अभी इनके मौज-मस्ती के दिन हैं मगर ये कितनी कठोर घड़ियों का सामना कर रही हैं - —— कई बार लगता है इतने कोमल अंगों वाली ऐसी परिस्थितियों में इतने बड़े किले का कार्य भार संभाल सकेंगी क्या ? लेकिन ये सारा कार्य सुचारू रूप से कर रही है ।

होने को ये इतने बड़े राज्य की स्वामिनी हैं । एक राजा के साथ शानदार ढंग से विवाह हुआ । एक बात पर ये रूष्ट हो गयीं । बात भी ठीक थी । उस रूष्ट होने ने इनके जीवन की धारा बदल दी । जीवन में कड़ुवाहट भर दी । हे भगवान् इनके जीवन में कभी आमोद-प्रमोद आयेंगे क्या ? इनके जीवन में खुशियों की जगमगाहट होगी क्या ?

(बाहर एक दासी पुकारती है, थोड़ा किवाड़ थपथपाने के बाद । चम्पा जो एक ओर बैठी थी, भाग कर जाती है । चम्पा उससे फुसफुसाहट में बात करती है कि कहीं उमादे जाग न जायें लेकिन उमादे आँखें खोल लेती हैं)

उमादे – कौन है ?

चम्पा – जोधपुर से ईसरदास जी पधारे हैं । प्रातः मिलना चाहेंगी या अभी ?

उमादे – नहीं - नहीं उन्हें अभी बुलवाओ । मेरा मन क्यों विकल है, मुझे पता नहीं । मेरे हृदय में काफी उथल-पुथल मची है । उनसे कुछ सलाह मिल जायेगी । अच्छे अवसर पर पधारे हैं । बुलाओ, अभी बुलवाओ ।

(चम्पा जाती है फिर ईसरदास जी के साथ लौट आती है ।)

उमादे – प्रणाम महाराज !

ईसरदास – रानी सौभाग्यवती रहें; घणी खम्मा । आपका यश युगों-२ तक फैले ।

उमादे – बैठिये महाराज ! बड़ा शुभ दिन है जो आप पधारे । इस असमंजस की स्थिति में कोई सलाह देने वाला आया, यह मेरे व राज्य के लिए हित की बात रहेगी ।

ईसरदास – महाराज प्रसन्न हैं । आपका कुशल क्षेम पूछा है ।

उमादे – मेरा क्या बिगड़ने वाला है ।

ईसरदास – यह न कहिये । शत्रु चारों ओर से आगे बढ़ता आ रहा है । उसकी आँखें यहां के धन-दौलत के लिए प्यासी दिखायी देती हैं ।

उमादे – जब तक मेरे शरीर में रक्त की एक बूंद बाकी बची रहेगी तब तक शत्रु अपनी मनमानी नहीं कर सकेगा । मुझे पूरा-२ भरोसा है कि धरती माता को मां से बढ़ कर मानने वाले रण बांकुरे जवान बलिदान को हर क्षण युद्ध की प्रतिक्षा में उतावले हैं ।

ईसरदास – मैं एक निवेदन करना चाहता हूँ...........महाराज मालदेव जी ने यह संदेश भिजवाया है कि......

उमादे – कि मुझे जोधपुर चले जाना चाहिये यही न?

ईसरदास – बात यही है लेकिन आप उतावलापन बहुत दर्शा रही हैं । मुझे निवेदन करने का अवसर दीजिये।

उमादे – अच्छा, कहिये।

ईसरदास – वे आपको यहाँ अजमेर में अकेला नहीं छोड़ना चाहते । किसी भी क्षण युद्ध शुरू हो सकता है, ऐसे में रावजी को आपकी चिन्ता बनी रहेगी ।

उमादे – फिर वही बात। यही बात पहले एक सेवक आकर कह गया था । मैंने उसके साथ साफ मना करवा दिया। अब रावजी ने आपके साथ वे ही समाचार पुन भेजे हैं ?

ईसरदास – नहीं यह बात नहीं है। सेवक मात्र संदेश का आदान प्रदान कर गया । मैं यहां की स्थिति का अवलोकन व अध्ययन करने आया हूँ। मुझे मालदेव जी महाराज की चिंता यहां आने पर उपयुक्त लगी।

उमादे – राजा का संकट के समय यह धर्म नहीं है कि रानी का ध्यान हर क्षण रखने लगे। उसे प्रजा की देख रेख गम्भीरता से करनी चाहिए।

ईसरदास – आपका ऐसा सोचना न्याय संगत प्रतीत होता है।

उमादे – आप न्याय संगत मान कर वही संदेश फिर क्यों लाये हैं?

ईसरदास – आप यहां अकेली रह जायेगी । युद्ध के समय हो सकता है जोधपुर से सम्पर्क टूट जाय या दूरी के कारण आप चाहें तब मदद वहाँ से न ले सकेंगी, ऐसी स्थिति में क्या होगा ?

उमादे – होगा क्या । वही होगा जो अन्य यहां के नागरिकों के साथ होगा । मैं इनसे अलग नहीं हूँ । इनमें से एक हूँ । राजा रानी दोनों माता-पिता के समान व प्रजा उनकी संतान होती है । यही ज्ञान हमें शास्त्रों से मिला है ।

ईसरदास – आपका सोचना सही है। युद्ध के समय राजा-रानी का सुरक्षित रहना आवश्यक है । इनमें से किसी के हताहत होने या मारे जाने पर प्रजा का मनोबल टूट जाता है ।

उमादे – अब ऐसी स्थिति में मेरा जोधपुर जाना असम्भव है। लोगों को यह कहने का अवसर मिल जाएगा कि रानी यों तो बड़ी गुमान वाली बनती थी, युद्ध का नाम सुन कर भाग गयी ।

ईसरदास – नहीं इसमें भागने की कोई बात नहीं है । रावजी स्वयं इतने बड़े राज्य के कार्य भार से चिंतित हैं । वे सोचते हैं कि आप कुशल नेतृत्व प्रदान कर सकती हैं इसलिए आपकी क्षमता को ध्यान में रख कर वे जोधपुर के किले का भार आपको सौंपना चाहते हैं । किले के बारे में निश्चिन्त होकर वे राज्य में घूम-२ कर देखभाल व जरूरत पड़ने पर युद्ध का संचालन कर सेंकेंगे ।

उमादे – नहीं महाराज ! जोधपुर रनिवास में पहले से और रानियां हैं । वे मुझे ताने देंगी । उनके रहते किले की बागडोर मैं संभालूं यह कार्य शोभाजनक दिखायी नहीं देता । उन्हें ऐसा करना अच्छा कहाँ लगेगा । वे मुझ से शत्रुता कर बैठेंगी ।

ईसरदास – नहीं ! नही !! ऐसा कुछ न होगा । आप भावुक हैं इसलिए प्रत्येक पहलु को सोचती अधिक हैं ।

उमादे – सोचने के बाद भी स्थितियां मेरे अनुकूल कहां बनी हैं ?

ईसरदास – जरूरत से ज्यादा कोई भी कार्य करना, सोचना भी हानिकारक होता है ।

उमादे – यह बताइये मेरे वहां जाने से अन्य रानियों को नारी सुलभ कमजोरी सौतिया डाह न होगा क्या?

ईसरदास – नहीं ऐसा कुछ न होगा । एक-दूसरे को देखते ही जान से मार देने वाली जीव--जन्तुओं को जब संकट के समय एक स्थान पर शरण लेनी पड़े तो वे एक जगह रह कह देह रक्षा कर लेते हैं । हम लोग आखिर मानव है । कुछ सोचने व समझने की क्षमता ईश्वर ने हमें दी है ।

उमादे – नहीं में वहॅा नहीं जाऊँगी ।

ईसरदास – यह आपकी कैसी जिद है ? लोग कहेंगे कि रानी ने अपनी आन की खातिर इतने बड़े राज्य की जनता के हितों की परवाह न करते हुए

सभी को संकट में डाल दिया । क्या आपको इस धरती से प्यार नहीं ? इस माटी को तुच्छ समझती हैं ? आने वाला युग आपके इतिहास को जानकर धिक्कारेगा । आप रानी है, पहले आपको स्वदेश के बारे में सोचना चाहिये।

उमादे- – मैं देश के लिए सिर कटाने को तैयार हूँ । इसकी माटी के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने को तत्पर हूँ । इस धरती के लिए हर बलिदान को प्रस्तुत हूँ । लेकिन यहाँ रह कर मैं सेवा करूँगी । जोधपुर नहीं जाऊँगी ।

ईसरदास – (बात जमती जान कर) - फिर आप जोधपुर क्यों नहीं चलना चाहती । अब सारी बातें आपको स्पष्ट कर दी गई हैं । जोधपुर पधार कर किले का संचालन करें । संकट की घड़ियों में लोग आपसी मतभेद भुला कर मदद किया करते हैं जब कि आपके आपसी सम्बन्ध किसी प्रकार खराब नहीं हैं । आपको प्रजा का हित पहले सोचना है ।

उमादे – क्या मेरे वहाँ चलने से सचमुच मदद हो जायेगी ?

ईसरदास – हाँ होगी, अवश्य होगी। रावजी की स्थिति काफी सुदृढ हो जायेगी । वे बाहरी कार्यभार संभालेगें, आप किले का और उन्हें आपकी चिन्ता न रहेगी ।

उमादे – आप मेरा जोधपुर वालों से न बोलने वाला प्रण पहले ही तुड़वा चुके हैं । अब जोधपुर जाकर अपनी आन मिट्टी में नहीं मिलाना चाहती ।

ईसरदास – मिट्टी महान् है। यही जन्म देती है और एक दिन सब इसी में समा जाता है। आपकी यह व्यर्थ की जिद है बल्कि जोधपुर के लोग आपके वहां पहुँचने से प्रसन्न होंगे । आपका सम्मान बढ़ेगा

उमादे – आप मुझे व्यर्थ में मना रहें हैं । मेरा इसमें अहित होगा ।

ईसरदास – रानी साहिबा अहित वाले कार्य में ईसरदास नजदीक नहीं फटकेगा ।

आपको अब चलना होगा । यह समय की पुकार है, माटी की पुकार है, प्रजा की पुकार है । क्या आप अपनी एक आन के लिए सभी को ठुकरा देंगी । आने वाली पीढियां आपको धिक्कारेंगी ।

उमादे – (कुछ गंभीर होकर) - आप कहते सदा भले की हैं । जब सब की यही पुकार है, मुझे आदेश है तो मैं चलने को तैयार हूँ । राज्य के लिए व प्रजा के लिए अपनी आन भुला दूंगी ।

ईसरदास – मुझे पूरा-पूरा भरोसा था कि आप मान जायेंगी । आपकी कठोरता में कोमलता के दर्शन मैने जैसलमेर में कर लिये थे । नारी हृदय बड़ा विशाल है । इसमें संसार भर की कठोरता, पीड़ा, भय, अत्याचार, क्रोध, घृणा को सहन करने की क्षमता है । यह चट्टान की तरह सुदृढ़ व कठोर है तो मोम सा पिघलने वाला भी ।

(पटाक्षेप)

चौथा दृश्य

(उमादे कुछ सैनिको, सरदारों व ईसरदास जी के साथ जोधपुर की ओर प्रस्थान कर चुकी हैं । जोधपुर रनिवास में रानियां सौतियाडाह से परेशान हो उठी । उन्हें लगा कि उस खूबसूरत रानी के आने पर मालदेव जी हम लोगों की सुध-बुध न लेगें । ईसरदास जी के चाचा आशानंद को समझा कर रानी से मार्ग में भेंट करने भेजा । मार्ग में रानी उमादे का पड़ाव पड़ा हैं । ईसरदास जी कहीं काम से गये हुये हैं । चालाक आशानंद अवसर की तलाश में था ही । रानी से भेंट करता है । वह साधु का वेश धारण कर लेता है । यह जोधपुर-अजमेर के मार्ग पर केलवा गाँव के पास की घटना है । दृश्य खुलता है)

आशानंद – वीर सैनिकों ! (हाथ का इकतारा बजाता है) - मुझे आप लोग रानी साहिबा के पास ले चलो । उनसे भेंट करनी है ।

सैनिक - कौन है बाबा आप ?

दूसरा सैनिक - कोई गुप्तचर दिखता है ।

आशानंद - हम हैं रमते राम हमें न कोई दूजा काम । कोई हमें गुप्तचर समझे, कोई रागी-वैरागी । जैसी जिसकी समझ वो हमें वैसे ही रूप में समझता है । हम एक बार रानी जी के दर्शन करना चाहते हैं ।

पहला सिपाही - ले चलो, जैसी इनकी इच्छा । यहाँ अकेले हैं और बिना हथियारों के हैं । *क्या बिगाड़ लेंगें ? यदि गड़बड़ की तो तुरन्त बैकुण्ठ का* टिकट कटवा देंगें ।

आशानंद - (हंसकर) - एक बार मिलवा दो फिर न टिकट काटने की आवश्यकता न परेशान होने की कोई बात । सब काम अपने आप ठीक हो जायेगा ।

(रानी के पास सैनिक ले जाते हैं)

आशानंद - कल्याण हो देवी।

उमादे - प्रणाम महाराजा ये कौन हैं। यहाँ क्यों लाये हो इन्हें ?

आशानंद - हम है रमते जोगी। इधर से जा रहा था। सुना कि आपका पड़ाव लगा है। सोचा आपको अपने हृदय की एक बात कह दूँ।

उमादे - कहिये महाराज। संकोच न करें। क्या आज्ञा हैं ?

आशानंद - आज्ञा नहीं, निवेदन है।

उमादे - आप निःसंकोच कहें। दासी इन्हें थाल भेंट करो।

आशानंद - रानीजी हम सन्यासियों को थालों की भेंट व धन-दौलत से क्या काम। यदि हमारे चरणों में कोई संसार का सारा वैभव चढ़ा दे, वह भी हमारे लिये तुच्छ है। मैं आपके भले के लिए एक बात याद कराने आया हूँ।

उमादे – कहिये, कहिये जल्दी कहिये। विलंब न करें।

आशानंद – (चारों ओर देखता है। रानी संकेत से दासी चम्पा को भी बाहर भेज देती है) आपने जैसलमेर की ओजस्वी धरती में जन्म लिया। रत्नजड़ित रूप पाया। पति के द्वारा परनारी से मेल आपने आंखों से देख कर जो प्रण किया वह तोड़ दिया। वाह मानिनी रानी यही मान था आपका ? आपका तप ऊँचा है। सदा से धार्मिक भावना, संस्कृति के अनुकूल आचरण किया। एक बार प्रण तोड़ कर जोधपुर की सीमा में आ गयी। बोलने लग गयी। अब जोधपुर पधार कर अपने प्रण को मिट्टी में मिला देंगी। आप मीठी-२ बातों के भुलावे में आ गयी। छली गयी।

उमादे – हां महाराज ! ऐसा ही हुआ।

आशानंद – मनुष्य अपनी आन-बान के लिये मर मिटता है। एक आप हैं कि

अपनी सारी तपस्या को भंग करने जा रही हैं ।

उमादे – हां महाराज । (रानी सोचने लगी)

आशानंद – यह सब छल है । सब से बडी अपनी आन-बान-शान होती है । जब आन या मान-मर्यादा न रहे वह नर पशु समान समझिये । अपना व्रत बड़ा है । यह देह एक दिन छूट जायेगी, पीछे अपनी बातें रह जायेंगी ।

उमादे – मैं अजमेर से चल कर यहाँ केलवा गांव तक आ गयी । अब अजमेर लौट चलूं यह मुझ से न होगा ।

आशानंद – मैं कब कहता हूँ, आप लौट जाइये । फैसला आप करेंगी ? मैं सन्यासी अपनी राह चला जाऊँगा लेकिन सुन लीजिये मेरी अंतिम बात को । ध्यान से सुनिये –

"मान रखे तो पीव तज, पीव रखे तज मान ।
दो-दो गयंद न बंधहि, अेकै खम्भु ठांण ॥"

मान और पति ये दो हाथी एक खूंटे के नहीं बंधे रह सकते । इन दोनों में से एक रहेगा । अच्छा रानी साहिबा मैं चला । (वह जाने लगता है)

उमादे – महाराज ! मैं अपना प्रण रखूंगी । यहीं यात्रा रोक दूंगी ।

(आशानंद तेजी से बाहर निकल कर भाग जाता है । रानी उदास बैठी है । ईसरदास जी कुछ समय बाद आते है।)

उमादे – (स्वगत कथन) इन महाराज ने मुझे सही समय पर याद दिला दिया वर्ना सब मटियामेट हो जाता । अब हम यहीं रहेंगें । (ईसरदास घबराये हुये आते हैं ।)

ईसरदास – रानी जी यह क्या अनर्थ किया । आपने फिर प्रतिज्ञा कर डाली ।

वह मेरा चाचा आशानंद था । बाहर सेवकों ने उसे पहचान लिया है । वह जोधपुर से रानियों का भेजा आया था ।

उमादे – मैं अब आगे नहीं जाऊँगी । यहीं रहूँगी ।

ईसरदास – रानियों ने सौतियाडाह से ऐसा किया । आप मत रुकिये ।

उमादे – नहीं अब ऐसा नहीं होगा ।

ईसरदास – वह पाखँडी था । साधु के वेश में आकर छल गया । बडा अनर्थ हो गया ? आप उसकी बातों से बहक गयी । अब चलिये । मुझे भरोसा दिला कर चले थे । उसे पूरा करें । झूठे की बातों का क्या ध्यान देना ?

उमादे – मैंने प्रतिज्ञा तो सच्ची की थी । अब मैं यहाँ से नहीं हिलूंगी । यह मेरा अंतिम फैसला है ।

ईसरदास – मैं रावजी के पास क्या मुंह लेकर जाऊँगा ? ऐसा न करें ।

उमादे – मैं धरती माता, प्रजा का सोच कर प्रण को भूल गयी थी । अब मेरा प्रण बना रहेगा, मैं जोधपुर में कदम नहीं रखूंगी ।

ईसरदास – आप आगे नहीं जायेंगी मुझे विश्वास है । कितनी कठिनाइयों से आपको लाया हूँ, यह मै ही जानता हूँ । स्वार्थी रानियों ने अपने लिये यह चाल चली । जिसमें वे सफल हुयीं । अब आपको कोई नहीं ले जा सकता । मुझे अकेले लौटना होगा । आने वाले समय में आपके हठ की, आपके रूठने की कथा लोग पढ़ कर, सुनकर आश्चर्य चकित होंगे, हँसेंगें, क्रोध करेंगें । यह इतिहास में एक धब्बा लग चुका है । आप अब भी नहीं चलेंगी क्या ।

उमादे – (गर्दन झुकाये उदास मुद्रा में गर्दन हिलाये जाती है,ना देने के लिये ।)

(पटाक्षेप)